सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 59, नई दिल्ली, शुक्रवार 09 मई 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सकारात्मक सोच का मतलब यह नहीं कि हम हर बार ये आशा करें कि सब कुछ श्रेष्ठ हो, बल्कि उसका मतलब ये स्वीकार करना है कि जो हो रहा है वही श्रेष्ठ है।

03 पाकिस्तान आतंकवादी देश घोषित हो - पम्मा व राकेश यादव

06 पहलगाम के आंसू और सिंदूर की ज्वाला

08 पाकिस्तान ने ओड़िशा सरकार की वेबसाइट हैक कर ली गई क्या

"परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र" अपने द्वितीय वार्षिकी समारोह में आपको आमंत्रित करता है

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र आर .एन .आई . द्वारा मान्यता प्राप्त आपके द्वारा प्राप्त भरपूर सहयोग से निष्पक्ष समाचार प्रदान करते हुए अपने 2 साल पूरे करने में सक्षम रहा। इन दो सालों में समाचार पत्र को निष्पक्ष रूप से चलाने में आप सभी का भरपूर सहयोग रहा जिसके लिए प्रशासनिक विभाग परिवहन विशेष आप सभी का दिल से आभार व्यक्त करता है और आशा करता है की भविष्य में भी आपका सहयोग हमारे साथ ऐसे ही बना रहेगा। इन दो सालों में समाचार पत्र को राष्ट्रीय स्तर पर सभी शहरों और जिलों तक पहुंचाने और वहां की सही और सच्ची खबरें हम तक पहुंचाने वाले रिपोर्टर्स का दिल से धन्यवाद।

---- सम्मान समारोह -----

दिनांक 17 मई 2025,
स्थान :- कंस्टीट्यूशन क्लब आफ इंडिया, रफी मार्ग, नई दिल्ली,
समय :- प्रात 10 बजे से शाम 7 बजे तक,

मुख्य अतिथि ₹श्री शंभू सिंह₹, आई .ए .एस . सचिव
शिपिंग भारत सरकार (सेवा निवृत्त) शिपिंग मंत्रालय

आमंत्रित विशेष अतिथि

1. श्री चंद्रमोहन आईएएस सेवा निवृत
2. श्री अमर पाल सिंह जॉइंट कमिश्नर, भारत सरकार
3. श्री आर के भटनागर, आईएएस सेवा निवृत
4. साइकिलिस्ट योगेंद्र सिंह, परामर्शदाता
5. श्री एम के गिरी, अधिकृत वरिष्ठ अधिवक्ता उच्चतम न्यायालय भारत
6. श्री अनिल छिक्कारा, उपायुक्त परिवहन सेवा निवृत, परामर्शदाता
7. श्री महाराज सिंह, मोटर वाहन नियम/अधिनियम परामर्शदाता
8. श्री अजय शाह, सड़क सुरक्षा परामर्शदाता
9. पायलट अनिल शर्मा सड़क सुरक्षा परामर्शदाता
10. श्री प्रशांत चोपड़ा सड़क सुरक्षा परामर्शदाता
11. श्री राजीव शरद सड़क सुरक्षा परामर्शदाता
12. डॉ भरत सिंह, शिक्षाविद् (प्रिंस इंस्टीट्यूट आफ इन्नोवेटिव टेक्नोलॉजी ग्रेटर नोएडा गौतम बुद्ध नगर उत्तर प्रदेश)
13. श्री हेतराम
14. श्री अशोक
15. श्री राहुल गुप्ता
16. श्री ए ई कौशिक
17. श्री अशोक सक्सेना
18. श्री अशोक नारंग
19. श्री बरुड ठाकुर अधिवक्ता उच्चतम न्यायालय भारत
20. श्री नरेन्द्र

के साथ भारत देश में जनहित एवम् कल्याणकारी कार्यों में योगदान प्रदान करने वाले कार्यकर्ताओं/ संस्थाओं / ट्रस्ट को सम्मान प्रदान किया जाएगा।

'परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र" के द्वितीय वार्षिकी समारोह में मुख्य रूप से

1. सड़को को जाम और दुर्घटनाओं से मुक्त करवाने,
2. दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य बनाने,
3. लेन ड्राइविंग कितनी अनिवार्य?"
4. "सड़क दुर्घटना से कैसे हो सकता हैं बचाव ?"
5. "दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य कैसे बनाया जा सकता है?"

पर परामर्शदाताओं के विचार आप को प्राप्त होगे। इसके साथ इस समारोह में

1. वक्ताओं को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
2. परिवहन क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाले संगठनों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
3. सड़क सुरक्षा के प्रति कार्य करने वाले संगठनों के पदाधिकारियों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
4. परिवहन विशेषज्ञों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
5. समाचार पत्र से अलग अलग राज्यों से जुड़े श्रेष्ठ एंकर, वीडियोग्राफर, रिपोर्टर्स, लेखक, ज्योतिषाचार्य, कवि एवम् सहायकों को सम्मानित किया जाएगा।

– संजय कुमार बाटला
संपादक

देश और सेना के साथ मजबूती के साथ खड़ा है भारत का ट्रांसपोर्ट समुदाय : ऑल इंडिया मोटर ट्रांसपोर्ट कांग्रेस

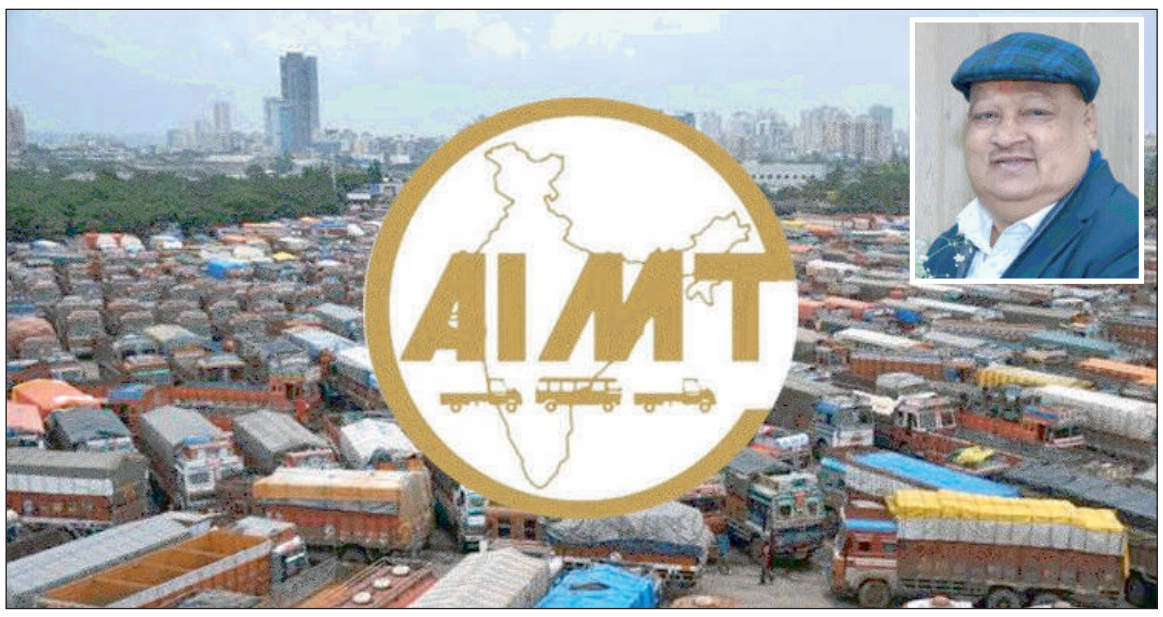

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। आल इंडिया मोटर ट्रांसपोर्ट कांग्रेस देश के गुड्स एवं यात्री परिवहन समुदाय का प्रनिधित्व करती, सर्वोच्च संस्था है।

ऑल इंडिया मोटर ट्रांसपोर्ट कांग्रेस (AIMTC) ने एक सशक्त संदेश जारी करते हुए स्पष्ट किया है कि भारत का सम्पूर्ण ट्रांसपोर्ट समुदाय देश और अपनी पराक्रमी सेना के साथ मजबूती से खड़ा है।

पहलगाम में हाल ही में पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकवादी गतिविधियों और उसके उपरांत उत्पन्न आपातकालीन स्थिति में भारत के परिवहन जगत की यह भावनात्मक और राष्ट्रभक्ति पूर्ण प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

AIMTC ने कहा है कि इस कठिन घड़ी में यदि सेना को किसी भी प्रकार के रसद, आपूर्ति, या मानव संसाधन की आवश्यकता पड़ी, तो देश भर के गुड्स और यात्री वाहनों को तुरंत सेवा में लगाने के लिए ट्रांसपोर्ट समुदाय पूर्ण रूप से तैयार है। यह केवल हमारी जिम्मेदारी नहीं, बल्कि हमारा गर्व है।

AIMTC के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ हरीश सभरवाल ने अपने वक्तव्य में कहाः

"हमारी सेना, नेवी और एयरफोर्स हमारे गौरव और स्वाभिमान के प्रतीक हैं। उनका बलिदान, समर्पण और शौर्य ही भारत की संप्रभुता की गारंटी है। ऐसे में, ट्रांसपोर्ट क्षेत्र भी राष्ट्रहित में किसी भी सेवा के लिए सदैव तत्पर है। हम हर मोर्चे पर सेना के साथ हैं – चाहे वह सामग्री की ढुलाई हो, आपातकालीन यातायात सुविधा हो या किसी अन्य प्रकार की रसद सहायता पहुंचाने का कार्य हो।"

उन्होंने बताया कि ₹परिवहन क्षेत्र हमेशा ही आपातकालीन घड़ी में देश की जीवनरेखा बना है और देश के समस्त परिवहन व्यवसायियों, परिवहन संगठनों, ऑपरेटरों और ड्राइवरों से आह्वान किया कि वे देश सेवा के इस पुनीत कार्य में अपनी-अपनी भूमिका निभाने के लिए आगे आएं और आवश्यकता पड़ने पर हर प्रकार की मदद मुहैया कराएं।"

डॉ हरीश सभरवाल
राष्ट्रीय अध्यक्ष

प्रदूषण से मुक्ति के लिए राज्य परिवहन विभाग बनाएगा राजधानी में 23 ईवी स्टेशन बनाएगा

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड
ओड़िशा

भूबनेश्वर : राज्य सरकार राजधानी भुवनेश्वर को प्रदूषण मुक्त बनाने के लिए काम कर रही है। इसके लिए प्रमुख सड़कों पर 23 ईवी स्टेशन बनाए जाएंगे। परिवहन विभाग और बीएमसी मिलकर इन सभी स्टेशनों का निर्माण करेंगे। परिवहन विभाग ने राज्य में कुल 100 ऐसे ईवी स्टेशन बनाने की योजना बनाई है।भुवनेश्वर में उत्तर जोन में 9, दक्षिण-पश्चिम जोन में 6 और दक्षिण-पूर्व जोन में 8 ईवी स्टेशन बनाए जाएंगे। इनमें कलिंगा स्टेडियम, रूपाली, मास्टर कैंटीन और शिशु भवन स्क्वायर पर प्रारंभिक चरण में काम शुरू हो गया है। एक निजी कंपनी इस ईवी स्टेशन के निर्माण की योजना बना रही है। राज्य सरकार प्रत्येक ईवी स्टेशन के लिए 400 वर्ग फीट भूमि उपलब्ध कराएगी।निजी कंपनी स्टेशन के निर्माण पर 7 मिलियन रुपए खर्च करेगी। स्टेशन के साथ एक सौर शेड भी बनाया जाएगा। इस ईवी स्टेशन पर कारों और बाइकों को चार्ज किया जाएगा। एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि निजी कंपनी फास्ट चार्जिंग के लिए टाटा पावर को 5.50 पैसे प्रति यूनिट (सरकारी दर) का भुगतान करेगी। इसके अलावा 4.40 रुपये का सेवा शुल्क भी लगेगा। यदि आप इसमें जीएसटी जोड़ दें तो यह 250 रुपये हो जाएगा। 11. बाजार में वर्तमान लागत रु. 18 प्रति यूनिट. परिणामस्वरूप, वाहन चालकों को सरकारी चार्जिंग स्टेशनों से लाभ मिलेगा। प्रत्येक स्टेशन पर 2 चार्जिंग पॉइंट होंगे। इसमें एक तीव्र एवं एक धीमी चार्जिंग प्वाइंट बनाने की योजना है। 2 घंटे में फास्ट चार्जिंग हो जाएगी। धीमी चार्जिंग में 3 से 4 घंटे लगेंगे।

भुवनेश्वर में ईवी कारों की मांग बढ़ रही है। शहर में अधिकतर लोग पेट्रोल छोड़कर इलेक्ट्रिक कारों की ओर रुख कर रहे हैं। लोग इलेक्ट्रिक वाहन खरीद रहे हैं क्योंकि सरकार प्रोत्साहन दे रही है। लेकिन इसमें समस्या यह है कि यहां कोई चार्जिंग स्टेशन नहीं है। इसलिए शहरी क्षेत्रों में चार्जिंग स्टेशनों को प्राथमिकता दी गई है। राज्य में ऐसे 100 ईवी स्टेशन बनाने की योजना है। यह चार्जिंग प्वाइंट नवनिर्मित 19वें ट्रक टर्मिनल पर स्थापित किया जाएगा। इसी प्रकार, राज्य में 35 आरटीओ और 3 विशेष आरटीओ में 38 ईवी स्टेशन बनाए जाएंगे। भुवनेश्वर में 23 बनाने की योजना है। शेष क्षेत्रों में परिवहन विभाग द्वारा भूमि चिन्हित करने के बाद ईवी स्टेशन बनाए जाएंगे।

'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद उड़ानों पर पड़ रहा असर, 100 से ज्यादा फ्लाइट्स में देरी

भारत-पाकिस्तान के बीच तनाव के कारण हवाई उड़ानों पर असर दिख रहा है। ऑपरेशन सिंदूर के बाद दिल्ली के आईजीआई एयरपोर्ट पर 100 से ज्यादा घरेलू और अंतरराष्ट्रीय उड़ानें विलंबित हुई हैं। इसके अतिरिक्त 79 घरेलू और 11 अंतरराष्ट्रीय उड़ानों को रद्द कर दिया गया है। यात्रियों को असुविधा का सामना करना पड़ रहा है।

नई दिल्ली। इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय (आईजीआई) एयरपोर्ट पर 'आपरेशन सिंदूर' के बाद से बृहस्पतिवार तक 135 उड़ानें रद की गई और 193 से ज्यादा में विलंब देखने को मिला। बृहस्पतिवार को विभिन्न एयरलाइंस द्वारा 90 उड़ानें रद कर दी गईं। इनमें पांच अंतरराष्ट्रीय प्रस्थान और छह अंतरराष्ट्रीय आगमन शामिल हैं। ये उड़ानें चंडीगढ़, अमृतसर, लेह आदि की ही हैं, जिनको कल भी रद कर दिया गया था। 'ऑपरेशन सिंदूर' के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुए व्यवधान को देखते हुए देशभर के 27 एयरपोर्ट को अस्थायी रूप से बंद कर दिया गया, जिसके चलते 100 से ज्यादा उड़ानों में विलंब भी देखने को मिला। मंगलवार देर रात को हुए ऑपरेशन के बाद बुधवार सुबह से उड़ानों में विलंब व रद्दीकरण शुरू हो गए थे। बुधवार को 93 उड़ानों में विलंब दर्ज किया गया था। उड़ानों का रद किया जाना व विलंब बुधवार देर रात व तड़के से लेकर बृहस्पतिवार रात तक जारी रहा। इस वजह से बृहस्पतिवार को 100 से ज्यादा उड़ानों में विलंब रहा और 90 उड़ानें रद कर दी गई। रद की गई उड़ानों में 46 घरेलू प्रस्थान और 33 घरेलू आगमन शामिल हैं। ज्यादातर उड़ानें अमृतसर, लेह, धर्मशाला, चंडीगढ़, श्रीनगर, मुंबई, जोधपुर, जयपुर, भुज की हैं।

--------: महावन :--------

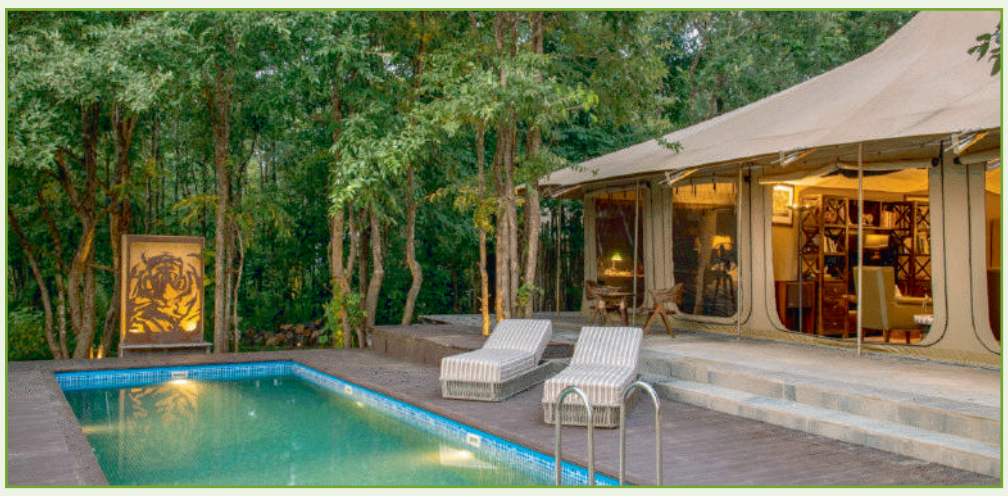

महावन, उत्तर प्रदेश के मथुरा ज़िले में स्थित, एक प्राचीन और अत्यंत पावन तीर्थस्थल है, जो वृन्दावन, गोकुल, नंदगांव जैसे व्रज क्षेत्र के पवित्र स्थलों में प्रमुख स्थान रखता है। यह स्थान विशेष रूप से भगवान श्रीकृष्ण के बाल्यकाल, नंद बाबा के वास, और व्रज की संस्कृति से जुड़ा हुआ है।

1- महावन का पौराणिक महत्व ------

(1) प्राचीन वनों में से एक -------

महावन, व्रज क्षेत्र के 12 प्रमुख वनों में से सबसे बड़ा और प्राचीन वन माना जाता है। ₹ महावन ₹ का अर्थ ही है – ₹ महान और विस्तृत वन ₹। यह वही वन है जिसमें श्रीकृष्ण और बलराम ने अपने जीवन के प्रारंभिक दिन व्यतीत किए।

(2) नंद बाबा का प्रारंभिक निवास ------

जब श्रीकृष्ण का जन्म हुआ, तो वासुदेव जी उन्हें रात में यमुना पार कर महावन स्थित नंद बाबा के घर ले आए। यहाँ श्रीकृष्ण ने पूतना, शकटासुर, और त्रिणावर्त जैसे राक्षसों का वध किया।

(3) बाल लीलाओं का केंद्र ------

(1) महावन में श्रीकृष्ण की कई महत्वपूर्ण लीलाएँ हुईं -

* श्रीकृष्ण का नामकरण संस्कार (गर्गाचार्य द्वारा)।
* यशोदा माता द्वारा श्रीकृष्ण को झूले में झुलाना।
* बालरूप में लीला करते समय चंद्रमा को देखकर रोना, आकाश की ओर अंगुली उठाना

(4) श्रीवल्लभाचार्य और चैतन्य महाप्रभु की यात्रा ---

महावन की महिमा को कई संतों और भक्तों ने गाया है। यहाँ वल्लभाचार्य जी और चैतन्य महाप्रभु जैसे महापुरुषों ने साधना की थी।

2- महावन के प्रमुख स्थल --------

(1) नंद भवन (महावन) ------

यह वह स्थान है , जहाँ नंद बाबा और यशोदा माता का आवास था। यहीं श्रीकृष्ण और बलराम का शैशव काल बीता।

(2) श्रीराम मंदिर ------

यहाँ मान्यता है कि, भगवान राम ने भी अपने वनवास काल में , इस क्षेत्र में कुछ समय बिताया था।

(3) जन्मभूमि स्थल ------

कुछ परंपराओं के अनुसार, महावन को श्रीकृष्ण की वास्तविक जन्मभूमि भी माना गया है। हालाँकि, यह मत अधिक प्रचलित नहीं है।

3- महावन का सांस्कृतिक महत्व ---------

(1) यहाँ के पर्व, विशेष रूप से नंदोत्सव, जन्माष्टमी, गोपाष्टमी आदि अत्यंत भव्यता से मनाए जाते हैं।

(2) महावन का वातावरण, आज भी गोकुल की सी भावना, सरलता और भक्ति से परिपूर्ण है।

(3) महावन में ब्रज भाषा और संस्कृति आज भी जीवंत रूप में देखी जा सकती है।

हनुमान जी और लंका दहन का गूढ़ रहस्य

जब रावण ने हनुमान जी की पूंछ में तेल, घी और कपड़ा लपेटकर आग लगा दी, तो उसे लगा कि यह वानर जलती हुई पूंछ के साथ व्याकुल होकर अपने स्वामी श्रीराम के पास लौट जाएगा। इससे रावण की शक्ति का आभास हनुमान को और उनके आभासी शत्रुओं को होगा। लेकिन रावण यह नहीं जानता था कि उसने खुद अपने ही किले में आग लगा ली है !

हनुमान जी सिर्फ एक साधारण वानर नहीं थे, बल्कि वे एक कुशल गुप्तचर भी थे। उन्होंने पहले ही लंका में अपने गुप्तचर तैनात कर रखे थे, जो हवा में प्रवाहित होने वाले अदृश्य दूत थे। तुलसीदास जी ने इसे स्पष्ट किया है—

'हरि प्रेरित तेहि अवसर चले मरुत उनचास।
अट्टहास करि गर्जा कपि बढ़ि लाग अकास।।'

'मरुत उनचास' अर्थात 49 प्रकार की वायुएं, जो अलग-अलग दिशाओं से प्रवाहित होती हैं, अचानक लंका में सक्रिय हो गईं। विज्ञान के दृष्टिकोण से, ये विभिन्न प्रकार की हवाएँ थीं—आंधी, तूफान, बवंडर, जो पूरे लंका को जलाने में सहायक बने।

हनुमान जी ने अपना शरीर विशाल कर लिया, लेकिन वह भारहीन भी हो गए—₹देह बिसाल परम हरुआई।₹ अग्नि से लिपटे होने के बावजूद उनका शरीर नहीं जला, क्योंकि वे अग्नि से अप्रभावित रहने का वरदान पा चुके थे।

हनुमान जी ने लंका में प्रवेश कर रावण की सुरक्षा व्यवस्था को ध्वस्त किया, लंकिनी को परास्त किया, अशोक वाटिका में भारी विनाश किया, अक्षयकुमार का वध किया, विभीषण को राम की शरण में आने का संकेत दिया, और अंततः पूरी स्वर्ण-मयी लंका को राख बना दिया।

इसीलिए जामवंत जी ने कहा था—

'कवन सो काज कठिन जग माहीं।
जो नहिं होइ तात तुम्ह पाहीं॥'

हनुमान जी के इस पराक्रम ने यह सिद्ध कर दिया कि कोई भी कार्य उनके लिए असंभव नहीं था।

भगवान श्रीकृष्ण की अद्भुत अतिथि-सेवा!!!!!!

भगवान शंकर के रौद्ररूप के अवतार हैं दुर्वासा ऋषि, भक्तों के धर्म की परीक्षा करने और उनकी भक्ति को बढ़ाने के लिए भगवान शंकर ने ही दुर्वासा ऋषि के रुप में अवतार धारण किया। भगवान शंकर के रुद्ररूप से दुर्वासा ऋषि प्रकट हुए थे, इसलिए उनका रूप अति रौद्र और स्वभाव अत्यन्त क्रोधी था । वे 'क्रोधभट्टारक' के नाम से भी जाने जाते हैं । किन्तु उनका एक अत्यन्त दयालु रूप भी था। दयालु रूप में भक्तों का दुःख दूर करना और रौद्ररूप में दुष्टों का दमन करना उनका स्वभाव था।

दुर्वासा का अर्थ है—कटे-फटे मलिन वस्त्रों में रहने वाला अवधूत । दूर्वा के रस का पान करने के कारण भी उनका नाम दुर्वासा पड़ गया ।

'अतिथि देवो भव'

वायुपुराण में कहा गया है कि योगी एवं सिद्ध पुरुष मनुष्य के कल्याण के लिए अनेक रूपों में विचरण करते (घूमते) रहते हैं, इसलिए अतिथि कोई भी क्यों न हो, सदैव 'अतिथि देवो भव' समझकर आदर-सत्कार करना चाहिए ।

महाभारत के शान्तिपर्व में कहा गया है कि गृहस्थ के लिए अतिथि को छोड़कर दूसरा कोई देवता नहीं है । जहां अतिथि का आदर होता है, वहां देवता प्रसन्न होते हैं । इसे भी यज्ञ माना गया है। इससे व्यक्ति धन, आयु, यश, पुण्य, स्वर्ग और असीम आनन्द प्राप्त करता है ।

भगवान श्रीकृष्ण का अतुलनीय एवं विचित्र अतिथि-सत्कार, महाभारत के अनुशासनपर्व में एक सुन्दर कथा है—

एक बार दुर्वासा ऋषि चीर धारण किए, जटा बढ़ाए, हाथ में बिल्ववृक्ष का दण्ड लिए तीनों लोकों में घूम-घूमकर चिल्लाते फिर रहे थे—'मैं दुर्वासा हूँ। मैं रहने के लिए स्थान खोजता हुआ चारों ओर घूम रहा हूं । जो कोई भी मुझे अपने घर में अतिथि बनाना चाहता है, बताए । मुझे क्रोध बहुत जल्दी आता है । अतः जो कोई भी मुझे अपने घर पर आश्रय दे, वह इस बात का ध्यान रखे और सावधान रहे।'

यह चिल्लाते हुए ऋषि त्रिलोकी में घूम आए पर किसी को भी दुर्वासारूपी विपत्ति को अपने घर में रखने का साहस नहीं हुआ । घूमते हुए दुर्वासा ऋषि द्वारका पहुंचे । भगवान श्रीकृष्ण ने जब दुर्वासा ऋषि की पुकार सुनी तो उन्हें अपने राजमहल में ठहरा लिया ।

दुर्वासा ऋषि ने ली जब श्रीकृष्ण की परीक्षा

दुर्वासा ऋषि का रहने का ढंग बहुत ही निराला था । वे अकेले ही कभी हजारों मनुष्यों का भोजन खा जाते और कभी बहुत थोड़ा खाते । किसी दिन वे महल से चले जाते और कुछ दिनों तक लौटते ही नहीं थे । कभी ठहाका मारकर जोरों से हंसते तो कभी बच्चों की तरह रोने लगते ।

एक दिन दुर्वासा ऋषि अपनी कोठरी में पलंग, बिस्तर आदि में आग लगाकर तेजी से भागते हुए श्रीकृष्ण के पास आए और बोले–'वासुदेव ! मैं इस समय खीर खाना चाहता हूँ, तुम मुझे तुरन्त खीर खिलाओ ।'

भगवान श्रीकृष्ण तो सर्वज्ञ परब्रह्म परमात्मा हैं, वह दुर्वासा ऋषि के मन की बात पहले ही ताड़ गए थे । इसलिए दुर्वासा ऋषि की पसन्द की सभी भोजन सामग्री पहले से ही तैयार थी। उन्होंने तुरन्त ही गरमागरम खीर लाकर ऋषि के सामने परोस दी ।

आधी खीर खाकर दुर्वासा ऋषि भगवान श्रीकृष्ण से बोले–'वासुदेव ! अब यह बची हुई जूठी खीर तुम अपने शरीर में चुपड़ लो ।'

शास्त्रों में कहा गया है—'गुरु को राखौ शीश पर सब बिधि करैं सहाय' अर्थात् गुरु की आज्ञा शिरोधार्य करने से सब प्रकार से भला होता है।

श्रीकृष्ण ने तुरन्त ही वह खीर मस्तक व सभी अंगों में चुपड़ ली । यह देखकर पास ही खड़ी रुक्मिणीजी मुस्कराने लगीं तो ऋषि ने वह खीर उनको भी शरीर पर लगाने के लिए कहा। फिर श्रीकृष्ण और रुक्मिणीजी को एक रथ में जोतकर उस पर सवार हो गए । जिस तरह एक सारथि घोड़ों को चाबुक मारता है, उसी तरह ऋषि कोड़े फटकारते हुए द्वारका के राजमार्ग पर रथ चलाने लगे ।

यह सब देखकर सभी यादवों को बहुत क्लेश हुआ । भगवान श्रीकृष्ण सारे शरीर में खीर पोते हुए रथ खींचे ले जा रहे थे किन्तु कोमलांगी रुक्मिणीजी बार-बार रथ खींचते समय गिर जातीं । क्रोधभट्टारक दुर्वासा उनकी बिल्कुल भी परवाह न कर रथ खींचने को कहते रहे । अंत में जब रुक्मिणीजी बिल्कुल पस्त हो गयीं तब श्रीकृष्ण ने दुर्वासा ऋषि से कहा–'भगवन् ! मुझ पर प्रसन्न हो जाइए ।'

दुर्वासा ऋषि ने दिया श्रीकृष्ण और रुक्मिणीजी को वरदान !!!!!

दुर्वासा ऋषि प्रसन्न होकर श्रीकृष्ण की ओर देखने लगे और बोले –'वासुदेव ! तुमने क्रोध को जीत लिया है । तुम्हारा कोई अपराध मुझे दिखाई नहीं देता है । प्रसन्न होकर मैं तुम्हें वर देता हूँ कि–

तुम त्रिलोकी में सबके प्रिय होओगे ।

तुम्हारी कीर्ति सब लोकों में फैलेगी ।

जितनी वस्तु मैंने जलाई हैं, वे सब तुम्हें वैसी ही और उससे भी अच्छी होकर मिलेंगी ।

इस जूठी खीर को सारे शरीर में लगा लेने से अब तुमको मृत्यु का भय नहीं रहेगा । जब तक तुम जीवित रहना चाहोगे, रह सकोगे ।

दुर्वासा ऋषि ने श्रीकृष्ण से कहा—'तुमने अपने तलवों में खीर क्यों नहीं लगायी, बस तुम्हारे तलवे ही निर्भय न बन सके ।'

(जरा व्याध ने प्रभास क्षेत्र में मृग के संदेह में जो बाण मारा वह भगवान श्रीकृष्ण के तलवे में लगा और भगवान नित्यलीला (स्वधाम) में प्रविष्ट हो गए ।)

जब श्रीकृष्ण ने अपने शरीर की ओर देखा तो वह एकदम साफ और कांतिमान था।

दुर्वासा ऋषि का रुक्मिणीजी को वरदान

रुक्मिणीजी को देखकर दुर्वासा बोले–

मेरी जूठी खीर शरीर पर लगाने से तुम्हारे शरीर पर बुढ़ापा, रोग या अकान्ति का स्पर्श भी नहीं होगा। तुम्हारे शरीर से सदैव सुगन्ध निकलेगी ।

सभी स्त्रियों में श्रेष्ठ होकर यश और कीर्ति प्राप्त करोगी।

अंत में तुम्हें श्रीकृष्ण का सालोक्य प्राप्त होगा।

इतना कहकर दुर्वासा ऋषि अन्तर्ध्यान हो गए। जब श्रीकृष्ण ने महल में जाकर देखा कि ऋषि ने जो भी वस्तुएं जलायीं थीं वे पहले की तरह अपने स्थान पर रखी हुई थीं । दुर्वासा ऋषि का यह अद्भुत चरित्र देखकर सब हैरान रह गए ।

सत्य है—'करो सेवा, मिले मेवा'

सेवारूपी भक्ति से ही प्राप्त होती है अभीष्ट सिद्धियां !!!!!!!!

हम जिस किसी की सेवा करते हैं तो वह प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सेवा करने वाले का उपकार अवश्य करता है । सेवा जितनी सहज और सरल प्रतीत होती है, उसका निर्वाह उतना ही कठिन है । गीता (४।१७) में भगवान श्रीकृष्ण ने कर्मयोग के रूप में इसे अत्यन्त कठिन बताया है—'गहना कर्मणो गतिः ।।'

तुलसीदासजी ने भी सेवक के धर्म को अत्यन्त कठोर बताते हुए कहा है—'सब तें सेवक धरमु कठोरा ।।'

सेवा में भावनिष्ठा और समर्पण आवश्यक है जिससे पत्थरदिल मनुष्य को भी अपने अनुकूल किया जा सकता है ।

गीता (१७।१५) में कहा गया है—सेवक को आवेश पैदा न करने वाले, सत्य, प्रिय और हितकर वचन बोलने चाहिए और उसे प्रसन्न, शान्त, कम बोलने वाला और जितेन्द्रिय होना चाहिए । इसे ही वाणी का तप कहा गया है ।

सेवा जीवन धरम है, सेवा करम महान।
सेवा से सुख मिलत है, जानहु सकल जहान ।।

।।जय सियाराम जी।।

।।ॐ नमः शिवाय।।

घी के इन नुस्खों को अपनाकर कई सेहत समस्याओं में राहत पाया जा सकता है।

आइए, आपको बताते हैं कि आंखों की ज्योति बढ़ाना हो, हड्डियों को मजबूत बनाना हो, शरीर की दुर्बलता कम करनी हो, तो घी को कैसे इस्तेमाल करना चाहिए -

1 एक चम्मच शुद्ध घी, एक चम्मच पिसी शकर, चौथाई चम्मच पिसी कालीमिर्च तीनों को मिलाकर सुबह खाली पेट और रात को सोते समय चाटकर गर्म मीठा दूध पीने से आंखों की ज्योति बढ़ती है।

2 रात को सोते समय एक गिलास मीठे दूध में एक चम्मच घी डालकर पीने से शरीर की खुश्की और दुर्बलता दूर होती है, नींद गहरी आती है, हड्डी बलवान होती है और सुबह शौच साफ आता है।

3 शीतकाल के दिनों में यह प्रयोग करने से शरीर में बलवीर्य बढ़ता है और दुबलापन दूर होता है।

4 घी, छिलका सहित पिसा हुआ काला चना और पिसी शकर (बूरा) तीनों को समान मात्रा में मिलाकर लड्डू बांध लें। प्रातः खाली पेट एक लड्डू खूब चबा-चबाकर खाते हुए एक गिलास मीठा कुनकुना दूध घूंट-घूंट करके पीने से स्त्रियों के प्रदर रोग में आराम होता है, पुरुषों का शरीर मोटा ताजा यानी सुडौल और बलवान बनता हैं।

गणेशजी को गजराज का सर लगाने के बाद, उनके असली कटे हुए सर का क्या हुआ?

भगवान गणेशजी की कथा बहुत ही रोचक है। एक बार भगवान शिव ने क्रोधवश गणेशजी का सिर उस समय धड़ से अलग कर दिया था, जब उन्होंने मां पार्वती को मिलने से रोका था।तब माता पार्वती बहुत दुखी हुई थीं। जब उन्होंने शिवजी से गणेशजी को जीवित करने की विनती की। शिवजी ने ब्रह्मा जी से एक हाथी का सिर लाने को कहा और उसे गणेशजी के धड़ से जोड़ दिया।पौराणिक कथा के अनुसार गणेशजी का कटा हुआ सर शिवजी ने एक गुफा में रख दिया था।

कई मान्यताओं के अनुसार, यह गुफा उत्तराखंड के पिथौरागढ़ में स्थित है।

इस गुफा में आज भी गणेशजी के कटे हुए सर की विशेष पूजा होती है।

ये गुफा पहाड़ के करीब 90 फीट अंदर बनी हुई है।यह गुफा उत्तराखंड के कुमाऊं मंडल के प्रसिद्ध नगर अल्मोड़ा से शेराघाट होते हुए 160 किलोमीटर की दूरी तय कर पहाड़ी वादियों के बीच बसे सीमान्त कस्बे गंगोलीहाट में स्थित है।

इस गुफा की खोज राजा ऋतुपर्णा ने की थी, जो सूर्य वंश के राजा थे और त्रेता युग में अयोध्या पर शासन करते थे।

राजा हिरण का पीछा करते-करते इस गुफा तक पहुंच गए थे तब उन्होंने इस गुफा की खोज की थी।

उन्हें उस दिन उस गुफा में भगवान शिव सहित 33 करोड़ देवताओं के दर्शन हुए थे।यह स्कंद पुराण के 'मानस खंड' में वर्णित किया गया है कि आदि शंकराचार्य ने 1191 ई. में इस गुफा का दौरा किया था।

कहा जाता है कि इस गुफा से पता चलता है कब होगा कलयुग का अंत

इस गुफाओं में चारों युगों के प्रतीक रूप में चार पत्थर मौजूद हैं।

इनमें से एक पत्थर जिसे कलियुग का प्रतीक माना जाता है, वह धीरे-धीरे ऊपर उठ रहा है।

गुफा के बारे में कहा जाता है कि यहां भगवान शिव और तैंतीस करोड़ देवता मौजूद हैं।

ये पत्थर 1000 साल में 1 इंच बढ़ता है। कहा जाता है कि जिस दिन ये पत्थर दीवार से टकरा जायेगा उस दिन कलियुग का अंत हो जाएगा।साथ ही ये प्रमाण मिलते हैं इस गुफा में

इसी गुफा में केदारनाथ, बद्रीनाथ और अमरनाथ के दर्शन होते हैं।

बद्रीनाथ में बद्री पंचायत की शिलारूप मूर्तियां हैं जिनमें यम-कुबेर, वरुण, लक्ष्मी, गणेश तथा गरूड़ शामिल हैं।

यहां पर कामधेनू गाय का थन बना हुआ है जिसमें से अब पानी निकल रहा है। कहा जाता है कि इस गाय के थन से कलयुग होने के कारण पानी निकलना शुरू हो गया है।

इस गुफा में भैरव जीभ भी है। मान्यता है कि जो इस मुंह से गर्भ में प्रवेश कर पूंछ तक पहुंच जाएगा उसे मोक्ष की प्राप्ति हो जाएगी।

यहां पर एक शेषनाग की मूर्ती है। बताया जाता है कि ये शेषनाग भगवान के ऊपर क्षत्र के रूप में है।

इस गुफा में एक गरूड़ की मूर्ती भी है और साथ ही साथ यहां पर कई कुंड मौजूद हैं जिनका अपना अपना महत्व है।

जो यह सब नहीं मानते वो कुछ भी सोच सकते है। जैसे कि यह–

यह कथा पौराणिक है और इसके वैज्ञानिक प्रमाण नहीं हैं

विभिन्न ग्रंथों में इस कथा के अलग-अलग वर्णन मिलते हैं।

भगवान राम ने बाली को क्यों मारा था?

वालि (संस्कृत) या बालि सुग्रीव का बड़ा भाई था। वह किष्किंधा का राजा था तथा इन्द्र का पुत्र बताया जाता है। भगवान राम ने उसका वध किया। हालाँकि रामायण की पुस्तक किष्किन्धाकांड के ६७ अध्यायों में से अध्याय ५ से लेकर २६ तक ही वालि का वर्णन किया गया है, फिर भी रामायण में वालि की एक मुख्य भूमिका रही है, विशेषकर उसके वध को लेकर।

युद्ध के दौरान जब श्री राम ने बाली को तीर मारा तो बाली श्री राम को कोसते हुए कहते है की श्री राम मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? मेरी दुश्मनी तो सुग्रीव से थी आप ने मुझे क्यों मारा ? तब श्री राम श्लोकों के माध्यम से कहते है की आप धर्म का हनन करने वाले हो, कुकर्म में रत्त रहते हो और केवल काम के दास आदि में रक्त रहते हो । उससे आपने राजधर्म की उपेक्षा की है अर्थात् अपने राजधर्म का पालन नहीं किया।

श्री राम बाली को कहते है की तुमने परंपरागत धर्म छोड़कर अपने ही भाई की पत्नी रूमा के साथ पत्नी उपभोग किया वह बिल्कुल भी धर्म का आचरण नहीं था, वह धर्म के विरुद्ध था। तुमने अपने ही छोटे भाई की पत्नी जो तुम्हारी पुत्रवधु के समान थी, उससे तुमने उपभोग किया है जो बिलकुल अधर्म का कार्य किया है और काम वासना के अधीन होकर तुमने ये पाप कार्य किया । और इसी का दंड मैंने तुम्हे दिया है।

श्री राम मनुस्मृति(रामायण काल में संविधान) के दो शलोकों जिनमे राजा के लिए किस प्रकार के व्यक्ति को दण्ड देने का विधान है को पढ़कर कहते है मैंने इन सब का पालन किया है और धर्म ग्रंथों का पालन करते हुए मैंने तुम्हे मृत्यु दण्ड दिया है।

जिससे पता चलता है की सुग्रीव के रहते भी सुग्रीव की पत्नी रुमा को बाली ने अपनी पत्नी के रूप में प्रयोग किया था। और एक पति के जीवित रहते उसकी पत्नी को हरण करना अधर्म था। इसलिए श्री राम ने बाली को दण्ड दिया। यदि पति जीवित न हो तो भाई की पत्नी के साथ नियोग किया जा सकता है अगर वो चाहे अन्यथा नहीं।

मुस्लिम राष्ट्रीय मंच ने के बाद शुरू किया एकता और सुरक्षा अभियान, 24 राज्यों में चलाया जाएगा

मुस्लिम राष्ट्रीय मंच ने पाकिस्तान से तनाव के बीच मुस्लिम समुदाय को जागरूक और सतर्क रखने के लिए एकता और सुरक्षा अभियान शुरू किया है। 24 राज्यों में कई बैठकें होंगी जिनमें कम पढ़े-लिखे मुस्लिम समाज पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। इसका उद्देश्य देश की एकता को मजबूत करना है।

नई दिल्ली: Pahalgam Attack और Operation Sindoor में देश एकजुट रहा है, इसे बरकरार रखने और अफवाहों से समाज को बांटने की कोशिश को रोकने के लिए मुस्लिम राष्ट्रीय मंच (MRM) ने एकता और सुरक्षा अभियान शुरू किया है।

यह अभियान देश के मुस्लिम बहुल इलाकों में चलेगा। सेना के पराक्रम को धन्यवाद देने, आतंकवाद का विरोध करने और अफवाहों से बचने को लेकर जागरूकता लाई जाएगी।

धर्म पूछकर पर्यटकों की हत्या देश को लड़वाने की साजिश थी

एमआरएम का 24 राज्यों में सांगठनिक ढांचा है, जहां यह अभियान चलाया जाएगा। इसके लिए राष्ट्रीय पदाधिकारियों की बैठक में रणनीति भी बनाई गई।

एमआरएम के एक पदाधिकारी के अनुसार, यह इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि धर्म पूछकर पर्यटकों की नृशंस हत्या देश को लड़वाने की साजिश का हिस्सा थी।

उन्हें लगा था कि वक्फ अधिनियम को लेकर दो धड़ों में बंटे समाज में विभाजन पैदा किया जाए, जिसे देशवासियों ने अपनी एकजुटता से नाकाम किया है।

देश प्रथम की भावना को लेकर किया जाएगा जागरूक: शाहिद सईद

एमआरएम के राष्ट्रीय प्रवक्ता शाहिद सईद ने कहा कि यह अभियान छोटी-छोटी बैठकों में चलेगा, जिसमें समाज को पाकिस्तानी प्रोपोगंडा से बचने, एकजुट रहने तथा देश प्रथम की भावना लेकर जागरूक किया जाएगा।

खासकर इसमें उन मुस्लिम समाज पर अधिक लक्षित रहेगा, जो कम पढ़े लिखे हैं तथा उन्हें बरगलाने की कोशिश हो सकती है। लोगों से आग्रह किया जाएगा कि किसी के बहकावे में आकर कोई बयान न दें।

Operation Sindoor में सेना के शौर्य व पराक्रम की सराहना

MRM ने पहलगाम आतंकी हमले की भर्त्सना करते हुए भारत सरकार से बदला लेने की मांग की थी। वहीं, ऑपरेशन सिंदूर में सेना के शौर्य व पराक्रम की सराहना की। कहा कि वह देश के साथ चट्टान की तरह खड़ा है। जमीयत उलेमा-ए-हिंद व जमात-ए-इस्लामी जैसे संगठनों ने भी देश की एकजुटता पर जोर दिया है।

पाकिस्तान आतंकवादी देश घोषित हो: पम्मा व राकेश यादव

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। भारत द्वारा पाकिस्तान में चल रहे आतंकवादी अड्डों पर सफलतापूर्वक ऑपरेशन सिन्दूर तहत आतंकवादी अड्डों को तबाह करके भारत के जम्मू-कश्मीर में बेगुनाहों की हत्या का बदला लिया।

भारत सरकार द्वारा की गयी इस कार्यवाही के समर्थन में फेडरेशन ऑफ़ सदर बाज़ार 1ट्रेड्स एसोसिएशन (पंजी) के चेयरमैन परमजीत सिंह पम्मा व अध्यक्ष राकेश यादव की अध्यक्षता में सदर बाज़ार के सैकड़ो व्यापारियों ने पाकिस्तान के खिलाफ नारेबाजी करते हुए क़ुतुब रोड चौक से भारतीय सेना के समर्थन में तिरंगा मार्च निकाली गई। जिसके बाद फेडरेशन द्वारा पाकिस्तान के खिलाफ धरना एवं विरोध प्रदर्शन किया इस अवसर पर परमजीत सिंह पम्मा, राकेश यादव सतपाल सिंह मांगा, कमल कुमार, चौधरी युगेंद्र सिंह, दीपक मित्तल, राजकुमार गुप्ता सहित अनेक व्यापारियों ने पाकिस्तान के खिलाफ नारेबाजी की।

इस अवसर पर परमजीत सिंह पम्मा व राकेश यादव ने कहा जिस प्रकार भारत में ऑपरेशन सिंदूर के जरिए पाकिस्तान में चल रहे आंतकवादी नौ ठिकानों पर हमला करके यह साबित करती है कि पाकिस्तान में आंतकवादी अड्डे बने हुए हैं। भारत में उनके जरिए आतंक फैलाने में पाकिस्तान पूरा सहयोग करता है। अब वक्त आ गया है संयुक्त राष्ट्रीय महासंघ (UNO)को पाकिस्तान को आंतकवादी देश घोषित करें।परमजीत सिंह पम्मा व राकेश यादव ने कहा पाकिस्तान पूरी तरह बौखला गया है जिस प्रकार उसने जम्मू कश्मीर के पुंज के गुरुद्वारे में हमला करके वहां पर ग्रंथियां को मौत के घाट उतारा है यह बड़ी ही शर्मनाक बात है। इसको लेकर पूरे देश में रोष है।

सुबह सैकड़ो की तादाद में व्यापारिक कुतुब रोड चौक पर एकत्रित हुए और पाकिस्तान के खिलाफ नारेबाजी करने लगे। पाकिस्तान मुर्दाबाद, पाकिस्तान होश में आओ, पाकिस्तान को आतंकवादी देश घोषित करने के साथ-साथ भारत माता की जय, इंकलाब जिंदाबाद, भारतीय फौज जिंदाबाद जैसे नारे लगाते हुए 12 टूटी की और बड़े जिसमें धीरे-धीरे सभी धर्म के लोग व व्यापारिक शामिल होते हुए बहुत बड़ा काफिला बन गया। फिर चौक पर पाकिस्तान के खिलाफ प्रदर्शन किया गया।

हम शरीर से बंधें हैं और वर्तमान शरीर के संबंधों को ही समझते हैं। यही संबंध हमारा चश्मा/ दृष्टि बन गया है

हम अपने संबंध मां/ बहन/ बेटी/ पुत्र/ भाई/पिता/पति के रूप में मिलते हैं।

प्रत्येक जन्म में हमारे यह संबंध चक्रानुक्रम में बदल जाते हैं। हमने एक ही आत्म-तत्व को अब तक अलग-अलग रिश्तों/संबंधों में जी भी लिया है। फिर भी हम उसके भीतरी तत्व से अपरिचित हैं। हम शरीर में आकर, इस शरीर के संबंध रूपी चश्में से, सबको देखते हैं तो हम द्वंद्व में आ जाते हैं कि यह मेरा आत्मिक बेटा है या पिता? यह मेरी मां है या पत्नी? हम जब अपने जीवन की घटनाओं से दुःखी/पीड़ित होते हैं तो हम अपना रोल बदलने की कामना करते हैं। यह कामना पूरी होने पर हम और गहरी दुविधा में पड़ जाते हैं। उदाहरण से समझते हैं, एक स्त्री अपने पति को मातृभक्त देखती है तो सोचती है कि 'काश मैं ही इसकी मां होती तो अच्छा होता।' वहीं वह पति अपनी माता को तृप्त करते-करते सोचता है कि 'इस (जन्म) बार तो मैं अपनी पत्नी को यथासंभव आदर/प्रेम/सम्मान न दिला पाया, लेकिन अगली बार मैं अपनी पत्नी को महत्व दूंगा।' इस प्रकार दोनों ने एक-दूसरे को पाने की कामना तो की ही लेकिन अपना रोल/संबंध बदलने का बीज/चाहना भी पैदा कर ली। अब वह फिर मिलेंगे लेकिन फिर से अतृप्ति का स्वाद चखेंगें और अगले रोल का कर्म-बीज स्थापित करेंगें। इस प्रकार एक ही आत्म-तत्व में हमारे भिन्न-भिन्न संबंध हैं, हम उसे अपनी स्थूल दृष्टि से देख नहीं पाते। यह एक उदाहरण है, और हम यहां प्रतिपल अपने वर्तमान संबंधों से त्रस्त हो रहें हैं और कुछ और की कामना/चाहना निर्मित कर रहें हैं। ध्यान रहे कि आज जो भी संबंध हमें मिले हैं वह मात्र मुखौटे हैं उनके माध्यम से हम उस आत्म तत्त्व को जीने/तृप्त होने/करने आयें हैं। किसी एक ही व्यक्ति में हमें अपने सभी संबंधों के दर्शन हो सकते हैं क्योंकि उसी के साथ हमारे पुराने संस्कार हमारी स्मृति में विद्यमान हैं जैसे एक पत्नी बीमारी में हमारा सिर गोद में रखकर मां बन जाती है, बहन बनकर स्नेह लुटाती है। बेटी बनकर कभी हक जताती है। वहीं पति कभी पिता जैसी छाया देता है, गोद में सिर रखकर पुत्रवत बन जाता है। सुरक्षा कवच बनकर भाई का रूप धरता है। यदि हम संबँधों के इन सभी रूपों को ठीक से एक में ही सक्षम हो जायें तो इसी जन्म में हम और वह पूर्ण/तृप्त हो जायेंगें। यद्यपि हम जीवित संबंधों को स्थगित करते रहते हैं। कभी उनको अपने मन-अनुराग से परिचित करते-कराते नहीं हैं। और मृत्युपरांत केवल उसी से बात करना चाहते हैं, जोकि संभव नहीं है। हम एक अतृप्ति का जीवन जी रहें हैं क्योंकि हम जीवित संबंधों के प्रति किसी घटना/धारणा/नाराजगी के चलते उदासीन हैं और मृत संबंध हमें प्रत्युत्तर नहीं दे सकते। ध्यान रहें कि जब हम अपने भीतरी अध्ययन से अपने संबंध में ठीक से जान लेंगें तो हमें वर्तमान के सभी संबंधों के मिलने के कारणों और तृप्ति के परिणामों का स्वयमेव अनुभव हो जायेगा। जब तक कोई हमें बता रहा है हम प्रतिद्वंद्वी की भांति प्रतिरोध ही करते रहेंगें। इसीलिए आध्यात्म में स्वयं-संज्ञान/आत्म-

विपक्ष ने टीआरएफ को प्रतिबंधित संगठन घोषित करने की मांग की है- संजय सिंह

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। भारतीय सेना द्वारा चलाया गया ऑपरेशन सिंदूर की सफलता देश के लिए गौरव की बात है। इस ऑपरेशन में 100 से अधिक आतंकवादी और उनके सहयोगी मारे गए हैं। यह ऑपरेशन अभी जारी है और हर स्थिति में पूरा विपक्ष व देश भारत सरकार के साथ खड़ा है। पूरा देश चाहता है कि पाकिस्तान पोषित आतंकवाद का जड़ से सफाया हो। गुरुवार को केंद्र सरकार द्वारा बुलाई गई सर्वदलीय बैठक के बाद आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता और राज्यसभा सदस्य संजय सिंह ने यह बात कही।

उन्होंने कहा कि बुधवार को विदेश सचिव, कर्नल सोफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह के माध्यम से 'ऑपरेशन सिंदूर की जानकारी दी गई थी और भारतीय सेना ने आतंकी ठिकानों पर जो हमला किया था, उसके बारे में केंद्र सरकार ने सर्वदलीय बैठक में जानकारी दी। सरकार ने बताया कि इस ऑपरेशन में 100 से अधिक आतंकवादी और उनके सहयोगी मारे गए हैं। ऑपरेशन सिंदूर की सफलता पूरे देश के लिए गौरव की बात है। ऑपरेशन सिंदूर के तहत हमारी सेना ने इतनी बड़ी कार्रवाई की है।

संजय सिंह ने कहा कि बैठक में पूंछ में हुए घटनाक्रम पर भी चर्चा हुई, जहां पाकिस्तान ने हमारे निर्दोष नागरिकों को मारा। पूरे विपक्ष ने पाकिस्तान को इसके जवाब में और मजबूती से कार्रवाई करने और बदला लेने की बात कही है। सरकार हर परिस्थिति से निपटने के लिए तैयार है। सरकार ने स्पष्ट किया कि ऑपरेशन सिंदूर अभी भी जारी है। हर स्थिति के लिए पूरा विपक्ष और देश एकजुट है। हम सब चाहते हैं कि आतंकवादियों का पूरी तरह से सफाया हो। जिन लोगों ने हमारी माताओं-बहनों के सिंदूर उजाड़े हैं, उनको ऑपरेशन सिंदूर के तहत भारतीय सेना मजबूती से जवाब दे रही है। पाकिस्तान की जवाबी कार्रवाई का भी सरकार और मजबूती से जवाब देगी।

उन्होंने कहा कि पाकिस्तान आतंकवादियों के साथ खड़ा हुआ है। मसूद अजहर के परिवार के अंतिम संस्कार में वहां के सेना के अधिकारी मौजूद थे। अमेरिका द्वारा प्रतिबंधित आतंकवादी भी वहां मौजूद हैं। यह अब खुली बात है कि पाकिस्तान की सरकार और सेना आतंकवादियों के पक्ष में खड़ी है। पुंछ और राजौरी में हुई घटना, गुरुद्वारे पर हुए हमले सहित सभी मुद्दों पर बातचीत हुई। सरकार ने आश्वस्त किया है कि हर स्थिति पर उनकी नजर है और एक-एक हरकत का मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि टीआरएफ संगठन को प्रतिबंधित और ब्लैकलिस्ट करने की मांग की गई है। इसे एक प्रतिबंधित संगठन घोषित करने की बात कही गई है।

टाटा सोलफुल ने रागी बाइट्स क्रीम वेफर्स के साथ बच्चों के स्नैक्स की दुनिया में नया स्वाद जोड़ा है

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली: आपके लिए गुड-फॉर-यू" मिलेट - आधारित प्रोडक्ट में अग्रणी ब्रांड टाटा सोलफुल ने अपना नवीनतम नवाचार - रागी बाइट्स क्रीम वेफर्स का अनावरण किया है। स्नैकिंग को फिर से परिभाषित करने के लिए डिज़ाइन किया गया यह रोमांचक नया ट्रीट बेहतरीन स्वाद और पौष्टिकता का एक आदर्श संतुलन पेश करता है। इस लॉन्च का मुख्य आकर्षण इसकी टैगलाइन है रनो जंक, क्रीमी क्रंचर है, जो इस नए स्नैक की असली पेशकश को उजागर करती है। इस संचार रणनीति का उद्देश्य जागरूकता बढ़ाना, वेफर्स को पसंदीदा स्नैक के विकल्प के रूप में शामिल करना, और एक कहानी के माध्यम से ब्रांड को बच्चों और माता-पिता दोनों के लिए अत्यंत प्रासंगिक बनाना है। स्वादिष्टता में पोषण की कमी की धारणा को चुनौती देते हुए, टाटा सोलफुल रागी बाइट्स वेफर्स एक अनोखा और पौष्टिक स्नैक की पेशकश लेकर आए हैं: कोई मैदा नहीं, कुरकुरा ज्वार और स्वादिष्ट स्वाद से भरपूर। बदलते स्नैक विकल्पों को ध्यान में रखकर - जहां बच्चे इस स्नैक्स का आनंद लेते हैं और माताएँ इसे चुनती हैं। इसे ध्यान में रखकर, ब्रांड ने एक ऐसा स्वादिष्ट और पौष्टिक वेफर तैयार किया है। विभिन्न उपभोग आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए रागी बाइट्स क्रीम वेफर्स दो अलग-अलग पैकेजिंग में आते हैं: 5 रुपये (10 ग्राम) पैक - पॉकेट-फ्रेंडली, चीज़ और चॉकलेट फ्लेवर में उपलब्ध, और 50 रुपये (50 ग्राम) मल्टी-सर्व पैक - परिवारों के लिए उपयुक्त, चीज़, चॉकलेट, स्ट्रॉबेरी और ऑरेंज फ्लेवर में उपलब्ध। यह रणनीतिक मूल्य निर्धारण और स्वाद विविधता से अलग-अलग उपभोक्ता तक आसानी से पहुंचा जा सकता है, जिससे यह पौष्टिक स्नैक्स रोज़मर्रा का हिस्सा बनें। टाटा सोलफुल नए प्रोडक्ट ज़ोरदार रूप से प्रदर्शित करने और उपभोक्ताओं के साथ मजबूत जुड़ाव बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध है। ब्रांड अपने मौजूदा चॉको स्टिक्स टीवी विज्ञापन में एक टैग-ऑन मैसेज जोड़ रहा है और इसे बच्चों के चैनलों पर दिखाएगा, साथ ही अपने लक्षित दर्शकों को शिक्षित और उत्साहित करने के लिए व्यापक इन-स्टोर दृश्यता और सैंपलिंग गतिविधियों का आयोजन कर रहा है।

हौसले और पहचान की कहानी 'शौंकी सरदार' ने बटोरी अंतरराष्ट्रीय सराहना

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली: आगामी पंजाबी फिल्म 'शौंकी सरदार' को दिल्ली में आयोजित एक भव्य प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान खूब सराहना मिली, जहां विभिन्न देशों के राजनयिकों और मीडिया प्रतिनिधियों ने फिल्म के दमदार संदेश की प्रशंसा की। इस अवसर पर कई देशों के प्रतिनिधि मौजूद रहे, जिनमें शामिल थेःअर्जेंटीना गणराज्य के राजदूत H.E. मारियानो अगस्टिन काउसिनो, तिमोर-लेस्ते के चार्ज डि'अफेयर्स H.E. एंटोनियो मारिया डी जीसस डोस सैंटोस,

तंजानिया उच्चायोग के हैड ऑफ चांसरी डिओग्रेसियस जे. डोटो ,पापुआ न्यू गिनी के डिफेंस एडवाइज़र कर्नल एडिसन कैल्यो नेप्यो,फिलिस्तीन के दूतावास के काउंसलर बासेम हेलिस ,सोमालिया के कमर्शियल अटैशे अब्दिरिसाक सईद नूर और इज़राइल दूतावास के मीडिया विभाग से आयुष्मान पांडे।

'शौंकी सरदार' में पंजाबी संगीत और सिनेमा की जानी-मानी हस्तियां — बब्बू मान और गुरु रंधावा — मुख्य भूमिकाओं में नजर आएंगे। उनके साथ गुग्गू गिल, निमरत कौर ढालीवाल, हशनीन चौहान और सुनीता धीर जैसे शानदार कलाकार भी फिल्म का हिस्सा हैं। फिल्म का निर्देशन धीरज केदारनाथ रत्तन ने किया है, जबकि निर्माण का जिम्मा इशान कपूर, शाह जंडियाली, धर्मिंदर बटौली और हरजोत सिंह ने संभाला है।

पंजाबी संस्कृति, बहादुरी और आत्म-परिचय पर आधारित यह कहानी दुनियाभर के दर्शकों को प्रेरित करने का लक्ष्य रखती है। फिल्म के प्रति अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधियों की रुचि और सराहना इसके वैश्विक महत्व और प्रभाव को दर्शाती है। 'शौंकी सरदार' 16 मई 2025 को विश्वभर में रिलीज की जाएगी।

अंतर्राष्ट्रीय थैलेसीमिया दिवस पर दिल्ली विधानसभा लाल रंग से जगमगा उठी

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। हर साल 8 मई को अंतरराष्ट्रीय थैलेसीमिया दिवस (आईटीडी) के रूप में मनाया जाता है। इस साल राष्ट्रीय थैलेसीमिया कल्याण सोसायटी (एनटीडब्ल्यूएस) ने दिल्ली विधानसभा के साथ मिलकर दिल्ली विधानसभा के कॉन्फ्रेंस रूम में आईटीडी मनाया।

दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष माननीय विजेंद्र गुप्ता ने मुख्य अतिथि के रूप में दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि थैलेसीमिया एक गंभीर वंशानुगत रक्त विकार है, लेकिन चूंकि इसे रोका जा सकता है, इसलिए युवा जोड़ों को थैलेसीमिया वाहक स्थिति की जांच के लिए स्वेच्छा से आगे आना चाहिए, ताकि आने वाली पीढ़ी को थैलेसीमिया सिंड्रोम से बचाया जा सके। उन्होंने कहा कि थैलेसीमिया से प्रभावित लोगों के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए अंतरराष्ट्रीय थैलेसीमिया दिवस के अवसर पर आज विधानसभा परिसर को लाल बत्ती से रोशन किया जाएगा।

अपने स्वागत भाषण में डॉ. जेएस अरोड़ा ने दीन दयाल उपाध्याय और लोक नायक अस्पताल में एनएटी (न्यूक्लिक एसिड एम्प्लीफिकेशन टेस्ट) नामक उन्नत परीक्षण द्वारा दाता के रक्त की जांच शुरू करने के लिए दिल्ली सरकार को धन्यवाद दिया। इससे थैलेसीमिया रोगियों में हेपेटाइटिस बी, सी और एचआईवी के संक्रमण की संभावना काफी कम हो जाएगी। डॉ. अरोड़ा ने कहा कि आईसीएमआर के एक अध्ययन के अनुसार दिल्ली में हर 18 में से 1 व्यक्ति थैलेसीमिया वाहक है। थैलेसीमिया मेजर जन्म को गर्भावस्था से पहले या गर्भावस्था के दौरान जोड़े की थैलेसीमिया वाहक जांच करके रोका जा सकता है, उसके बाद यदि आवश्यक हो तो आनुवंशिक परामर्श और प्रसवपूर्व निदान किया जा सकता है। उन्होंने दिल्ली सरकार से आर्थिक स्थिति की परवाह किए बिना आयुष्मान भारत योजना के तहत सभी थैलेसीमिया रोगियों को सम्मिलित करने की अपील की।

थैलेसीमिया एक गंभीर वंशानुगत रक्त विकार है, जिसके जीवित रहने के लिए आजीवन बार-बार रक्त चढ़ाने की आवश्यकता होती है। 5 करोड़ भारतीय थैलेसीमिया के लक्षण वाले हैं, जो प्रभावित जीन से प्रभावित होते हैं, लेकिन कोई लक्षण नहीं दिखाते हैं। समस्या तब उत्पन्न होती है जब पति और पत्नी दोनों थैलेसीमिया वाहक होते हैं, तब प्रत्येक गर्भावस्था में बच्चे को जन्म देने की 25% संभावना होती है, जिसे जीवित रहने के लिए आजीवन रक्त चढ़ाने की आवश्यकता होगी। इस स्थिति को थैलेसीमिया मेजर के रूप में जाना जाता है। हमारे देश में 12000 से 15000 नए थैलेसीमिया मेजर पैदा होते हैं

मुख्य अतिथि डॉ. पंकज सिंह माननीय स्वास्थ्य मंत्री, दिल्ली सरकार ने अपने संबोधन में कहा कि हमारी सरकार ने थैलेसीमिया रोगियों में रक्त आधान द्वारा हेपेटाइटिस बी, हेपेटाइटिस सी और एचआईवी के संक्रमण को कम करने के लिए तत्काल कदम उठाए हैं और एनएटी परीक्षण द्वारा दाता के रक्त की उन्नत जांच शुरू की है। बहुत जल्द हम अपने थैलेसीमिया स्क्रीनिंग कार्यक्रम में तेजी लाने जा रहे हैं।

हंसराज अहीर माननीय राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष, पूर्व गृह राज्य मंत्री भारत सरकार ने अपने संबोधन में कहा कि हम थैलेसीमिया रोगियों के उपचार के लिए आवश्यक आयरन चिलेटिंग एजेंट और उपकरणों पर जीएसटी माफ करने के लिए माननीय प्रधानमंत्री से संपर्क करेंगे। विनीता श्रीवास्तव एनएचए ने कहा कि अब हर कोई ई-रक्तकोष पोर्टल पर अपने नजदीकी ब्लड बैंक में रक्त की उपलब्धता देख सकता है।

माननीय स्पीकर विजेंद्र गुप्ता ने हंसराज अहीर और डॉ. पंकज सिंह की मौजूदगी में विधानसभा परिसर में उन थैलेसीमिया रोगियों की याद में पौधारोपण किया, जिन्होंने इस खतरनाक बीमारी से लड़ते हुए अपनी जान गंवा दी। आयरन केलेशन उपचार का अभिन्न अंग है, जिसकी लागत लगभग 50,000 से 2 लाख रुपये प्रति वर्ष है। अगर इसका इलाज न कराया जाए तो जीवन अवधि 1-5 साल तक सीमित हो सकती है। नेशनल थैलेसीमिया वेलफेयर सोसाइटी के महासचिव डॉ. जेएस अरोड़ा ने कहा कि थैलेसीमिया मेजर अगर पर्याप्त रक्त और इष्टतम आयरन केलेशन प्राप्त करते हैं तो वे लगभग सामान्य जीवन जी सकते हैं। उन्होंने कहा कि दिल्ली सरकार दिल्ली सरकार के अस्पतालों में पंजीकृत सभी थैलेसीमिया रोगियों को मुफ्त इलाज मुहैया करा रही है।

गर्भधारण या गर्भावस्था के आरंभिक चरण में थैलेसीमिया वाहक/लक्षण स्थिति का पता लगाकर थैलेसीमिया मेजर बच्चे के जन्म को रोका जा सकता है। यदि पति-पत्नी दोनों में थैलेसीमिया लक्षण नहीं है या उनमें से एक लक्षण है तो किसी एहतियात की आवश्यकता नहीं है, बच्चा कभी भी थैलेसीमिया मेजर नहीं होगा। यदि पति-पत्नी दोनों थैलेसीमिया वाहक हैं तो प्रत्येक गर्भावस्था में थैलेसीमिया मेजर बच्चे को जन्म देने की 25% संभावना होती है। ऐसे मामले में जेनेटिक काउंसलिंग के बाद गर्भ के 12-13 सप्ताह में भ्रूण में थैलेसीमिया का प्रसवपूर्व निदान किया जा सकता है। यदि भ्रूण थैलेसीमिया मेजर है तो महिला/परिवार के पास गर्भपात कराने का विकल्प होता है, जो कानूनी है। लोक नायक अस्पताल में सभी के लिए प्रसवपूर्व निदान सुविधा निःशुल्क उपलब्ध है।

शुरुआत पाकिस्तान ने की थी, अंत हिंदुस्तान करेगा - जनरल वीके सिंह

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। मिज़ोरम के वर्तमान महामहिम राज्यपाल डॉ. जनरल वीके सिंह जी ने मंगलवार की देर रात पहलगाम हमले के जवाब में भारतीय सेना की पाकिस्तान में लक्षित स्थानों पर हुई कार्रवाई की तारीफ की, भारतीय सेना का उत्साह बढ़ाया और पाकिस्तान को चेतावनी दी।

डॉ. जनरल वीके सिंह जी ने कहा कि भारतीय सेना ने नापाक आतंकवाद खत्म करने के उद्देश्य के साथ बुधवार की देर रात पाकिस्तान के 9 लक्षित आतंकियों के ठिकानों पर जवाबी कार्रवाई कर हमला किया। भारतीय सेना की वीरता, साहस और प्रतिज्ञा से निकला 'ऑपरेशन सिंदूर' पहलगाम हमले में उजड़े सिंदूरों का बदला है। भारतीय सेना के वीर जवानों ने विशेष रूप से इस बात का भी ध्यान रखा कि इस कार्रवाई में किसी भी पाकिस्तानी सैन्य सुविधा को निशाना नहीं बनाया गया। भारत ने पहलगाम में बर्बर आतंकवादी हमले के जवाब में लक्ष्यों के चयन और निष्पादन के तरीके में काफी संयम दिखाया है। हमारी सेना हर तरीके से पाकिस्तान को मुंह तोड़ जवाब देने के लिए सक्षम है यह नया भारत है हम घर में घुसकर सबक सिखाने वाले लोग हैं। पाकिस्तान या तो अपनी हरकतों को ठीक कर लें नहीं तो इस जंग की शुरुआत तुमने हमारे निर्दोष लोगों की जान लेकर की है उसका अंत हिंदुस्तान पाकिस्तान को नक्शे से मिटाकर करेगा।

इसके साथ ही उन्होंने कहा कि भारत के साहसी लोग धैर्य के साथ एकजुट होकर भारतीय सेना का मनोबल बढ़ाएं क्योंकि हमें फिर से विश्व को दिखाना है भले ही हम अलग अगल भाषा, क्षेत्रों में बटें हैं लेकिन हम 140 करोड़ देशवासी केवल हिंदुस्तानी हैं।

ब्लेक आउट के दौरान छाया सन्नाटा

परिवहन विशेष न्यूज

मथुरा: भारत सरकार के आदेश अनुसार जिला प्रशासन एवं सिविल डिफेंस मथुरा के द्वारा दिनांक 7 मई 2025 को एक भव्य मॉकड्रिल एवं ब्लैक आउट का आयोजन जिला अधिकारी सी पी सिंह एवं एस एस पी श्लोक कुमार एवं अपर जिला अधिकारी नमामि गंगे राजेश यादव, अपर जिला अधिकारी वित्त एवं राजस्व योगानंद पांडे के नेतृत्व में श्री कृष्ण जन्मभूमि एवं इंडियन ऑयल कारपोरेशन मथुरा रिफाइनरी पर ब्लैक आउट मॉक ड्रिल का आयोजन किया गया आग बुझाने के बाद हर किसी को अब ब्लैक आउट का इंतजार था। इसके लिए जिला मुख्यालय स्थित नागरिक सुरक्षा कार्यालय कंट्रोल रूम पर हॉट लाईन के माध्यम हवाई हमले का रेड सिग्नल शाम 7:29 पर मिलते ही सिविल डिफेंस के द्वारा हवाई हमले का सायरन बजाया गया । श्री कृष्ण जन्मभूमि एवं इंडियन ऑयल कारपोरेशन मथुरा रिफाइनरी पर सिविल डिफेंस मथुरा के उप नियंत्रक सुमित मौर्य चीफ वार्डन राजीव अग्रवाल डिप्टी चीफ वार्डन कल्याण दास अग्रवाल डिविजनल वार्डन भारत भूषण तिवारी डिप्टी डिविजनल वार्डन राजेश कुमार मित्तल सीनियर स्टाफ ऑफीसर दीपक चतुर्वेदी बैंकर एवं सिविल डिफेंस मथुरा के द्वारा सिविल डिफेंस मथुरा की क्विक रिस्पांस टीम से पोस्ट वार्डन अशोक यादव जो कि राष्ट्रीय आपदा मोचन बल नागपुर एवं राज्य आपदा मोचन बल लखनऊ से कई प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं । उनको तत्काल प्रभाव से इंडियन ऑयल कारपोरेशन लिमिटेड मथुरा रिफाइनरी पर 20 सदस्य की टीम के साथ भेजा गया जहां उन्होंने अपन मोर्चा संभाला इसी क्रम में सिविल डिफेंस की 15 वार्डन पोस्ट को जिला प्रशासन एवं सिविल डिफेंस के वार्डन एवं स्वयंसेवक के साथ मिलकर श्री कृष्ण जन्मभूमि मथुरा पर अपना मोर्चा संभाला जब तक बही थाना गोविंद नगर के आस पास के इलाकों की दुकान बन्द हो गई चारों तरफ अंधेरा ही अंधेरा दिखा इसके बाद करीब 15 मिनट तक श्री कृष्ण जन्मस्थली के आस पास बाजारों में सन्नाटा पसरा दिखाई दिया बही श्री कृष्ण जन्मभूमि मथुरा एवं इंडियन ऑयल कारपोरेशन मथुरा रिफाइनरी के फार्म टैक नंबर जीरो वन टैंक एरिया परिसर पर सिविल डिफेंस के वार्डन एवं स्वयंसेवक सेल्टर लेते नजर आए। मॉक ड्रिल के सफल आयोजन के बाद जिला अधिकारी एवं एस एस पी मथुरा के द्वारा सिविल डिफेंस मथुरा की भूरी भूरी प्रशंसा की साथ ही मॉक ड्रिल में केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल रिफाइनरी, पुलिस प्रशासन, मेडिकल टीम एवं सिविल डिफेंस के वार्डन एवं स्वयंसेवक साथ ही इंडियन ऑयल कारपोरेशन लिमिटेड मथुरा रिफाइनरी के निर्देशक मुकुल गोयल आदि मौजूद रहे।

दर्दनाक हादसा: तेज रफ्तार कैंटर से टकराई ईको गाड़ी के उड़े परखच्चे; दो लोगों की मौत और कई हुए घायल

गुरुग्राम के बिलासपुर थाना क्षेत्र में दिल्ली-जयपुर नेशनल हाईवे पर एक दर्दनाक हादसा हुआ है। तेज रफ्तार कैंटर ने ऑटो को बचाने के लिए अचानक ब्रेक लगाए जिससे पीछे से आ रही ईको गाड़ी उससे टकरा गई। इस दर्दनाक हादसे में ईको गाड़ी सवार दो लोगों की मौके पर ही मौत हो गई जबकि तीन गंभीर रूप से घायल हो गए।

पटौदी (गुरुग्राम)। गुरुग्राम के बिलासपुर थाना क्षेत्र में दिल्ली-जयपुर नेशनल हाईवे पर गुरुवार दोपहर दो बजे राठीवास मोड़ के निकट तेज रफ्तार से चल रहे कैंटर ने ऑटो को बचाने के चक्कर में अचानक ब्रेक लगा दिए, इससे पीछे से आ रही ईको गाड़ी उससे भिड़ गई। हादसे में ईको गाड़ी सवार दो लोगों की मौत हो गई और तीन लोग गंभीर रूप से घायल हो गए।

वहीं, घायलों को आनन-फानन इलाज के लिए निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया। उधर, पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजकर कार्रवाई शुरू कर दी है।

ऑटो को बचाने के चक्कर में लगा दिए ब्रेक

रेवाड़ी जिले के गढ़ी महेश्वरी के रहने वाले अमर सिंह, रामबीर, महावीर, नितेश व सुनील कुमार ईको गाड़ी से गुरुग्राम निजी काम से आए थे। दोपहर में वह गुरुग्राम से वापस रेवाड़ी जा रहे थे। उनके आगे-आगे एक कैंटर तेज रफ्तार में चल रहा था। बताया जा रहा है कि राठीवास मोड़ के निकट राठीवास की तरफ से आया एक ऑटो जैसे ही हाईवे पर चढ़ा तो कैंटर चालक ने ऑटो को बचाने के चक्कर में ब्रेक लगा दिए।

गाड़ी के परखच्चे उड़ गए

वहीं, इससे पीछे चल रही ईको गाड़ी कैंटर से पीछे से भिड़ गई। यह टक्कर इतनी तेज थी कि ईको गाड़ी के परखच्चे उड़ गए। दुर्घटना में कार में बैठे हुए पांचों लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। आसपास के लोग पांचों को निजी अस्पताल ले गए, जहां अमर सिंह व रामबीर को मृत घोषित कर दिया गया। कार चालक सुनील की स्थिति भी गंभीर बताई जा रही है। दो अन्य घायलों का इलाज भी जारी है।

सावधान! नोएडा में अगर इन इलाकों में बनाया घर या फार्म हाउस तो होगी परेशानी, बाढ़ आने पर नहीं मिलेगा मुआवजा

नोएडा प्राधिकरण ने हरनंदी-यमुना के डूब क्षेत्र में अवैध निर्माण पर सख्ती दिखाई है। सीईओ ने अवैध निर्माण के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई के आदेश दिए हैं ताकि बाढ़ के खतरे को कम किया जा सके। उन्होंने डूब क्षेत्र में अवैध कॉलोनी और फार्महाउस बनाने वालों को भूमाफिया घोषित करने के निर्देश दिए हैं। बाढ़ से नुकसान होने पर कोई मुआवजा नहीं दिया जाएगा।

नोएडा। हरनंदी-यमुना डूब क्षेत्र में अवैध निर्माण व फार्म हाउस बिक्री के संबंध में मुख्य कार्यपालक अधिकारी डॉ. लोकेश एम की अध्यक्षता में बुधवार को सेक्टर-6 स्थित नोएडा प्राधिकरण कार्यालय में बैठक हुई।

इसमें जिलाधिकारी गौतमबुद्ध नगर मनीष कुमार वर्मा, सहायक पुलिस आयुक्त विवेक रंजन भी उपस्थित रहे। प्राधिकरण सीईओ ने डूब क्षेत्र में हो रहे अवैध निर्माण के प्रति कड़ी नाराजगी व्यक्त की, कहा कि उनके विरुद्ध कठोर कार्रवाई की जाए।

नदियों का प्रवाह सही रखने के लिए जरूरी है कदम

दोनों नदियों में पानी बढ़ता है तो बाढ़ के हालात बन जाते हैं। जनहानि की आशंका रहती है, ऐसे में डूब क्षेत्र में अवैध निर्माण को रोका जाए। ताकि नदियों के प्रवाह को सही रखा जा सके।

अवैध निर्माण के कारण नदियों के प्रवाह पर असर पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि यमुना-हरनंदी डूब क्षेत्र की ड्रोन कैमरा से एरियल सर्वे कराकर वर्तमान समय के निर्माणों की स्थिति को सुरक्षित रखा जाए। इसके उपरांत नए अवैध निर्माण होने पर संबंधित वरिष्ठ प्रबंधक/लेखपाल व सिंचाई विभाग के अधिशासी अभियंता के विरुद्ध कठोर कार्रवाई की जाएगी।

किया ये काम तो कहलाएंगे भूमाफिया

निर्देश दिया कि डूब क्षेत्र में अवैध रूप से कॉलोनी विकसित करने वाले एवं फार्म हाउस का विक्रय करने वाले प्रमुख व्यक्तियों को चिह्नित कर उन्हें भूमाफिया घोषित कर उनके विरुद्ध कठोर कार्रवाई सुनिश्चित की जाए।

डूब क्षेत्र में बड़े-बड़े होर्डिंग बोर्ड लगाकर आम नागरिक को डूब क्षेत्र में निर्माण निषिद्ध होने की

जानकारी प्रसारित की जाए। नदी किनारे बने अवैध रूप से फार्म हाउसों के लिए बने रास्तों को सिंचाई विभाग तोड़े।

उप जिलाधिकारी दादरी/सदर की अध्यक्षता में डूब क्षेत्र में प्रभावी कार्रवाई के लिए टीम गठित की जाए, जिसमें सिंचाई विभाग, राजस्व विभाग, प्राधिकरण के सिविल व भूलेख विभाग के कर्मिक सदस्य रहेंगे, जो अवैध निर्माण चिह्नित कर ध्वस्तीकरण की कार्रवाई प्रस्तावित करेंगे।

सप्ताह में दो बार समीक्षा का आदेश

इसकी समीक्षा सप्ताह में दो बार करने को कहा गया। इसके अतिरिक्त आईजी स्टांप को डूब क्षेत्र में पंजीकृत किए जाने वाले बैनामों का विवरण जिलाधिकारी कार्यालय व प्राधिकरण को उपलब्ध कराने के निर्देश दिए गए।

ताकि डूब क्षेत्र में अवैध निर्माण व फार्म हाउस के निर्माण पर रोक लगाई जा सके। साथ ही नए बैनामों में यह भी उल्लेख करवाना सुनिश्चित करें कि डूब क्षेत्र में किसी भी प्रकार का निर्माण अमान्य है।

बाढ़ आई तो अवैध निर्माणकर्ता की होगी जिम्मेदारी

अधिशासी अभियंता सिंचाई निर्माण खंड गाजियाबाद ने बताया कि हरनंदी तटवर्ती एवं रिंग बंध के निकट नदी के डूब क्षेत्र ग्राम में बनी अवैध आबादी में यदि बाढ़ से कोई क्षति होती है।

तो इसकी जिम्मेदारी अवैध निर्माणकर्ता की स्वयं की होगी। उसे किसी प्रकार का मुआवजा नहीं दिया जाएगा। साथ ही अवैध निर्माण से होने वाली क्षति की वसूली अवैध निर्माणकर्ताओं से की जाएगी।

एडवाइजरी जारी कर कहा गया कि ऐसे लोग तत्काल प्रभाव से अपने अवैध निर्माण को हटा लें। डूब क्षेत्र में भवन, स्कूल, फार्म हाउस, क्रेशर प्लांट, हॉट मिक्स प्लांट, कंक्रीट रेडी मिक्स प्लांट एवं बदरपुर सैंड की धुलाई की होदियां आदि अवैध निर्माण है।

शासन पहले ही निर्माण कर चुका है प्रतिबंधित

बाढ़ के कारण इन अवैध निर्माणों के क्षतिग्रस्त होने से जन-धन की हानि हो सकती है। यह निर्माण बस्ती अवैध होने के कारण बाढ़ के समय सिंचाई विभाग, जिला प्रशासन एवं शासन द्वारा सुरक्षा प्रदान किया जाना संभव नहीं हो सकेगा।

शासनादेश संख्या-1417 वी 16 मार्च 2010 एवं नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) के 20 मई 2013 द्वारा ये निर्माण प्रतिबंधित कर रखे हैं।

डूब क्षेत्र में आते है यह गांव

छिजारसी, चोटपुर, यूसुफपुर, चकशाहबेरी, बहलोलपुर गढी चौखंडी, हैबतपुर, पर्थला खंजरपुर, सोहरखा जहीदाबाद, ककराला, अलीवर्दीपुर, जलपुरा, हल्द्वानी, कुलेसरा, हरनंदी यमुना दोआब बंध के निकट ग्राम इलाहाबास, सुथियाना, शहदरा, लखनावली, बेगमपुर, मुबारकपुर, गुर्जरपुर, झट्टा बादोली बांगर, सफीपुर, चुहड़पुर एवं मोमनाथल तक हिंडन नदी के डूब क्षेत्र की परिधि के अंतर्गत आते हैं।

इसी बंध पर यमुना नदी के बाएं किनारे ग्राम मोतीपुर, तिलवाड़ा, गढ़ी समस्तीपुर, बादौली खादर, कोंडली खादर, कामबक्शपुर, गुलावली, दोस्तपुर मंगरौली, छपरौली, असदुल्लापुर तथा (हरियाणा साइड) दायीं किनारे पर औरंगाबाद, दलेलपुर, याकूतपुर की भूमि डूब क्षेत्र की परिधि में आती है।

लोकतांत्रिक प्रक्रिया में सही समय पर चुनाव के जरिए लोकतंत्र के संवैधानिक जनादेश का सम्मान करना जरूरी

- सुप्रीम कोर्ट का महाराष्ट्र चुनाव आयोग को निर्देश- स्थानीय निकायों के चुनाव कीअधिसूचना 4 सप्ताह व चुनावी प्रक्रिया 4 माह में संपन्न करने का प्रयास करें
- स्वस्थ लोकतंत्र में समयबद्ध चुनाव कराना संवैधानिक कर्तव्य-जमीनी स्तरपर लोकतंत्र को रोकना या बाधित करना कठोर अपराध की श्रेणी में लाना ज़रूरी-**एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर दुनियाँ के सबसे बड़े लोकतंत्र पर पूरी दुनियाँ की नजरे ग़ड़ी रहती है, क्योंकि भारत में जितनी जनसंख्या किसी एक राज्य की है, दुनियाँ के कई देशों में उतनी ही जनसंख्या उस एक देश की है, तो ऐसे में भारत के कुल 28 राज्यों 8 केंद्र शासित प्रदेशों में नियंत्रण व समयबद्ध तरीके से चुनाव कराना एक चुनौती भरा कार्य माना जाता है, परंतु अनेक राज्यों में कुछ पेचीदगे मसलों या फिर कोर्ट के किसी मुद्दे के कारण चुनाव को टाला जाता है, जो मेरा मानना है कि ऐसा नहीं करना चाहिए, क्योंकि बिना चुनावों के ग्राम पंचायत से लेकर स्थानीय निकायों तक, विधान सभा से लेकर लोकसभा तक चुनावों को रोकना प्रशासन को अलोकतांत्रिक तरीके से शासन के अधीन रखना,लोकतंत्र के संवैधानिक जनादेश का अपमान है। आज हम इस विषय पर चर्चा इसलिए कर रहे हैं, क्योंकि दिनांक 5 मई 2025 माननीय सुप्रीम कोर्ट ने महाराष्ट्र के स्थानीय निकायों की चुनावी प्रक्रिया 4 माह में पूर्ण करने व 4 सप्ताह में चुनावी अधिसूचना जारी करने का निर्देश जारी कर दिया है, जिससे सभी छोटे से बड़े नेताओं में खलबली मच गई है व तैयारीयों में जुट गए हैं। मैं अपनी छोटी सी राइस सिटी गोंदिया में स्थानीय निकायों के कई दिनों से चुनाव होने के अंदेशो पर कई महीनो से नजर रख रहा हूं,व अध्ययन कर रहा हूं तो दिख रहा है कि अनेक छोटे-छोटे कार्यकर्ता नेता पार्षद का चुनाव लड़ने के अपने स्वार्थ के जुगाड़ में गली मोहल्लों की साफ- सफाईयाँ करवा रहे हैं व उसके फोटो खींचकर अपने प्रचार करने के लिए सोशल मीडिया में पोस्ट कर रहे हैं, तो कई छुटभैया समाज के नेता अनेकों शिविर लगाकर, कोई इवेंट करवाकर तो कोई मेरिट विद्यार्थियों को सत्कार का आयोजन कर स्थानीय विधायक को बुलवाकर वाहवाही लूट रहे हैं,व सोशल मीडिया पर तस्वीरें पोस्टकर रहेहैं तो कईसामाजिक छुटभैया नेता क्षेत्र के नए पदस्थ हुए चपरासी से लेकर बाबू व कलेक्टर तक तथा पुलिस कांस्टेबल से लेकर थानेदार और एसपी तक का जोरशोर से स्वागत कर उसके साथ तस्वीरें खिंचवाकर मीडिया पर पोस्ट कर इसके माध्यम से अपना वज़न बढ़ाने, वाहवाही लूटने में लगे हुए हैं, जो रेखांकित करने वाली बात है। परंतु आम जनता सब समझ रही है कि इसमें उन छुटभैया नेताओं का जरूर कोई स्वार्थ होगा या किसी उल्टे सीधे लफड़े वाले कामों से सलग्न होंगे, तो कोई अपने भाई को करोड़ों के ठेके दिलवा रहे हैं,नेत्रदान नेता बना रहे हैं, शिक्षण संस्थानों में अपना रुतबा दिखा रहे हैं। चूँकि लोकतांत्रिक प्रक्रिया में सही समय पर चुनाव के जरिए लोकतंत्र के संवैधानिक जनादेश का सम्मान करना जरूरी है, इसीलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, सुप्रीम कोर्ट का महाराष्ट्र चुनाव आयोग को निर्देश,स्थानीय निकायों के चुनावों की अधिसूचना 4 सप्ताह में जारी करें, व चुनाव प्रक्रिया 4 माह में संपन्न करने का प्रयास करें।

साथियों बात अगर हम लंबे समय से रुके हुए महाराष्ट्र स्थानीय निकाय चुनावों का रास्ता साफ होने की करें तो सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार (6 मई, 2025) को महाराष्ट्र में स्थानीय निकाय चुनाव कराने को हरी झंडी दे दी,जो अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के लिए आरक्षण पर मुकदमेबाजी के कारण वर्षों से रुके हुए थे। न्यायमूर्ति सूर्यकांत और न्यायमूर्ति एन. कोटिश्वर सिंह की खंडपीठ ने कहा

कि समय-समय पर चुनाव कराकर जमीनी स्तरपर लोकतंत्र स्थापित करने के संवैधानिक आदेश को सुनिश्चित किया जाना चाहिए और उसका सम्मान किया जाना चाहिए।अदालत ने कहा कि चुनावों के लिए ओबीसी आरक्षण को उसी तरह बनाए रखा जाना चाहिए जैसा कि जेके बंठिया आयोग की रिपोर्ट पेश होने से पहले था। बंठिया आयोग ने स्थानीय निकाय चुनावों में 27 परसेंट ओबीसी आरक्षण का प्रावधान किया था। सुप्रीम कोर्ट ने पुराने आरक्षण के आधार पर इन्हें कराए जाने का आदेश जारी किया है। 4 हफ्तों में चुनावों की अधिसूचना भी जारी करने का आदेश दिया है, सुप्रीम कोर्ट ने कहा, राज्य चुनाव आयोग को निर्देश महाराष्ट्र स्थानीय निकाय चुनाव में 2022 से पहले की आरक्षण व्यवस्था लागू होगी।सुप्रीम कोर्ट ने कहा, चुनावों को इतने लंबे समय तक लंबित रखने के पीछे कोई लॉजिक है? सभी स्थानीय निकायों के चुनाव के उद्देश्य से ओएनसी आरक्षण को जेके बांटिया आयोग की 2022 की रिपोर्ट से पहले कानून के अनुसार पढ़ा जाना चाहिए। छह सदस्यीय आयोग ने जुलाई 2022 की तारीख वाली एक रिपोर्ट प्रस्तुत की थी, उस रिपोर्ट के अलावा पिछड़ेपन की प्रकृति के मुद्दे पर विचार करने के लिए आयोग के गठन से लेकर कई मुद्दे अदालत के समक्ष लंबित हैं।न्यायमूर्ति कांत ने महाराष्ट्र की ओर से पेश सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता से पूछा,आज नौकरशाह सभी नगर निगमों और पंचायतों पर कब्जा कर रहे हैं और प्रमुख नीतिगत निर्णय ले रहे हैं। इस मुकदमे के कारण एक पूरी लोकतांत्रिक प्रक्रिया ठप हो गई है। अधिकारियों की कोई जवाबदेही नहीं है। मौजूदा आंकड़ों के अनुसार चुनाव क्यों नहीं होने दिएजाते?याचिकाकर्ता पक्ष की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता ने कहा कि बंठिया रिपोर्ट का पालन नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि ओबीसी के लिए आरक्षित 34,हज़ार सीटें रद्द कर दी गई हैं। एक बिंदु पर,न्यायमूर्ति कांत ने आरक्षण की तुलना रेल यात्रा से की, जिसमें लोग चढ़ते तो हैं, लेकिन उतरते नहीं, मान लीजिए कि किसी को गलत तरीके से शामिल किया गया है या बाहर रखा गया है, तो समावेशन कोई मुद्दा नहीं हो सकता है। यह भी सुनिश्चित किया जा सके कि ऐसा आरक्षण एससी/एसटी/ओबीसी के लिए आरक्षित कुल सीटों के 50 पेर्सेंट से अधिक न हो।

साथियों बात अगर हम माननीय सुप्रीम कोर्ट के आदेश की करें तो, सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को महाराष्ट्र निकाय चुनाव को लेकर फैसला सुनाया है। कोर्ट ने राज्य चुनाव आयोग को निर्देश दिए हैं कि वह चार सप्ताह के भीतर राज्य में स्थानीय निकाय चुनावों की अधिसूचना जारी करे। पीठ ने अपने आदेश में कहा- हमारे विचार से स्थानीय निकायों के समय-समय पर चुनावों के जरिए लोकतंत्र के संवैधानिक जनादेश का सम्मान किया जाना चाहिए।सुप्रीम कोर्ट ने यह भी स्पष्ट किया कि महाराष्ट्र में स्थानीय निकाय चुनाव पिछले कई सालों से नहीं हुए हैं। इसका मुख्य कारण ओबीसी आरक्षण से जुड़ी कई लंबित कानूनी प्रक्रियाएं रही हैं। कोर्ट ने इस देरी को लोकतांत्रिक प्रक्रिया के लिए सही नहीं माना है और समय पर चुनाव करने के निर्देश दिए। अदालत ने बनठिया आयोग की रिपोर्ट को स्वीकार कर लिया।इस रिपोर्ट में ओबीसी पर सटीक आंकड़े तय करने के लिए जनगणना और महाराष्ट्र में स्थानीय निकाय चुनावों में इस वर्ग के लिए 27 प्रतिशत सीटें आरक्षित करने की सिफारिश की गई थी। पीठ ने कहा कि महाराष्ट्र स्थानीय निकाय चुनाव के परिणाम सर्वोच्च न्यायालय में लंबित याचिकाओं के निर्णयों के अधीन होंगे। कोर्ट ने अपने आदेश में यह भी कहा कि उचित मामलों में विस्तार की मांग की जा सकती है,कोर्ट ने कहा कि जमीनी स्तर की लोकतंत्र को रोका नहीं जा सकता है। हालांकि इस मामले में सुप्रीम कोर्ट ने महाराष्ट्र सरकार के वकील को अदालत में बुलाया था,जिसके बाद कोर्ट ने चुनाव के लिए अधिसूचना जारी करने का आदेश दिया है। इससे पहले कोर्ट ने कहा था कि पांच साल में स्थानीय निकाय के चुनाव करवाना संवैधानिक कर्तव्य है। 2486 स्थानीय निकायों के चुनाव लंबे समय से लंबित है और कोई भी चुना हुआप्रतिनिधि नहीं है, क्या यह कानून और नियमों का उल्लंघन नही है?लोकतंत्र को रोका नहीं जा सकता: कोर्ट की टिप्पणी मामले की सुनवाई करते हुए कोर्ट ने सख्त टिप्पणी करते हुए कहा कि रेलगाड़ी के डिब्बे की तरह आरक्षण हो गया है, जो इसमें चढ़ गए हैं, वे दूसरों को आने नहीं देना चाहते है. जस्टिस सूर्यकांत ने कहा कि क्यों कुछ ही वर्ग के लोगों को आरक्षण मिलना चाहिए?बाकी लोगों को आरक्षण क्यों नहीं मिलना चाहिए, जो सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से पिछड़े हैं, यह राज्यों की जिम्मेदारी है कि इस पर विचार करें।

साथियों बात अगर हम माननीय सुप्रीम कोर्ट की सख़्त टिप्पणियों की करें तो, न्यायमूर्ति कांत ने महाराष्ट्र की ओर से पेश सॉलिसिटर जनरल से पूछा,₹आज नौकरशाह सभी नगर निगमों और पंचायतों पर कब्जा कर रहे हैं और प्रमुख नीतिगत निर्णय ले रहे हैं। इस मुकदमे के कारण एक पूरी लोकतांत्रिक प्रक्रिया ठप हो गई है। अधिकारियों की कोई जवाबदेही नहीं है। मौजूदा आंकड़ों के अनुसार चुनाव क्यों नहीं होने दिए जाते? बता दें आंकड़े एकत्र करने के लिए पूर्व मुख्य सचिव श्री बंठिया के नेतृत्व में आयोग का गठन किया था।जुलाई 2022 में आयोग द्वारा अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करने के बाद तत्कालीन सरकार ने ओबीसी कोटा लागू करते हुए स्थानीय निकायों के चुनाव कराने की अनुमति के लिए सर्वोच्च न्यायालय का रुख किया था।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि लोकतांत्रिक प्रक्रिया में सही समय पर चुनाव के जरिए लोकतंत्र के संवैधानिक जनादेश का सम्मान करना जरूरी।सुप्रीम कोर्ट का महाराष्ट्र चुनाव आयोग को निर्देश- स्थानीय निकायों के चुनाव की अधिसूचना 4 सप्ताह व चुनावी प्रक्रिया 4 माह में संपन्न करने का प्रयास करें।स्वस्थ लोकतंत्र में समयबद्ध चुनाव कराना संवैधानिक कर्तव्य- जमीनी स्तरपर लोकतंत्र को रोकना या बाधित करना कठोर अपराध की श्रेणी में लाना ज़रूरी है।

मई 2025 में रेनॉल्ट की कारों पर मिल रहा हजारों रुपये की बचत का मौका, जानें किस गाड़ी पर मिलेगा क्या ऑफर

परिवहन विशेष न्यूज

रेनॉल्ट मई 2025 ऑफर फ्रांस की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Renault की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से May 2025 में अपनी कारों पर बड़ी बचत का मौका दिया जा रहा है। Renault की किस गाड़ी को इस महीने खरीदने पर कितनी बचत की जा सकती है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में हैचबैक से लेकर एसयूवी सेगमेंट तक के वाहनों की बिक्री करने वाली फ्रांस की प्रमुख वाहन निर्माता Renault की ओर से आकर्षक डिस्काउंट ऑफर दिए जा रहे हैं। निर्माता की ओर से May 2025 में किस गाड़ी पर किस तरह का ऑफर (Renault May 2025 Offers) दिया जा रहा है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Renault Kwid पर क्या है ऑफर

रेनो की ओर से क्विड को हैचबैक सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। अगर आप मई में इस गाड़ी को खरीदने की तैयारी कर रहे हैं तो इस महीने Renault Kwid पर अधिकतम 25 हजार रुपये तक की बचत की जा सकती है। इस पर 10 हजार रुपये का कैश डिस्काउंट, 15 हजार रुपये का एक्सचेंज बोनस दिया जा रहा है। यह ऑफर इसके RXE और RXL(O) के अलावा अन्य वेरिएंट्स पर मिल रहे हैं। इसके अलावा RXL(O) पर रेफरल बोनस के तौर पर तीन हजार रुपये की बचत हो सकती है। साथ ही स्क्रैपेज प्रोग्राम के ऑफर भी इस पर मिल रहे हैं। हैचबैक कार की एक्स शोरूम कीमत 4.69 लाख रुपये से 6.45 लाख रुपये के बीच है। 2024 की बची यूनिट्स को खरीदने पर इस महीने 90 हजार रुपये तक का फायदा उठाया जा सकता है।

Renault Triber पर कितनी होगी बचत

निर्माता की ओर से बजट एमपीवी के तौर पर रेनो ट्राइबर की बिक्री की जाती है। इस गाड़ी को अगर May 2025 में खरीदा जाता है। तो 50 हजार रुपये तक की बचत की जा सकती है। यह बचत इस गाड़ी के RXE और RXL वेरिएंट्स को छोड़कर दी जा रही है। जिसमें 25 हजार रुपये का कैश डिस्काउंट और 25 हजार रुपये का एक्सचेंज बोनस मिल रहा है। इस बजट एमपीवी की एक्स शोरूम कीमत 6.14 लाख रुपये से शुरू होती है और इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 8.98 लाख रुपये है। 2024 की बची यूनिट्स को खरीदने पर इस महीने 90 हजार रुपये तक का फायदा उठाया जा सकता है।

Renault Kiger पर कितनी बचत

रेनो की ओर से सब फोर मीटर एसयूवी सेगमेंट में काइगर को ऑफर किया जाता है। निर्माता की इस एसयूवी को अगर May 2025 में खरीदने की तैयारी कर रहे हैं तो इस पर भी अधिकतम 50 हजार रुपये तक बचाए जा सकते हैं। कैश डिस्काउंट के 25 हजार रुपये और एक्सचेंज बोनस के तौर पर ऑफर किए जा रहे 25 हजार रुपये मिलाकर 50 हजार रुपये के ऑफर दिए जा रहे हैं। Renault Kiger SUV की एक्स शोरूम कीमत 6.14 लाख रुपये से शुरू होती है और इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 11.23 लाख रुपये है। 2024 की बची यूनिट्स को खरीदने पर इस महीने 90 हजार रुपये तक का फायदा उठाया जा सकता है।

किआ कैरेंस क्लैविस भारत में हुई पेश, पैनोरमिक सनरूफ से लेकर एडवांस्ड ड्राइवर असिस्टेंस सिस्ट तक मिले बेहतरीन फीचर्स

परिवहन विशेष न्यूज

किआ क्लैविस का भारत में अनावरण साउथ कोरियाई वाहन निर्माता किआ की ओर से भारत में औपचारिक तौर पर नई एमपीवी Kia Carens Clavis को पेश कर दिया है। नई एमपीवी में किआ की ओर से किस तरह के फीचर्स दिए गए हैं। कितना दमदार इंजन दिया गया है। किस कीमत पर और कब तक Kia Carens Clavis को लॉन्च किया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। साउथ कोरियाई वाहन निर्माता Kia की ओर से भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से औपचारिक तौर पर नई एमपीवी Kia Carens Clavis को पेश कर दिया गया है। इसमें किस तरह के फीचर्स को दिया गया है। कितना दमदार इंजन एमपीवी में मिलेगा। कब तक इसकी कीमतों (Kia Clavis Revealed in India) की घोषणा की जा सकती है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

पेश हुई Kia Carens Clavis

किआ मोटर्स की ओर से औपचारिक तौर पर नई एमपीवी Kia Carens Clavis को पेश कर दिया गया है। इसके साथ ही एमपीवी के फीचर्स, इंजन और अन्य जानकारी को भी सार्वजनिक किया गया है। इसे किआ के नए 2.0 डिजाइन के साथ ऑफर किया गया है। इसी डिजाइन पर निर्माता की ओर से EV9, Syros जैसी कारों को भी ऑफर किया जा रहा है।

कैसे हैं फीचर्स

Kia Carens Clavis में निर्माता की ओर से कई बेहरीन फीचर्स को ऑफर किया गया है। इसमें एलईडी डीआरएल, एलईडी आइस क्यूब हेडलाइट्स, कनेक्टिड एलईडी टेल लैंप, पैनोरमिक सनरूफ, 26.62 इंच ड्यूल स्क्रीन, फ्रंट वेंटिलेटिड सीट्स, 64 रंग एंबिएंट लाइट्स, 360 डिग्री कैमरा, एयर प्यूरीफायर, बोस ऑडियो सिस्टम, वायरलेस फोन चार्जर, टू स्पोक स्टेयरिंग व्हील, ड्यूल टोन इंटीरियर, ब्लैक साइड डोर गार्निश, 17 इंच अलॉय व्हील्स, पुश बटन स्टॉर्ट/स्टॉप, सेकेंड रो कैप्टन सीट्स, ऑल विंडो अप-डाउन जैसे फीचर्स दिए गए हैं।

कितनी है सुरक्षित

किआ कैरेंस क्लाविस में सुरक्षा का भी काफी ध्यान रखा गया है। इसमें कई सेफ्टी फीचर्स को स्टैंडर्ड तौर पर दिया गया है। जिसमें छह एयरबैग, ईएससी, एबीएस, ईबीडी, हिल असिस्ट, पार्किंग सेंसर, चारों पहियों में डिस्क ब्रेक, वीएसएम, बीएएस, एचएसी शामिल हैं। इसके साथ ही इसमें 20 सेफ्टी फीचर के साथ Level-2 ADAS भी शामिल है।

कितना दमदार इंजन

किआ की ओर से कैरेंस क्लाविस एमपीवी में तीन इंजन के विकल्प दिए गए हैं। इसमें 1.5 लीटर की क्षमता का पेट्रोल, 1.5 लीटर टर्बो पेट्रोल और 1.5 लीटर डीजल इंजन दिया गया है। इसमें मिलने वाले 1.5 लीटर टर्बो पेट्रोल इंजन के साथ नए मैनुअल ट्रांसमिशन के साथ लाया जाएगा। इसके अलावा इसमें ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन के विकल्प दिए गए हैं। साथ में ड्राइविंग मोड्स को भी दिया गया है।

कब होगी कीमत की घोषणा

किआ कैरेंस क्लाविस को अभी सिर्फ पेश किया गया है। रात 12 बजे से इसके लिए बुकिंग को शुरू कर दिया जाएगा। जिसके कुछ समय बाद इसकी कीमतों की घोषणा की जाएगी। इसकी संभावित एक्स शोरूम कीमत 15 लाख रुपये के आस पास हो सकती है।

किनसे है मुकाबला

किआ की ओर से कैरेंस क्लाविस को एमपीवी सेगमेंट में ऑफर किया जा रहा है। इस सेगमेंट में इसका मुकाबला JSW MG Hector, Mahindra Scorpio N, XUV 700, Tata Safari, Toyota Innova Crysta जैसी एमपीवी और एसयूवी के साथ होगा।

भारत में एंट्री से पहले ही टेस्ला को बड़ा झटका, इंडिया हेड प्रशांत मेनन ने दिया इस्तीफा

अमेरिका की इलेक्ट्रिक वाहन निर्माता Tesla दुनिया के कई देशों में वाहनों की बिक्री करती है। टेस्ला जल्द ही भारत में कारों को पेश करने की तैयारी कर रही है लेकिन मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक टेस्ला इंडिया के हेड ने इस्तीफा दे दिया है। रिपोर्ट्स के मुताबिक क्या जानकारी मिल रही है। आइए जानते हैं।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। भारत में दुनिया की कई प्रमुख वाहन निर्माता अपनी कारों को ऑफर करती हैं। इस लिस्ट में जल्द ही टेस्ला का नाम भी जुड़ सकता है। लेकिन मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक टेस्ला के इंडिया हेड ने भारत में सफर को शुरू करने से पहले ही अपने पद से इस्तीफा दे दिया है। रिपोर्ट्स से और क्या जानकारी मिल रही है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

इंडिया हेड ने दिया इस्तीफा

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक टेस्ला इंडिया के हेड प्रशांत मेनन ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया है। जानकारी के मुताबिक इस्तीफा देने का कारण निजी बताया जा रहा है, लेकिन अभी पूरी जानकारी सामने नहीं आ पाई है।

किसे मिली जिम्मेदारी

रिपोर्ट्स के मुताबिक प्रशांत के इस्तीफे के बाद अब उनके उत्तराधिकारी के नाम की घोषणा नहीं की गई है। लेकिन उम्मीद की जा रही है कि चीन की टीम फिलहाल ऑपरेशनल कामों की देखरेख करेंगी।

लंबे समय से टेस्ला के साथ

प्रशांत मेनन लंबे समय से टेस्ला के साथ रहे हैं। जानकारी के मुताबिक करीब नौ साल से वह टेस्ला के साथ थे और चार साल से ज्यादा समय के लिए वह टेस्ला इंडिया बोर्ड के चेयरमैन भी रह चुके हैं। खास बात यह है कि उन्होंने ही 2021 में महाराष्ट्र के पुणे शहर में टेस्ला के ऑफिस की स्थापना भी की थी।

जल्द शुरू कर सकती है सफर

रिपोर्ट्स के मुताबिक टेस्ला जल्द ही भारत में अपने सफर को औपचारिक तौर पर शुरू करने की तैयारी कर रही है। कुछ समय पहले जानकारी मिली थी कि निर्माता भारत में अपने पहले शोरूम के लिए जगह तलाश रही थी और फिर मार्च 2025 में मुंबई के बांद्रा कुर्ला में जगह भी तय हो गई थी और शोरूम के लिए लीज डील भी साइन की गई थी।

कारों की हो रही टेस्टिंग

शोरूम के साथ ही भारत में टेस्ला की कारों की टेस्टिंग भी की जा रही है। सोशल मीडिया पर कई पोस्ट वायरल हो रही थीं जिसमें पूरी तरह से ढकी हुई टेस्ला की कारों टेस्ट किया जा रहा है। महाराष्ट्र के मुंबई-पुणे एक्सप्रेस वे पर इन कारों को टेस्टिंग के दौरान कुछ समय पहले भी देखा जा चुका है।

बिक्री में गिरावट दर्ज हुई

बिक्री के मामले में टेस्ला ने साल 2025 की पहली तिमाही में नेट प्रॉफिट में 71 फीसदी की ईयर ऑन ईयर गिरावट देखी है।

एफटीए पर भारतीय ऑटो कंपनियों की चिंता, क्या सस्ते चीनी पुर्जों की होगी बाढ़?

परिवहन विशेष न्यूज

भारत और यूनाइटेड किंगडम (यूके) के बीच हुए फ्री ट्रेड एग्रीमेंट (FTA) को लेकर भारतीय ऑटोमोबाइल इंडस्ट्री में मिली-जुली प्रतिक्रिया देखने को मिल रही है। यह समझौता यूके से भारत में आने वाली कारों पर इम्पोर्ट ड्यूटी को घटाकर 10 प्रतिशत करने की बात करता है।

नई दिल्ली। भारत और यूनाइटेड किंगडम (यूके) के बीच हुए फ्री ट्रेड एग्रीमेंट (FTA) को लेकर भारतीय ऑटोमोबाइल इंडस्ट्री में मिली-जुली प्रतिक्रिया देखने को मिल रही है। यह समझौता यूके से भारत में आने वाली कारों पर इम्पोर्ट ड्यूटी को घटाकर 10 प्रतिशत करने की बात करता है। हालांकि कंपनियां अभी इसकी पूरी जानकारी का इंतजार कर रही हैं और उन्हें डर है कि अगर यह टैरिफ कटौती दूसरे देशों के साथ होने वाले ट्रेड डील्स में भी लागू हुई, तो हालात मुश्किल हो सकते हैं।

चीनी सामान की एंट्री को लेकर चिंता

कंपनियों की सबसे बड़ी चिंता है कि सस्ते चीनी ऑटो पार्ट्स और असेंबली यूनिट्स यूके के रास्ते भारत में आ सकते हैं। यानी चीन से सस्ते बैटरी, मोटर और दूसरे पुर्जे यूके में भेजकर वहां से फुली-बिल्ट यूनिट के रूप में भारत में भेजे जा सकते हैं, और वह भी कम ड्यूटी में। इससे भारतीय बाजार में चीनी सामान की बाढ़ आ सकती है। उद्योग जगत का कहना है कि सरकार को 'रूल्स ऑफ ओरिजिन', 'लोकल वैल्यू एडिशन' और 'टैरिफ हेडिंग' जैसे नियमों को सख्ती से लागू करना चाहिए। ताकि चीन से सीधे या घुमा-फिराकर आने वाले सामान पर रोक लगाई जा सके।

ऑटो पार्ट्स बनाने वालों को राहत

जहां एक ओर भारतीय ऑटो कंपोनेंट इंडस्ट्री ने इस कदम का स्वागत किया है, क्योंकि अब भारतीय पार्ट्स पर यूके में शून्य ड्यूटी लगेगी। वहीं कार कंपनियां अभी सावधानी से आगे बढ़ रही हैं। उनका कहना है कि उन्हें यह जानना जरूरी है कि कब से यूके से आने वाली कारों पर ड्यूटी 10 प्रतिशत होगी और हर साल कितनी कारें इस छूट के तहत भारत आ सकेंगी।

ये कारें हो सकती हैं भारत में सस्ती

इस फैसले का सीधा फायदा उन ब्रांड्स को मिलेगा जो यूके में मैन्युफैक्चरिंग करते हैं। इसमें शामिल हैं टाटा के स्वामित्व वाली Jaguar Land Rover (JLR), जगुआर लैंड रोवर (जेएलआर), और लग्जरी कार निर्माता Bentley (बेंटले), Aston Martin (एस्टन मार्टिन), Rolls Royce (रोल्स रॉयस), Lotus (लोटस) और McLaren (मैकलारेन)। हालांकि ये सब लिमिटेड वॉल्यूम ब्रांड्स हैं, जो आम ग्राहकों को कम ही प्रभावित करेंगे। लेकिन यूके में Nissan (निसान) और Toyota (टोयोटा) जैसी मेनस्ट्रीम कंपनियों के प्लांट भी हैं, जो अब भारत में कुछ मॉडल कम ड्यूटी में लॉन्च करने का प्लान बना सकती हैं।

एमजी विंडसर प्रो ईवी के लिए आज से शुरू हुई बुकिंग, पहले आठ हजार लोगों को मिलेगा बड़ा फायदा

परिवहन विशेष न्यूज

ब्रिटिश वाहन निर्माता JSW MG मोटर्स की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से छह मई 2025 को लॉन्च की गई नई ईवी MG Windsor Pro के लिए बुकिंग को आज से शुरू कर दिया गया है। एमजी की ओर से पहले आठ हजार लोगों को किस तरह से फायदा दिया जाएगा। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री करने वाली ब्रिटिश वाहन निर्माता JSW MG मोटर्स की ओर से आज से MG Windsor Pro EV के लिए बुकिंग शुरू कर दी गई है। इस गाड़ी को छह मई 2025 को ही लॉन्च किया गया था। निर्माता की ओर से किस तरह पहले आठ हजार लोगों को बड़ा फायदा दिया जाएगा। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

शुरू हुई MG Windsor Pro EV की बुकिंग

MG Windsor Pro EV के लिए आज से औपचारिक तौर पर बुकिंग शुरू कर दी गई है। निर्माता की ओर से ऑनलाइन और ऑफलाइन डीलरशिप के जरिए इस गाड़ी के लिए बुकिंग को शुरू कर दिया गया है।

दो दिन पहले हुई लॉन्च

एमजी की ओर से विंडसर प्रो ईवी को छह मई 2025 को ही लॉन्च किया गया है। प्रो वेरिएंट को बाकी अन्य वेरिएंट्स के साथ ही ऑफर किया जा रहा है। लेकिन इसमें अन्य वेरिएंट्स के मुकाबले काफी ज्यादा बेहतरीन फीचर्स को दिया गया है।

कैसे हैं फीचर्स

MG Windsor Pro EV में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जा रहा है। इसमें ड्यूल टोन इंटीरियर, V2L और V2V को भी दिया गया है। इसके अलावा इसमें एंबिएंट लाइट, इनफिनिटी ग्लास रूफ, फ्रंट सीट वेंटिलेशन, 15.6 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, एपल कार प्ले, एंड्राइड ऑटो, चार स्पीकर, चार ट्विटर, सब वूफर, डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, वायरलेस स्मार्टफोन चार्जर, फ्रंट वेंटिलेटिड सीट्स, वुडन फिनिश, 604 लीटर बूट स्पेस, एलईडी हेडलाइट्स, एलईडी टेल लाइट्स, कनेक्टिड डीआरएल, पावर्ड टेलगेट, 18 इंच अलॉय व्हील्स, ग्लास एंटीना, फ्लश डोर हैंडल जैसे फीचर्स मिलते हैं।

कितनी है सुरक्षित

JSW MG Windsor Pro EV में सुरक्षा के लिए छह एयरबैग, एबीएस, ईबीडी, हिल होल्ड असिस्ट, 360 डिग्री कैमरा, फ्रंट और रियर पार्किंग सेंसर, ईएसपी, चारों पहियों में डिस्क ब्रेक, रेन सेंसिंग वाइपर, ऑटो डिमिंग इनसाइड रियर व्यू मिरर, फॉलो मी हेडलैंप, एलईडी कॉर्नरिंग लाइट, ईएसएस, सीट बेल्ट रिमाइंडर और आइसोफिक्स चाइल्ड एंकरेज जैसे कई फीचर्स के साथ ही Level 2 ADAS को भी दिया गया है। ADAS के साथ ही इसमें 12 एडवांस सेफ्टी फीचर्स भी दिए गए हैं जिसमें ट्रैफिक जाम असिस्ट, एडेप्टिव क्रूज कंट्रोल, लेन फंक्शंस, एफसीडब्ल्यू, आईएचबीए, आईएससी शामिल हैं।

कितनी दमदार बैटरी और मोटर

MG Windsor Pro EV में 52.9 KWh की क्षमता की बैटरी को दिया गया है। जिसे सिंगल चार्ज में 449 किलोमीटर तक चलाया जा सकता है। इसे मिनट 60 किलोवाट के डीसी फास्ट चार्जर से 20 से 80 फीसदी सिर्फ 50 मिनट में चार्ज किया जा सकता है। इसमें लगी मोटर से इसे 136 पीएस की पावर और 200 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है।

कितनी है कीमत

MG Windsor Pro को BaaS के साथ भी ऑफर किया जा रहा है। इसके साथ इसकी एक्स शोरूम कीमत 12.50 लाख रुपये रखी गई है। बैटरी के साथ इसकी इंट्रोडक्ट्री एक्स शोरूम कीमत 17.49 लाख रुपये रखी गई है। इस कीमत पर पहली आठ हजार बुकिंग्स की जाएंगी। इसके बाद गाड़ी की कीमतों में बदलाव किया जा सकता है।

कैसे मिलेगा फायदा

निर्माता की ओर से लॉन्च के समय ही जानकारी दी गई थी कि वह 17.49 लाख रुपये की इंट्रोडक्ट्री कीमत पर गाड़ी को लॉन्च कर रही है। इस कीमत पर पहले आठ हजार लोगों को ही गाड़ी दी जाएगी। इसके बाद इसकी कीमतों में बदलाव किया जा सकता है और कीमत में बढ़ोतरी की जा सकती है। इसलिए पहले आठ हजार लोगों को यह गाड़ी कम कीमत पर भी ऑफर की जाएगी।

अंधेरे बंद कमरे

सिद्ध गुरु प्रमोद निर्वाण

सहज संन्यास मिशन की मान्यता है कि हम सरल हो जाएं, सच्चे हो जाएं, निस्वार्थ हो जाएं और प्रेममय हो जाएं तो हम संन्यासी हो गए। उसके लिए घर, परिवार, समाज, मित्र, रिश्तेदार, व्यवसाय या नौकरी छोडने की आवश्यकता नहीं है, किसी खास तरह के कपड़े पहनने की आवश्यकता नहीं है। गेरुए वस्त्र पहन कर हम लोगों को बताते हैं कि हम संन्यासी हैं, गृहस्थ संन्यास में रहकर हमें कुछ भी बताने, समझाने या घोषणा करने की भी आवश्यकता नहीं है। यहां तो सिर्फ खुद को समझाने और फिर खुद को समझने की आवश्यकता है। संन्यास इसी में पूरा हो जाता है। परमात्मा तक पहुंचने के कई रास्ते हैं। कोई भक्ति से परमात्मा तक जाता है, कोई सेवा से परमात्मा तक जाता है, कोई ज्ञान से परमात्मा तक जाता है, कोई योग से परमात्मा तक जाता है...

सात्विक जीवन बहुत सरल जीवन है। सात्विक होना बहुत सरल है। मजे की बात यह है कि इसके लिए किसी कर्मकांड की आवश्यकता नहीं है। सिर्फ अपना नजरिया बदला, सोचने का ढंग बदला, माइंडसेट बदला और दुनिया बदल गई। कोई पूजा-पाठ नहीं, कोई हवन नहीं, कोई उपवास नहीं, कोई दान-दक्षिणा नहीं। सिर्फ इतना किया कि हमारे कारण किसी को दुख न पहुंचे, हमारे कारण किसी का नुकसान न हो, हम किसी को धोखा न दें, हम किसी भी हालत में झूठ न बोलें, किसी का अपमान न करें, किसी का मजाक न उड़ाएं, किसी को छोटा न समझें, सबसे प्रेम करें, निश्छल प्रेम करें, बिना कारण प्रेम करें, बिना किसी लाभ की आशा के प्रेम करें, निस्वार्थ प्रेम करें। दूसरों के प्रति हमारे व्यवहार में जब यह परिवर्तन आ जाए तो अपने प्रति भी हम अपने नजरिये में दयालुता लायें। अपनी कमियों के लिए, भूलों के लिए, गलतियों के लिए, गुस्ताखियों के लिए खुद को माफ करना सीखें। दूसरों के प्रति और अपने प्रति प्रेम से भर जाएं, यह सात्विकता का पहला चरण है। कर के देखिए, आसान हो जाएगा।

डरते रहेंगे, नुकसान का सोच कर, अनिष्ट का सोच कर, तो डरते ही रह जाएंगे, कभी बदल नहीं पाएंगे, शुरुआत करेंगे तो कभी न कभी मंजिल पर पहुंच ही जाएंगे। पर अभी यह सात्विकता का पहला चरण है। सात्विकता का दूसरा चरण है अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा। शारीरिक स्वास्थ्य को तो हम सभी समझते ही हैं। ताजा शुद्ध भोजन लेना, चबा-चबाकर खाना, खाना खाने से चालीस मिनट पहले या डेढ़ घंटे बाद पानी पीना, पानी को बैठकर और घूंट-घूंट करके पीना, भोजन के तुरंत बाद आइसक्रीम या कोई ठंडी चीज न खाना, खाने के तुरंत पहले या तुरंत बाद फल-फ्रूट न खाना, दिन भर में कम से कम दो फ्रूट अवश्य खाना, दिन भर में कम से कम तीन लीटर पानी पीना, रेफ्रिजेरेटर का ठंडा किया हुआ पानी पीने से बचना, मीठा, नमकीन, तीखा आदि संतुलित मात्रा में ही खाना, शराब, सिगरेट, बीड़ी, सुर्ती और अन्य नशीले पदार्थों के प्रयोग से बचना और नियमित रूप से व्यायाम करना आदि शरीर के स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। क्रोध न करना, उदास न होना, अपनी कमियों और गलतियों के लिए पछताते ही न रहना, अकेलेपन में भी खुश रहना, रिश्ते बनाना और निभाना, शिकायती स्वभाव का न होना, लालची न होना, धोखेबाज न होना, झूठ न बोलना, मन, वचन और कर्म से ही नहीं बल्कि सोच से भी अहिंसक होना आदि मानसिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक हैं। यह लिस्ट देखने में जितनी लंबी लगती है वास्तव में उतनी है नहीं। करने लग जाएं तो कठिन भी नहीं है, बस पहला कदम लेने की जरूरत है, थोड़े से दृढ़ निश्चय की जरूरत है। अगर हमने यह कर लिया तो हम संन्यासी हैं। आदि शंकराचार्य ने अपनी प्रसिद्ध रचना 'भज गोविंदम्' में इसी का खुलासा किया है। वे तो यहां तक कहते हैं कि संसार छोडक़र, सारे सुख छोडक़र, ठंड में कांपते हुए किसी पेड़ के नीचे सोने वाला, संसार के सारे सुखों का त्याग करके और भगवा पहनकर संन्यासी हो जाने वाला व्यक्ति भी परमात्मा को नहीं पा सकता यदि उसके मन में अब भी कोई इच्छा बाकी है। संसार को छोडना संन्यास नहीं है, संसार से मुक्ति संन्यास है, इच्छाओं से मुक्ति इसकी राह है।

इच्छाओं से मुक्ति में ही संसार से मुक्ति है और यही संन्यास है। आदि शंकराचार्य कहते हैं कि ज्ञान के बिना सिर्फ रूटीन के रूप में उपवास करना, कर्मकांड करना हमें संन्यासी नहीं बनाता। कोई एक व्यक्ति किसी अंधेरे कमरे में बंद हो और वह उस कमरे में इधर-उधर घूमते हुए बार-बार ठोकरें खाए, कमरे में पड़ी वस्तुओं से टकराता रहे, वह हालत उस संन्यासी की है जो सिर्फ वेशभूषा बदल कर या हुलिया बदल कर संन्यासी होने का दम भरता है। सब कुछ छोड़ देने के बावजूद यदि उसके मन में कोई इच्छा बाकी है तो वह संन्यासी होते हुए भी अज्ञानी है और अंधेरे बंद कमरे में कैद है। इच्छाओं पर नियंत्रण की कला हमें संन्यासी बना सकती है। सच्चाई तो यह है कि पादरियों, मुल्लाओं और संन्यासियों के कठिन कर्मकांड और वेशभूषा ने लोगों में संन्यास के प्रति भ्रम पैदा किया है और बहुत से लोग जो गृहस्थ में रहते हुए ही संन्यासी का-सा जीवन बिता सकते थे, संन्यास की कठिनाइयों के कारण संन्यासी नहीं हो पाए, सात्विक नहीं हो पाए। संन्यासियों के कारण, उनकी संन्यास की प्यास अधूरी रह गई। 'सहज संन्यास मिशन' ने बदलते जमाने की आवश्यकताओं के मद्देनजर, और गृहस्थ लोगों में संन्यास के प्रति जागरूकता लाने के लिए गृहस्थ संन्यास की परंपरा को पुनर्जीवित किया है। सहज संन्यास मिशन की मान्यता है कि हम सरल हो जाएं, सच्चे हो जाएं, निस्वार्थ हो जाएं और प्रेममय हो जाएं तो हम संन्यासी हो गए। उसके लिए घर, परिवार, समाज, मित्र, रिश्तेदार, व्यवसाय या नौकरी छोडने की आवश्यकता नहीं है, किसी खास तरह के कपड़े पहनने की आवश्यकता नहीं है। गेरुए वस्त्र पहन कर हम लोगों को बताते हैं कि हम संन्यासी हैं, गृहस्थ संन्यास में रहकर हमें कुछ भी बताने, समझाने या घोषणा करने की भी आवश्यकता नहीं है। यहां तो सिर्फ खुद को समझाने और फिर खुद को समझने की आवश्यकता है। संन्यास इसी में पूरा हो जाता है। परमात्मा तक पहुंचने के कई रास्ते हैं। कोई भक्ति से परमात्मा तक जाता है, कोई सेवा से परमात्मा तक जाता है, कोई ज्ञान से परमात्मा तक जाता है, कोई योग से परमात्मा तक जाता है। सभी रास्ते परमात्मा के रास्ते हैं और सभी सही हैं। हमें अपनी स्थिति, अपनी क्षमता और अपनी पसंद के मुताबिक इनमें से कोई एक रास्ता या सभी का मिश्रण चुनकर अपनी यात्रा आरंभ करनी है और यह ध्यान रखना है कि हम किसी दूसरे रास्ते को नीचा न समझें, गलत न समझें, उसकी आलोचना न करें।

सहज संन्यास मिशन में हमें यह स्पष्ट किया जाता है कि गेरुए वस्त्र पहनने की परंपरा उस प्रतीक को दर्शाती है कि व्यक्ति ने अपने शरीर का हवन कर दिया। सिर मुंडाने की प्रथा उस प्रतीक को दर्शाती है कि व्यक्ति ने अपनी इच्छाएं काट डालीं। जटा बढ़ाने की प्रथा इस प्रतीक को दर्शाती है कि हमें किसी फैशन, किसी मेकअप की आवश्यकता नहीं रह गई। इन प्रतीकों को समझकर, इनसे प्रेरणा लेकर इन्हें अपनाना गलत नहीं है, पर इन्हें जाने बिना, इनका महत्व समझे बिना एक रूटीन के रूप में इन्हें अपना लेने से कोई लाभ नहीं होगा। संन्यास लेना एक सार्थक कदम है, पर उसके लिए समझ का होना आवश्यक है, ज्ञान की रोशनी का होना आवश्यक है, वरना हम अंधेरे बंद कमरे के कैदी की तरह हैं जो सिर्फ ठोकरें खा रहा है। सहज संन्यास मिशन न कोई धर्म है, न संप्रदाय, बस अध्यात्म की व्याख्या मात्र है, जो हमें अंधेरे बंद कमरे की ठोकरों से छुटकारा दिलाने का छोटा-सा प्रयास है।

विकास कितना खोखला

मेडिकल कालेज जैसे संस्थानों की इमारतों की वास्तुकला तथा इनकी परिकल्पना में भविष्य की अधिकांश जरूरतें नत्थी होनी चाहिएं। आश्चर्य यह है कि ऐसे सिद्धांत हिमाचल के उभरते मेडिकल कालेजों में पराजित होने लगे हैं। टांडा मेडिकल कालेज के मदर एंड चाइल्ड अस्पताल पर 44 करोड़ व्यय और इस संस्थान का नामकरण करने के बावजूद इसकी परिकल्पना रैंप न होने के कारण चोट खा रही है। कितनी हैरानी की बात है कि अस्पताल की अहम भूमिका में खड़ी इमारत इस काबिल नहीं कि मरीज आसानी से उपचार कक्ष तक पहुंच जाएं। आखिर यह भवन उद्घाटन की पट्टिका तक कैसे पहुंच गया और इसे एक नेता के नाम पर समर्पण भी हो गया, लेकिन सारा वास्तुशास्त्र सीढियों पर फिसल गया। 44 करोड़ का व्यय मामूली नहीं होता। जाहिर है कोई ड्राइंग बनी होगी। इमारतों के मापदंड में इसे सक्रिय अस्पताल की श्रेणी में बनाते-बनाते देखा गया होगा। साइट की इंस्पेक्शन करते कई इंजीनियर गुजरे होंगे, लेकिन ये पांव नहीं देख पाए कि स्ट्रेचर या व्हील चेयर पर मरीज को एक अदद रैंप भी चाहिए। हमारा बजट हारा भी तो निर्माण के मुहाने पर आकर और ताज्जुब यह कि इस गलती को सुधारने के लिए अतिरिक्त तीन करोड़ 31 लाख जारी होने के बावजूद उपचार नहीं हो सका। यह हमारे सोच की गुणवत्ता है या यह भी कहा जा सकता है कि हमारी मशीनरी कितनी अगंभीर है। ऐसे में शिलान्यासों से उद्घाटन तक के फलक तक गलतियों के शिकार कई भवन चिढ़ाते हैं। पालमपुर के मिनी सचिवालय का पलस्तर बताता रहा है कि विकास अंदर से कितना खोखला है, तो इसी शहर का बाइपास थ्री ब्रिज के निर्माण में लगी शटरिंग ने अपने हाथ खून से रंगे हैं। सरकारी परियोजनाओं की सही मॉनिटरिंग हो, तो अपव्यय के कई स्रोत बंद हो सकते हैं। ऐसी कई अधूरी इमारतें हैं, जो वर्षों बाद केवल विकास के खंडहर में बदल गई हैं। अभी हाल ही में राज्य सरकार ने किराये के भवनों में चल रहे कई विभागीय कार्यालयों को स्थानांतरित करने का फैसला किया है, तो पता चला कि जिला मुख्यालयों में कई खाली संपत्तियां बेकार हो रही हैं।

सरकारी दायित्व का परफेक्शन हर बार निजी क्षेत्र के सामने खुद में विवश हो जाता है, तो इसलिए कि व्यावसायिक प्रतिबद्धता न होने के कारण, हर प्रयास गौण किया जाता है। अगर टीएमसी मदर एंड चाइल्ड इमारत के नक्शे पर परफेक्शन की निगाहें होतीं, तो 44 करोड़ की लागत से हम एक भविष्य का उज्ज्वल निर्माण कर पाते। वर्षों बाद भी सरकारी इमारतों के ढेर में आधुनिकता का बोध गायब रहता है, तो इसलिए क्योंकि हम ढर्रे से बाहर नहीं आना चाहते। इस दौरान निर्माण की सरकारी एजेंसियां तो बढ़ गईं, लेकिन नए हिमाचल का कलात्मक पक्ष सामने नहीं आया। सरकारी क्षेत्र में पहाड़ी शैली का आधुनिक बोध दिखाई नहीं दिया, नतीजतन एक ही ड्राइंग पर आफिस, स्कूल या चिकित्सा भवन दिखाई देने लगे हैं। शिमला में अंग्रेजी शासन में जिस तरह प्रकृति से मेल खाता निर्माण हुआ, वह न्यू शिमला बनते-बनते मिट्टी में मिल चुका है। सरकारी इमारतों में नए हिमाचल की उभरती तस्वीर देखनी हो तो निर्माण की योग्यता, दक्षता और परिकल्पना को नए मुकाम तक पहुंचाना होगा। छात्रों को ऐसे परिसर चाहिएं जहां शिक्षा को माकूल वातावरण मिले। हिमाचल में सार्वजनिक भूमि का दुरुपयोग रोकने के लिए आर्किटेक्चर पर विशेष ध्यान देते हुए, इनकी उपयोग क्षमता को सार्थक बनाना होगा। हिमाचल के हर शहर की पहचान में वास्तुकला की विविधता का प्रदर्शन, गुणवत्ता के लिहाज से मजबूत होना चाहिए। विडंबना यह है कि सरकारी इमारतों पर पेड़-पौधे उग जाते हैं, लेकिन उन्हें हटाने के बजाय दीवारों के गिरने का इंतजार आसान हो गया है। हिमाचल के विभागीय कार्यालयों, स्कूल-कालेजों और चिकित्सालयों के भवनों को फिर से नए हिमाचल की कहानी लिखनी पड़ेगी। जहां पुरानी इमारतें खड़ी हैं, वहां वाहनों के लिए पार्किंग और जहां नवनिर्माण हो रहा है, वहां भविष्य की परिकल्पना चाहिए। निर्माण के क्षेत्र में ऐसा नवाचार चाहिए कि सरकारी एजेंसियां अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में अपने संदर्भों को पुख्ता कर सकें।

पहलगाम के आंसू और सिंदूर की ज्वाला

पहलगाम के आघात ने ऑपरेशन सिंदूर जैसी सटीक और निर्णायक प्रतिक्रिया को जन्म दिया',...

22 अप्रैल 2025 को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुआ हमला भारत-पाकिस्तान संबंधों में एक नए और भयावह मोड़ का प्रतीक बन गया। इस निर्मम घटना में 26 निर्दोष पर्यटकों की जान गई, जिन्हें केवल उनके धर्म के आधार पर चुन-चुनकर मारा गया। आतंकियों ने पहले लोगों से उनका धर्म पूछा और जो लोग मुस्लिम धर्म की कलमा पढने या अन्य धार्मिक गतिविधियां निभाने में असमर्थ पाए गए, उन्हें बेरहमी से गोली मार दी गई। यह हमला न सिर्फ एक आतंकवादी कार्रवाई थी, बल्कि भारत की धर्मनिरपेक्ष अस्मिता पर किया गया सीधा हमला था। आतंकवाद अब केवल राजनीतिक या सामरिक मुद्दा नहीं रहा, बल्कि वह धार्मिक कट्टरता और मानवता के मूल्यों के पूर्ण पतन का रूप ले चुका है। इस हमले ने न केवल देश को आक्रोशित किया, बल्कि यह भी सिद्ध कर दिया कि पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद अब इतनी गहराई तक जा चुका है कि वह निर्दोष नागरिकों की धार्मिक पहचान को निशाना बनाकर समाज में भय और नफरत फैलाना चाहता है। भारत ने इस हमले को अपनी संप्रभुता और सामाजिक एकता के खिलाफ माना और इसके बाद लिए गए निर्णयों ने यह स्पष्ट कर दिया कि अब हर हमले का जवाब निर्णायक और नीतिगत तरीके से दिया जाएगा। भारत सरकार ने तीव्र प्रतिक्रिया देते हुए सैन्य स्तर पर एक व्यापक कार्रवाई की योजना बनाई। इस सटीक और गोपनीय सैन्य कार्रवाई को नाम दिया गया- ऑपरेशन सिंदूर। यह नाम प्रतीक था भारत की सांस्कृतिक विरासत का, जिसमें सिंदूर शक्ति, सम्मान और संरक्षण का प्रतीक है। ऑपरेशन सिंदूर न केवल आतंक के विरुद्ध सर्जिकल कार्रवाई थी, बल्कि यह उन निर्दोष नागरिकों को सच्ची श्रद्धांजलि भी थी, जिन्होंने पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद की बलि चढक़र अपना जीवन खोया।

7 मई 2025 की सुबह जब देशवासी अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में व्यस्त थे, मीडिया प्लेटफॉर्म पर भारत के मिशन सिंदूर की खबरों ने भारत के जनमानस का सीना चौड़ा कर दिया। भारतीय सेना, वायुसेना और नौसेना की संयुक्त रणनीति ने 6 मई 2025 रात्रि को पाकिस्तान के भीतर 9 प्रमुख आतंकवादी ठिकानों पर जोरदार हमला कर दिया। यह हमले न केवल लाइन ऑफ कंट्रोल के पास स्थित आतंकी लॉन्चपैड्स पर किए गए, बल्कि पाकिस्तान के भीतरी हिस्सों में भी उन ठिकानों को टारगेट किया गया, जो लंबे समय से आतंक की फैक्टरी बने हुए थे। ऑपरेशन सिंदूर के तहत जिन 9 ठिकानों पर सर्जिकल स्ट्राइक की गई, वे थे : बहावलपुर-जैश-ए-मोहम्मद का मुख्यालय। मुरीदके : लश्कर-ए-तैयबा का आधार स्थल, जो 2008 मुंबई हमले से जुड़ा रहा है। गुलपुर- नियंत्रण रेखा के पास स्थित वह अड्डा, जहां से 2023-24 के हमलों की योजना बनी। सावाई- जहां से तीर्थयात्रियों पर हमलों की साजिश रची गई। बिलाल- जैश का प्रमुख लॉन्चपैड। कोटली – हिज्बुल मुजाहिदीन की उपस्थिति वाला अड्डा। बरनाला, सरजाला और महसुन्ता – आतंकी ट्रेनिंग और लॉन्चिंग सेंटर। इन हमलों में अत्याधुनिक तकनीक का प्रयोग किया गया। दूरवर्ती स्थानों को मिसाइलों और ड्रोन हमलों द्वारा ध्वस्त किया गया। खास बात यह रही कि इस पूरे ऑपरेशन में भारतीय पक्ष को कोई नुकसान नहीं हुआ, और सभी सैनिक सुरक्षित वापस लौटे।

भारतीय सेना आज विश्व की सबसे शक्तिशाली और संगठित सेनाओं में से एक मानी जाती है। इसकी ताकत न केवल इसके अत्याधुनिक हथियारों, तकनीकी क्षमताओं और रणनीतिक कौशल में निहित है, बल्कि उस अडिग संकल्प में भी छुपी है जो हर भारतीय सैनिक की रगों में बहता है। भारत की सुरक्षा, संप्रभुता और जनमानस की एकता पर यदि कोई खतरा मंडराता है, तो भारतीय सेना उसका जवाब शौर्य और संयम के अद्भुत संतुलन के साथ देती है। वर्ष 2014 के बाद देश ने ऐसे कई उदाहरण देखे हैं, चाहे वह उरी हमले के बाद की सर्जिकल स्ट्राइक हो, पुलवामा के बाद बालाकोट एयरस्ट्राइक या हाल ही में पहलगाम हमले के पश्चात ऑपरेशन सिंदूर, हर बार भारतीय सेना ने यह सिद्ध किया है कि भारत अब केवल सहन नहीं करेगा, बल्कि हर आघात का उत्तर निर्णायक रूप से देगा। वर्ष 1947 का भारत-पाक विभाजन केवल दो राष्ट्रों का निर्माण नहीं था, बल्कि वह एक ऐसी घटना थी जिसने उपमहाद्वीप को खून से रंग दिया। पाकिस्तान ने अपने निर्माण के तुरंत बाद ही भारत विरोधी गतिविधियां शुरू कर दीं। 1947, 1965 और 1971 में उसने सीधे युद्ध छेड़े। 1999 में कारगिल में तो उसने गुपचुप तरीके से घुसपैठ कर युद्ध का षड्यंत्र रचा, जिसे भारतीय सेना ने मुंहतोड़ जवाब दिया। इन सभी युद्धों में भारत ने विजय प्राप्त की, परंतु हर बार भारत ने युद्ध के बजाय शांति की पहल की। लेकिन पाकिस्तान ने इस सद्भावना का बदला आतंकवाद से दिया। उसकी सेना और आईएसआई लगातार जैश-ए-मोहम्मद, लश्कर-ए-तैयबा और हिज्बुल जैसे संगठनों को पैसा, प्रशिक्षण और संरक्षण देती रही। मुंबई हमले, उरी हमला, पुलवामा विस्फोट और अब पहलगाम कांड, हर घटना में पाकिस्तान की भूमिका उजागर होती रही है। भारत एक शांति प्रिय राष्ट्र है, लेकिन जब देश की संप्रभुता, नागरिकों की सुरक्षा और मानवता पर आघात होता है, तब भारत यह भी दिखाता है कि वह केवल सहनशील ही नहीं, बल्कि निर्णायक कार्रवाई करने में सक्षम राष्ट्र है। ऑपरेशन सिंदूर इसी रणनीतिक और सांस्कृतिक सोच का परिणाम है। पहलगाम हमला और ऑपरेशन सिंदूर एक नए युग की शुरुआत है। यह युग है आत्मरक्षा के अधिकार के उपयोग का, कूटनीति और शक्ति के संतुलन का, और आतंक पर बिना समझौते की नीति का।

भारत अब केवल प्रतिक्रिया नहीं करता, वह भविष्य की संभावित साजिशों को रोकने के लिए भी तत्पर है। यह संदेश स्पष्ट है- भारत अब हर गोली का जवाब गोली से, और हर आतंकी योजना का जवाब निर्णायक सैन्य रणनीति से देगा। ऑपरेशन सिंदूर जैसे अभियानों ने न केवल पाकिस्तान को चेतावनी दी है, बल्कि भारतीय नागरिकों के मन में विश्वास भी जगाया है कि उनका देश अब चुप नहीं बैठेगा। पहलगाम के निर्दोषों की हत्या ने भारत को झकझोर कर रख दिया, लेकिन उसी आघात ने ऑपरेशन सिंदूर जैसी सटीक और निर्णायक प्रतिक्रिया को जन्म दिया। यह केवल सैन्य कार्रवाई नहीं, बल्कि भारत की रणनीतिक चेतना, राष्ट्रीय संप्रभुता और नागरिक सुरक्षा का प्रतीक है। अब आतंकवाद को किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

चोखे रंग की तलाश

जो गरिमा शब्द सेवानिवृत्ति में है, वह भला रिटायर कर देने या छुटकारा पा लेने में कहां? इसीलिए बड़े बूढ़े फरमा गए हैं, कि बेटा किसी को जहर भी देना हो तो मीठी गिल्लौरी में डाल कर देना, वह मजे से निगल जाएगा और रुखसत होते हुए उसके स्वाद की तारीफ भी कर देगा। अभी पिछले दिनों ऐसी ही एक वाहवाही इस आदेश ने लूट ली। बेकारी की समस्या की भीषणता से पूरा देश दो-चार हो रहा है। जनाब, लोगों ने अपने बच्चे कालेजों में पढ़ाने बंद कर दिए हैं और पढ़ाने के नाम पर आईलैट्स अकादमियों में डाल दिए हैं, कि वहां औपचारिक ग्रेड प्राप्त करने के बाद छोकरे विदेश निकल जाएं। सुना तो है सबने कि विदेशों में सोना बरसता है। छोकरा, छोकरी वहां मेहनत मजदूरी पा जाएंगे, तो इस देश के खिलंदड़ेपन और लक्ष्यहीन आवारगी से छुटकारा नहीं, निवृत्ति होगी। भारतीय रुपए के गिरते मूल्य की इतनी कृपा है कि अमरीका, इंग्लैंड में कमाया गया डालर या पाऊंड भारत में आ कर सत्तर से सौ गुणा कीमती हो जाता है। इंग्लैंड और अमरीका गया हमारा कामगार भारत का दौरा करता है तो उसकी परायी मुद्रा अपनी धरा की भारतीय मुद्रा में सत्तर से सौ गुणा हो जाती है। अमरीका का आम फहम भारत का लखपति, करोड़पति बन जाता है। यही तो भेद है कि आज के मसफूटते नौजवानों ने औपचारिक पारंपरिक शिक्षा से छुटकारा नहीं, निवृत्ति कहो, पा आईलैट्स का दामन थामा। एक विदेश की धरती की टिकट लगा गया। शेष बचे कतार में खड़े हैं। कहां कतार तो लगनी चाहिए थी, डिजिटल भारत, इंटरनैट भारत बनाने के लिए, नई शिक्षा प्रणाली के विद्या मंदिरों के बाहर, और कहां आजकल यह कतार लग रही है, वैध-अवैध मंत्र पढ़ कर देश की नई पीढ़ी को विदेशी धरती तक पहुंचाने के लिए? देश की अकादमियों में उचित ग्रेड दिलवाने के ठेके लग गए। शर्तिया विदेश पहुंचा देने के दाम घोषित हो गए। शिक्षा के नवीनीकरण के नाम पर उसका चेहरा ही बदल गया।

शायद साम, दाम, दंड, भेद का सिलेबस बन गया है कि आप का बच्चा सात समुद्र पार करवा दिया जाएगा। बस, फीस अग्रिम जमा करवा दीजिए। साब, ऊपर से नीचे तक रास्ता पार करवाने वालों की हथेलियां चुपडनी पड़ती हैं। तब पार पत्रों का रास्ता हमवार होता है। यह रास्ता बनाने में पूरा परिवार जुटा है। अभी तक सभी यहां बैठे मनरेगा के आसरे जीने की बाट जोह रहे थे। घर का एक भी बशर किसी चोर दरवाजे से निकल गया, तो बाद में 'बरसों से बैठा ठाला शेष' परिवार इसे मुख्य द्वार बना इस धरती से उड़ान भर सकेगा। उनकी धरती पर उतर जाएगा। महोदय, हर युग का अपना-अपना प्रिय उद्योग होता है। इन दिनों यह उद्योग बना है देश की नई पीढ़ी को विदेश का रास्ता दिखाने का। ज्यों-ज्यों यह रास्ता खुल रहा है, त्यों-त्यों लगता है मुंबई का विरार का इलाका और दूसरे महानगरों के पिछवाड़े या भूख से सूखती हुई अंधेरी गलियां विदेश प्रयाण का रास्ता तलाश रही हैं। गांव के गांव खाली हो गए। युवक गए और पीछे रह गए गांवों के बड़े बूढ़े। इन युवकों के लिए क्या कहें? उन्होंने तो इस देश के अंधकूप से निवृत्ति पाई और पीछे छोड़ गए निस्तेज लोगों के लिए अपने साथ आ बसने का मुक्ति मार्ग। इसे इस धरती से छुटकारा पाना या पलायनवाद की मानसिकता न कहना, क्योंकि ऐसे कटु शब्दों में अपने देश की अपंगता को नंगा कर देना शालीनता नहीं। अब जब हमें विदेश या शालीन देशों में खिसक ही जाना है, तो वहां की दोहरी जुबान और दोहरी मानसिकता को जीने का अंदाज भी सीख लेना चाहिए। अभी देखो न, दूसरी बानगी आजकल की इन चुनाव पटाऊ संध्याओं में भी मिलने लगी। अभी देश में इंटरनेट क्रांति हुई है। इसे कामयाब करने के लिए नौजवानों की भारी संख्या दरकार है, लेकिन दिक्कत यह है कि ये लोग डिजिटल काम सीखे नहीं। इसलिए फिलहाल ये लोग पकौड़े बेच सकते हैं।

-सुरेश सेठ

बेमानी है सुरक्षा परिषद

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद से भी पाकिस्तान खाली हाथ लौटा। वह यह राहत महसूस कर रहा होगा कि सुरक्षा परिषद में उसके खिलाफ न तो बयान जारी किया गया और न ही कोई प्रस्ताव पारित किया गया। यह तसल्ली होगी कि कश्मीर का मुद्दा आज भी जिंदा है और उसका अंतरराष्ट्रीयकरण किया जा सकता है। पाकिस्तान के आग्रह पर ही सुरक्षा परिषद के मई महीने के अध्यक्ष यूनान ने बैठक जरूर बुलाई और वह भी बंद कमरे में आयोजित की गई, लेकिन सारांशतः वह बैठक बेमानी ही रही। सुरक्षा परिषद की ओर से न तो कोई बयान जारी किया गया और न ही कोई प्रस्ताव पारित किया गया। पाकिस्तान भी 15 सदस्यीय शक्तिशाली सुरक्षा परिषद का अस्थायी सदस्य है। उसी लिहाज से भारत-पाक के तनाव और युद्ध सरीखे हालात के मद्देनजर बैठक बुलाई गई। पाकिस्तान से सख्त सवाल भी किए गए। उसके 'आतंकवादी चरित्र' पर सवालों के साथ टिप्पणियां भी की गईं। यहां तक कहा गया कि पाकिस्तान ने युद्ध के हालात पैदा किए हैं। उसके मंत्रियों और फौजी जनरलों ने परमाणु हथियारों के इस्तेमाल की बार-बार धमकियां भी दीं। पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय परमाणु नियंत्रण नियमों से बंधा और प्रतिबद्ध है। तनाव की स्थितियों में ही पाकिस्तान ने दो मिसाइलों का परीक्षण कर युद्ध को भडक़ाने का काम किया है। धार्मिक आस्था के आधार पर पहलगाम नरसंहार की निंदा तो की गई, चिंता भी जताई गई, लेकिन पाकिस्तान और लश्कर-ए-तैयबा जैसे आतंकी संगठनों के अंतर्संबंधों पर सवाल पूछने के अलावा कुछ ठोस नहीं किया गया। यह सुरक्षा परिषद की गरिमा, शक्ति, विश्वसनीयता पर ही सवाल है कि संयुक्त राष्ट्र का औचित्य ही क्या है? सुरक्षा परिषद में महाशक्तियां भी मौजूद थीं।

उनमें से 13 देशों ने भारत की 'आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई' का भरपूर समर्थन किया है, लेकिन वे भारत की विनम्रता, शांतिप्रियता, क्षेत्रीय स्थिरता की दलीलें देते रहे। आतंकियों ने कश्मीर के पहलगाम में 28 मासूम और बेकसूर सैलानियों का कत्लेआम कर दिया, उस पर पाकिस्तान और आतंकी संगठनों की जवाबदेही तय करने का निर्णय नहीं लिया गया। आखिर भारत कब तक ऐसे वहशियाना हमले स्वीकार और झेलता रहेगा? बैठक में उपदेश दिए जाते रहे कि भारत युद्ध न करे। संयुक्त राष्ट्र के महासचिव गुटेरस ने कहा कि भारत-पाक का टकराव 'आउट ऑफ कंट्रोल' हो सकता है। दोनों देश संयम बरतें और आपस में विवादों को सुलझाएं। गुटेरस की मध्यस्थता की पेशकश किसी भी देश ने स्वीकार नहीं की, लिहाजा उस पर भी कोई प्रस्ताव पारित नहीं किया जा सका। यकीनन भारत और पाकिस्तान में युद्ध के बादल मंडरा रहे हैं। भारत ने कूटनीतिक, आर्थिक, समुद्री बंदरगाह संबंधी और सिंधु जल संधि के प्रतिबंध पाकिस्तान पर थोपे हैं, उसके बावजूद लड़ाकू विमानों की गर्जनाएं सुनाई दे रही हैं और 244 जिलों में 'मॉक ड्रिल' के जरिए आम नागरिक को युद्ध के दौरान सुरक्षा के सबक सिखाए गए हैं। सवाल है कि सुरक्षा परिषद के सभी सदस्य-देश जानते हैं कि पाकिस्तान आतंकवाद का 'छाया-युद्ध' बीते 30-35 सालों से भारत में जारी रखे है, लेकिन सुरक्षा परिषद बेजुबां और बेनतीजा रही है। क्या उसे बेमानी मान लिया जाए? युद्धों के कई उदाहरण हमारे सामने हैं। विध्वंस जारी हैं, मानवता के कत्लेआम किए जा रहे हैं, असंख्य लोग विस्थापित होकर शरणार्थी बन चुके हैं, भुखमरी के चौतरफा हालात हैं, लेकिन सुरक्षा परिषद कोई प्रभावशाली भूमिका नहीं निभा सकी है। अब भारत-पाक का तनाव सामने है। अब महाशक्तियों को सीमापार युद्ध को मान्यता देनी चाहिए। पाकिस्तान को जिम्मेदार और जवाबदेह करार दें और उस पर व्यापक आर्थिक प्रतिबंध लगाए जाएं। पाकिस्तान को एक 'गैर-जिम्मेदार देश' घोषित किया जाए। यह भी स्वीकार किया जाए कि उसकी फौज आतंकवाद का सहारा लेती है।

पहलगाम के आंसू और सिंदूर की ज्वाला

पहलगाम के आघात ने ऑपरेशन सिंदूर जैसी सटीक और निर्णायक प्रतिक्रिया को जन्म दिया'

22 अप्रैल 2025 को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुआ हमला भारत-पाकिस्तान संबंधों में एक नए और भयावह मोड़ का प्रतीक बन गया। इस निर्मम घटना में 26 निर्दोष पर्यटकों की जान गई, जिन्हें केवल उनके धर्म के आधार पर चुन-चुनकर मारा गया। आतंकियों ने पहले लोगों से उनका धर्म पूछा और जो लोग मुस्लिम धर्म की कलमा पढने या अन्य धार्मिक गतिविधियां निभाने में असमर्थ पाए गए, उन्हें बेरहमी से गोली मार दी गई। यह हमला न सिर्फ एक आतंकवादी कार्रवाई थी, बल्कि भारत की धर्मनिरपेक्ष अस्मिता पर किया गया सीधा हमला था। आतंकवाद अब केवल राजनीतिक या सामरिक मुद्दा नहीं रहा, बल्कि वह धार्मिक कट्टरता और मानवता के मूल्यों के पूर्ण पतन का रूप ले चुका है। इस हमले ने न केवल देश को आक्रोशित किया, बल्कि यह भी सिद्ध कर दिया कि पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद अब इतनी गहराई तक जा चुका है कि वह निर्दोष नागरिकों की धार्मिक पहचान को निशाना बनाकर समाज में भय और नफरत फैलाना चाहता है। भारत ने इस हमले को अपनी संप्रभुता और सामाजिक एकता के खिलाफ माना और इसके बाद लिए गए निर्णयों ने यह स्पष्ट कर दिया कि अब हर हमले का जवाब निर्णायक और नीतिगत तरीके से दिया जाएगा। भारत सरकार ने तीव्र प्रतिक्रिया देते हुए सैन्य स्तर पर एक व्यापक कार्रवाई की योजना बनाई। इस सटीक और गोपनीय सैन्य कार्रवाई को नाम दिया गया- ऑपरेशन सिंदूर। यह नाम प्रतीक था भारत की सांस्कृतिक विरासत का, जिसमें सिंदूर शक्ति, सम्मान और संरक्षण का प्रतीक है। ऑपरेशन सिंदूर न केवल आतंक के विरुद्ध सर्जिकल कार्रवाई थी, बल्कि यह उन निर्दोष नागरिकों को सच्ची श्रद्धांजलि भी थी, जिन्होंने पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद की बलि चढक़र अपना जीवन खोया।

7 मई 2025 की सुबह जब देशवासी अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में व्यस्त थे, मीडिया प्लेटफॉर्म पर भारत के मिशन सिंदूर की खबरों ने भारत के जनमानस का सीना चौड़ा कर दिया। भारतीय सेना, वायुसेना और नौसेना की संयुक्त रणनीति ने 6 मई 2025 रात्रि को पाकिस्तान के भीतर 9 प्रमुख आतंकवादी ठिकानों पर जोरदार हमला कर दिया। यह हमले न केवल लाइन ऑफ कंट्रोल के पास स्थित आतंकी लॉन्चपैड्स पर किए गए, बल्कि पाकिस्तान के भीतरी हिस्सों में भी उन ठिकानों को टारगेट किया गया, जो लंबे समय से आतंक की

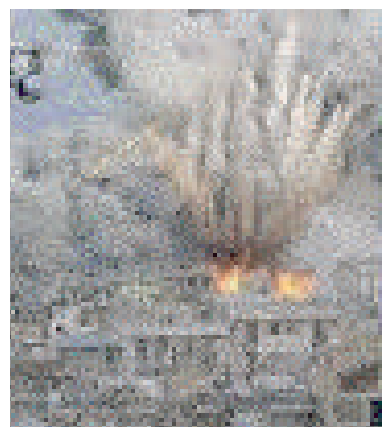

फैक्टरी बने हुए थे। ऑपरेशन सिंदूर के तहत जिन 9 ठिकानों पर सर्जिकल स्ट्राइक की गई, वे थे : बहावलपुर-जैश-ए-मोहम्मद का मुख्यालय। मुरीदके : लश्कर-ए-तैयबा का आधार स्थल, जो 2008 मुंबई हमले से जुड़ा रहा है। गुलपुर-नियंत्रण रेखा के पास स्थित वह अड्डा, जहां से 2023-24 के हमलों की योजना बनी। सावाई-जहां से तीर्थयात्रियों पर हमलों की साजिश रची गई। बिलाल- जैश का प्रमुख लॉन्चपैड। कोटली – हिज्बुल मुजाहिदीन की उपस्थिति वाला अड्डा। बरनाला, सरजाला और महसुन्ता – आतंकी ट्रेनिंग और लॉन्चिंग सेंटर। इन हमलों में अत्याधुनिक तकनीक का प्रयोग किया गया। दूरवर्ती स्थानों को मिसाइलों और ड्रोन हमलों द्वारा ध्वस्त किया गया। खास बात यह रही कि इस पूरे ऑपरेशन में भारतीय पक्ष को कोई नुकसान नहीं हुआ, और सभी सैनिक सुरक्षित वापस लौटे।

भारतीय सेना आज विश्व की सबसे शक्तिशाली और संगठित सेनाओं में से एक मानी जाती है। इसकी ताकत न केवल इसके अत्याधुनिक हथियारों, तकनीकी क्षमताओं और रणनीतिक कौशल में निहित है, बल्कि उस अडिग संकल्प में भी छुपी है जो हर भारतीय सैनिक की रगों में बहता है। भारत की सुरक्षा, संप्रभुता और जनमानस की एकता पर यदि कोई खतरा मंडराता है, तो भारतीय सेना उसका जवाब शौर्य और संयम के अद्भुत संतुलन के साथ देती है। वर्ष 2014 के बाद देश ने ऐसे कई उदाहरण देखे हैं, चाहे वह उरी हमले के बाद की सर्जिकल स्ट्राइक हो, पुलवामा के बाद बालाकोट एयरस्ट्राइक या हाल ही में पहलगाम हमले के पश्चात ऑपरेशन सिंदूर, हर बार भारतीय सेना ने यह सिद्ध किया है कि भारत अब केवल सहन नहीं करेगा, बल्कि हर आघात का उत्तर निर्णायक रूप से देगा। वर्ष 1947 का भारत-पाक विभाजन केवल दो राष्ट्रों का निर्माण नहीं था, बल्कि वह एक ऐसी घटना थी जिसने उपमहाद्वीप को खून से रंग दिया। पाकिस्तान ने अपने निर्माण के तुरंत बाद ही भारत विरोधी गतिविधियां शुरू कर दीं। 1947, 1965 और 1971 में उसने सीधे युद्ध छेड़े। 1999 में कारगिल में तो उसने गुपचुप तरीके से घुसपैठ कर युद्ध का षड्यंत्र रचा, जिसे भारतीय सेना ने मुंहतोड़ जवाब दिया। इन सभी युद्धों में भारत ने विजय प्राप्त की, परंतु हर बार भारत ने युद्ध के बजाय शांति की पहल की। लेकिन पाकिस्तान ने इस सद्भावना का बदला आतंकवाद से दिया। उसकी सेना और आईएसआई लगातार जैश-ए-मोहम्मद, लश्कर-ए-तैयबा और हिज्बुल जैसे संगठनों को पैसा, प्रशिक्षण और संरक्षण देती रही। मुंबई हमले, उरी हमला, पुलवामा विस्फोट और अब पहलगाम कांड, हर घटना में पाकिस्तान की भूमिका उजागर होती रही है। भारत एक शांति प्रिय राष्ट्र है, लेकिन जब देश की संप्रभुता, नागरिकों की सुरक्षा और मानवता पर आघात होता है, तब भारत यह भी दिखाता है कि वह केवल सहनशील ही नहीं, बल्कि निर्णायक कार्रवाई करने में सक्षम राष्ट्र है। ऑपरेशन सिंदूर इसी रणनीतिक और सांस्कृतिक सोच का परिणाम है। पहलगाम हमला और ऑपरेशन सिंदूर एक नए युग की शुरुआत है। यह युग है आत्मरक्षा के अधिकार के उपयोग का, कूटनीति और शक्ति के संतुलन का, और आतंक पर बिना समझौते की नीति का।

भारत अब केवल प्रतिक्रिया नहीं करता, वह भविष्य की संभावित साजिशों को रोकने के लिए भी तत्पर है। यह संदेश स्पष्ट है- भारत अब हर गोली का जवाब गोली से, और हर आतंकी योजना का जवाब निर्णायक सैन्य रणनीति से देगा। ऑपरेशन सिंदूर जैसे अभियानों ने न केवल पाकिस्तान को चेतावनी दी है, बल्कि भारतीय नागरिकों के मन में विश्वास भी जगाया है कि उनका देश अब चुप नहीं बैठेगा। पहलगाम के निर्दोषों की हत्या ने भारत को झकझोर कर रख दिया, लेकिन उसी आघात ने ऑपरेशन सिंदूर जैसी सटीक और निर्णायक प्रतिक्रिया को जन्म दिया। यह केवल सैन्य कार्रवाई नहीं, बल्कि भारत की रणनीतिक चेतना, राष्ट्रीय संप्रभुता और नागरिक सुरक्षा का प्रतीक है। अब आतंकवाद को किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

कर्म सिंह ठाकुर

लाहौर पर भारत का जबरदस्त हमला, दागी कई मिसाइलें; पाकिस्तान का एयर डिफेंस सिस्टम तबाह

पाकिस्तान ने बुधवार रात देश के कई राज्यों पर मिसाइल और ड्रोन से हमले किए। भारतीय एयर डिफेंस ने सभी मिसाइल और ड्रोन को धवस्त कर दिया है। इसी बीच भारत ने जवाबी हमला करते हुए पाकिस्तान पर कई मिसाइलें दाग दी है। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने अमेरिकी विदेश सचिव मार्को रुबियो से बातचीत की।

नई दिल्ली। पाकिस्तान ने बुधवार रात देश के कई राज्यों पर मिसाइल और ड्रोन से हमले किए। भारतीय एयर डिफेंस ने सभी मिसाइल और ड्रोन को धवस्त कर दिया है।

पाकिस्तान के नापाक हमलों का भारत जबरदस्त जवाब (India Attacks On Pakistan) दे रहा है। भारत ने लाहौर पर कई मिसाइलें दागी। वहीं, पाकिस्तान का एयर डिफेंस सिस्टम तबाह हो चुका है। लाहौर में वायु रक्षा प्रणाली को भारत ने तबाह कर दिया है।

पाकिस्तान के हर हमलों का भारत करारा जवाब देगा: जयशंकर

इसी बीच भारत ने जवाबी हमला करते हुए पाकिस्तान पर कई मिसाइलें दाग दी है। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने अमेरिकी विदेश सचिव मार्को रुबियो से बातचीत की। विदेश मंत्री जयशंकर ने कहा है कि पाकिस्तान के हर हमलों का भारत करारा जवाब देगा।

पाक के गिराए गए F-16

इस बीच, सूत्रों के हवाले से बताया कि शाम को पाकिस्तान वायु सेना के एक एफ-16 सुपरसोनिक लड़ाकू विमान को भारतीय सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल रक्षा प्रणाली ने मार गिराया। सूत्रों के अनुसार, एफ-16 ने सरगोधा एयर बेस से उड़ान भरी थी और उसके पास ही उसे मार गिराया गया।

जम्मू को निशाना बनाकर पाकिस्तान द्वारा किए गए हवाई हमले को गुरुवार रात भारत की वायु रक्षा प्रणालियों ने सफलतापूर्वक विफल कर दिया।

ड्रोन और मिसाइलों से किए गए हमले के प्रयास ने जम्मू-कश्मीर, पंजाब और राजस्थान के कई इलाकों में ब्लैकआउट और सायरन बजा दिया गया। अधिकारियों ने लोगों से घर के अंदर रहने और सतर्क रहने का आग्रह किया।

सूत्रों के अनुसार, भारतीय वायु रक्षा ने जम्मू हवाई अड्डे के पास लॉन्च किए गए कई ड्रोन को बेअसर कर दिया, जिसमें किसी के हताहत होने की खबर नहीं है।

नीट युजी 2025 में अच्छा प्रदर्शन नहीं किया? यहाँ आप आगे क्या कर सकते हैं

विजय गर्ग

नीट युजी 2025 में अच्छा प्रदर्शन नहीं किया? आशा मत खोना! नीट युजी को फिर से शुरू करने, विदेश में अध्ययन करने, पैरामेडिकल पाठ्यक्रम, स्वास्थ्य सेवा प्रबंधन और वैकल्पिक करियर जैसे स्मार्ट विकल्पों का अन्वेषण करें।

विषयसूची नीट युजी 2025 में अच्छा प्रदर्शन नहीं किया? यहां आप आगे क्या कर सकते हैं: नीट युजी 2025 परीक्षा, 4 मई 2025 को आयोजित की गई, पूरे भारत में लाखों चिकित्सा उम्मीदवारों के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर था। हालांकि, हर किसी ने उस परिणाम को हासिल नहीं किया होगा जिसका उन्होंने सपना देखा था। अगर आपको लगता है कि आपने नीट युजी 2025 में अच्छा प्रदर्शन नहीं किया है, तो हिम्मत न हारें। आपकी यात्रा यहां समाप्त नहीं होती है - यह बस आपके लिए नए दरवाजे खोलता है।

इस लेख में, हम उन छात्रों के लिए उपलब्ध स्मार्ट, व्यावहारिक विकल्पों का पता लगाते हैं जो अपने नीट युजी 2025 परिणामों से निराश हैं। चाहे आप स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में जारी रखना चाहते हों या नए अवसरों का पता लगाना चाहते हों, यह मार्गदर्शिका आपको एक सूचित निर्णय लेने में मदद करेगी।

स्थिति को समझना कोई भी निर्णय लेने से पहले, इसे रोकना, प्रतिबिंबित करना और आकलन करना महत्वपूर्ण है:

यह क्यों मायने रखता है, इस पर विचार करने के लिए कारक एक मामूली या प्रमुख अंतर को समझें कि आपने कटऑफ को कितना याद किया दवा के लिए आपका जुनून क्षेत्र में आपकी वास्तविक रुचि की पुष्टि करता है वित्तीय और भावनात्मक तत्परता मूल्यांकन करें यदि आप किसी अन्य प्रयास के लिए तैयार हैं वैकल्पिक कैरियर के हित यदि आवश्यक हो तो विभिन्न कैरियर पथ का अन्वेषण करें अपनी स्थिति का ईमानदारी से मूल्यांकन करने के लिए समय निकालने से आपको सबसे अच्छा विकल्प आगे बढ़ने में मदद मिलेगी।

1. । नीट 2026 को फिर से प्रयास करें यदि दवा आपका अंतिम लक्ष्य है, तो नीट को 2026 में एक और शॉट देना सही विकल्प हो सकता है।

कई सफल डॉक्टरों ने अपने पहले प्रयास में नीट को स्पष्ट नहीं किया।

नीट युजी 2026 की तैयारी के लिए कदम: गलतियों का विश्लेषण करें: उन विषयों को पहचानें जहां आपने अंक खो दिए हैं। एक अध्ययन योजना बनाएं: कमजोर क्षेत्रों पर अधिक ध्यान दें। एक अच्छे कोचिंग संस्थान में शामिल हों: एक संरचित दृष्टिकोण आपके अवसरों को बढ़ा सकता है। मॉक टेस्ट का अभ्यास करें: परीक्षा जैसी स्थितियों का अक्सर अनुकरण करें। पेशेवरों विपक्ष मजबूत तैयारी एक और साल की तैयारी की जरूरत है भावनात्मक और वित्तीय दबाव के चयन की उच्च संभावना सुझाव: यदि आप निर्धारित हैं, तो एक और केंद्रित वर्ष वास्तव में आपके जीवन को बदल सकता है।

2. । एलाइड मेडिकल कोर्स यदि आप अभी भी डॉक्टर बनने के बिना स्वास्थ्य सेवा में काम करना चाहते हैं, तो उत्कृष्ट वैकल्पिक चिकित्सा पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं:

कोर्स का नाम अवधि कैरियर विकल्प बीएससी नर्सिंग 4 साल की नर्स, अस्पताल प्रशासन बीएससी रेडियोलॉजी 3-4 वर्ष रेडियोलॉजिस्ट सहायक बीएससी बायोटेक्नोलॉजी 3 साल बायोटेक रिसर्च, फार्मा बीएससी फिजियोथेरेपी 4.5 साल फिजियोथेरेपिस्ट बीएससी मेडिकल लैब टेक्नोलॉजी 3-4 साल लैब टेक्नीशियन व्यावसायिक चिकित्सा के स्नातक 4-5 वर्ष व्यावसायिक चिकित्सक इन क्षेत्रों का बहुत सम्मान किया जाता है और अस्पतालों और निजी स्वास्थ्य संस्थानों में अच्छे वेतन और स्थिर करियर की पेशकश की जाती है।

डेटा वैज्ञानिक सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ शिक्षकों सफलता न केवल डॉक्टर बनने से कई रूपों में आती है।

प्रेरणा के अंतिम शब्द अपनी नीट युजी अपेक्षाओं को पूरा करने में विफल रहने से आपकी क्षमता परिभाषित नहीं होती है। कई सफल लोगों को महानता प्राप्त करने से पहले अस्वीकृति का सामना करना पड़ा। महत्वपूर्ण बात यह है कि सकारात्मक रहें, अपने विकल्पों का बुद्धिमानी से पता लगाएं, और आगे बढ़ते रहें।

यदि आपको दवा का जुनून है, तो होशियार से लड़ें। यदि आप नए हितों की खोज करते हैं, तो उन्हें आत्मविश्वास से गले लगाएं।

किसी भी तरह से, आपका भविष्य उज्ज्वल है!

निष्कर्ष नीट 2025 में विफलता अंत नहीं है: यह एक महत्वपूर्ण मोड़ है। आश्वस्त रहें, स्मार्ट तरीके से योजना बनाएं और कड़ी मेहनत करते रहें। आपके सपने अभी भी पहुंच के भीतर हैं। आपके पास आपके लिए कई दरवाजे खुले हैं - वह चुनें जो आपके जुनून और भविष्य के लक्ष्यों के साथ संरेखित हो!

सरसंघचालक की पहल से बदल सकती है जातिवाद की तस्वीर

योगेंद्र योगी

राजनीतिक सिद्धि के बावजूद यह प्रयास सकारात्मक ही माना जाएगा। भाजपा ने केंद्र में लगातार तीसरी बार सरकार बना कर यह साबित किया भी किया है वोट बैंक की मौजूदा जातिवाद की राजनीति के बावजूद विकास की बुनियाद पर सत्ता प्राप्त की जा सकती है।

राजनीतिक उद्देश्य के निहितार्थ ही सही राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आरएसएस) ने अगड़े, पिछड़े और अंतरजातीय विवाह की शुरुआत करा कर देश में जातिवाद के दुष्चक्र को तोडने की दिशा में एक सकारात्मक पहल की है। देश की तरक्की और एकता-अखंडता का अक्षुण रखने में समाज का जाति और उपजातियों में बंटा होना प्रमुख बाधा है। सदियों से चली आ रही जातिवाद की जड़े इतनी गहरी हैं कि इसको समूल उखाड़ कर देश का नवनिर्माण करना किसी दुष्कर चुनौती से कम नहीं है। सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने वाराणसी में पिता बनकर 125 लड़कियों का कन्यादान किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि विवाह समाज निर्माण का आधार है। इस भव्य समारोह में सवर्ण, दलित और पिछड़े समाज के 125 जोड़ों का सामूहिक विवाह वैदिक रीति-रिवाजों के साथ संपन्न हुआ। इससे पहले भावगत और संघ परिवार कई बार हिन्दुओं की एकता की दुहाई दे चुके हैं। इस एकता में सबसे बड़ी बाधा जातिवाद है। आरएसएस की समझाइश के बावजूद जातिवाद का असर कम नहीं हुआ। इसके लिए सामूहिक विवाह की शुरुआत करा कर पहल की गई। जातिवाद तोडने की दिशा में यह महज एक कदम है, जबकि फासला सैकड़ों मील का है। यह संभव है कि आरएसएस आगे भी इसी तरह की पहल को जारी रखे। एक-एक कदम बढ़ा कर ही शायद एक दिन बगैर जाति के राष्ट्रवाद का सपना साकार हो सके। इसमें अभी भी बाधाओं की कमी नहीं है। ऐसा नहीं है कि आरएसएस और भाजपा का इसमें कोई छिपा हुआ राजनीतिक एजेंडा नहीं है।

राजनीतिक सिद्धि के बावजूद यह प्रयास सकारात्मक ही माना जाएगा। भाजपा ने केंद्र में लगातार तीसरी बार सरकार बना कर यह साबित किया भी किया है वोट बैंक की मौजूदा जातिवाद की राजनीति के बावजूद विकास की बुनियाद पर सत्ता प्राप्त की जा सकती है। इसका बड़ा उदाहरण राज्यों में मुख्यमंत्रियों के चयन में भी देखने को मिला। इससे पहले भाजपा भी अन्य राजनीतिक दलों की तरह राज्यों में बड़े नेताओं की बंधक बनी हुई थी। इन नेताओं की उपेक्षा करके चुनाव जीतना और किसी और को मुख्यमंत्री बनाना संभव नहीं था, किन्तु भाजपा ने यह भ्रम तोड़ दिया। इसके साथ जाति आधारित नेताओं के पार्टी को ब्लेकमेल किए जाने की परंपरा को भी पछाड़ दिया। हालांकि दूसरे राजनीतिक दलों में ऐसा करने का साहस अभी तक नहीं है, विपक्षी दलों में इसकी छटपटाहट जरूर नजर आती है।

अंतरजातीय विवाह करने पर अक्सर जातिवाद का कहर न सिर्फ नवविवाहितों को बल्कि उनके पूरे परिवार तक को झेलना पड़ता है। भारत के उत्तरी राज्यों जैसे पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में ऑनर किलिंग आम हैं। भारत में ऑनर किलिंग तब होती है जब कोई जोड़ा अपनी जाति या धर्म के बाहर शादी करता है। करनाल की एक सत्र अदालत ने खाप पंचायत के आदेश के विरुद्ध विवाह करने वाले एक युवा जोड़े की हत्या के लिए पांच लोगों को पहली बार मृत्युदंड की सजा सुनाई। इसने खाप पंचायत के एक सदस्य को आजीवन कारावास की सजा सुनाई, जिसने विवाह को अवैध घोषित कर दिया था और हत्या के समय वह मौजूद था।

सर्वोच्च न्यायालय ने केंद्र और आठ राज्यों को नोटिस जारी कर ऑनर किलिंग को रोकने के लिए उठाए गए कदमों के बारे में जानकारी मांगी। सरकार ने सतर्कतापूर्ण रुख अपनाते हुए भारतीय दंड संहिता में संशोधन करने और खाप पंचायतों

(जाति आधारित संविधानेतर निकाय) पर लगाम लगाने के पूर्व कानून मंत्री एम. वीरप्पा मोइली के प्रस्ताव को खारिज कर दिया था। हालांकि, इसने राज्यों से परामर्श करने और एक विशेष कानून बनाने की गुंजाइश पर विचार करने के लिए मंत्रियों के एक समूह का गठन करने का फैसला किया, जो ऑनर किलिंग को एक सामाजिक बुराई के रूप में मानेगा। प्रस्तावित ऑनर किलिंग कानून को लेकर विशेषज्ञों में मतभेद है। कुछ विशेषज्ञों का तर्क है कि अगर सही तरीके से लागू किया जाए तो मौजूदा कानून ऑनर किलिंग को रोकने के लिए पर्याप्त हैं, जबकि अन्य का मानना है कि ऑनर किलिंग की समस्या से निपटने के लिए अधिक सख्त और विशिष्ट प्रावधानों की आवश्यकता है। भारत में 2019 और 2020 में ऑनर किलिंग की संख्या 25-25 थी और 2021 में 33 थी।

दलित ह्यूमन राइट्स डिफेंडर्स नेटवर्क (डीएचआरडीनेट) द्वारा नेशनल काउंसिल फॉर विमेन लीडर्स (एनसीडब्ल्यू) के सहयोग से प्रकाशित एक रिपोर्ट में सात राज्यों- हरियाणा, गुजरात, बिहार, राजस्थान, तमिलनाडु, महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश- में जाति आधारित ऑनर किलिंग की तस्वीर सामने रखी थी। रिपोर्ट में 2012 से 2021 के बीच के 24 मामलों पर नजर डाली गई है और लगभग सभी मामलों में पीड़ितों/सर्वाइवर्स को रिश्ते या शादी का विरोध करने वाले परिजनों के हाथों अत्यधिक हिंसा का सामना करना पड़ा। रिपोर्ट में पाया गया कि कई मामलों में केवल एक व्यक्ति पर ही नहीं, बल्कि उसके परिवार के सदस्यों पर भी हमला किया गया। हरियाणा के एक मामले में अनुसूचित जाति से ताल्लुक रखने वाले एक पूरे परिवार की बेरहमी से हत्या कर दी गई थी। इसमें तमिलनाडु में एक अन्य मामले में एक जोड़ा ऐसा था, जो अंतरजातीय संबंध में था और साथ घर छोड़कर कहीं जाकर छिप गया था। चूंकि वे मिले नहीं, इसलिए लड़की के परिवार वालों ने बदला लेने के लिए लड़के की बहन का अपहरण कर उसकी हत्या कर दी। इस मामले में पुरुष अनुसूचित जाति से और महिला थेवर जाति की थी। भारत में सम्मान आधारित अपराधों के लिए कोई विशेष कानून नहीं है। इन मामलों की आईपीसी के मौजूदा प्रावधानों के तहत जांच की जाती है, और जब पीड़ित अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति समुदाय से ताल्लुक रखता है तो एससी/एसटी (अत्याचार निवारण) अधिनियम लागू होता है।

वर्ष 2012 में भारत के विधि आयोग ने सिफारिश की थी कि विशेष रूप से 'ऑनर क्राइम' के लिए एक अलग कानून बनाया जाए। रिपोर्ट के हिस्से के तौर पर एक विधेयक ड्राफ्ट भी किया गया और उसमें किसी जोड़े को डराने-धमकाने के अपराधीकरण समेत विशिष्ट कानूनी कार्रवाई प्रस्तावित की गई थी। हालांकि, 'किसी भी सांसद ने इस बिल को संसद में पेश नहीं किया।' रिपोर्ट बताती है कि विधि आयोग के किए कार्य को ठंडे बस्ते में डाल दिया गया। वर्ष 2018 में, शक्ति वाहिनी बनाम भारत सरकार के मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने ऑनर किलिंग को एक गंभीर मुद्दे के रूप में मान्यता दी और ऑनर क्राइम की रोकथाम के लिए राज्य एवं पुलिस प्रशासन की जवाबदेही और जिम्मेदारी तय की। इस खतरे से निपटने के लिए अब तक कुछ गंभीरता दिखाने वाला एकमात्र राज्य राजस्थान है। वर्ष 2019 में राजस्थान ने 2012 के विधि आयोग की रिपोर्ट पर आधारित एक विधेयक विधानसभा में पेश किया। इसे अगस्त 2019 में राजस्थान विधानसभा में पारित किया गया था। हालांकि, यह कानून नहीं बन पाया है क्योंकि इस पर राज्यपाल द्वारा हस्ताक्षर नहीं किए। जाति आधारित ऐसे सामाजिक बुराईयों से दो तरफा तरीकों से निपटना होगा। कानून में सुरक्षा की गारंटी के साथ अतंरजातीय विवाह संबंधों को प्रोत्साहित करने से देश की तस्वीर बदल सकती है।

(इस लेख में लेखक के अपने विचार हैं।)

एक था पाकिस्तान: इतिहास के पन्नों में सिमटता सच

सिंदूर की सौगंध: 'एक था पाकिस्तान' की गूंज

एक था पाकिस्तान – ये केवल तीन शब्द नहीं, बल्कि इतिहास की एक गहरी दास्तां है। यह उस विभाजन का प्रतीक है, जिसने दिलों को तोड़ा और घरों को उजाड़ा। लेकिन क्या हमें हमेशा इस नफरत के जाल में फंसे रहना चाहिए? हमें न केवल बाहरी दुश्मनों से, बल्कि अपने भीतर की नफरत से भी लड़ना होगा। तभी एक दिन हम गर्व से कह सकेंगे – हाँ, 'एक था पाकिस्तान', और हम थे, हैं, और रहेंगे – एक, अखंड, अविनाशी भारत।

-प्रियंका सौरभ

'एक था पाकिस्तान' - यह केवल तीन शब्द नहीं हैं, बल्कि यह उन अनगिनत कुर्बानियों, टूटे सपनों और संघर्षों की कहानी है, जो भारतीय सभ्यता के दिल में गहरे तक समाई हुई हैं। जब हम यह वाक्य सुनते हैं, तो न केवल एक भूगोल का जिक्र होता है, बल्कि एक पूरी जड़ें, एक परिवार, एक संस्कृति, और एक सपना जो कभी हमारे अपने हिस्से में था। यह तीन शब्द उस दर्द, उस पीड़ा और उस उम्मीद का प्रतीक हैं जो विभाजन के समय के लाखों नागरिकों के दिलों में जीवित रहे।

विभाजन की पीड़ा और वर्तमान वास्तविकता

1947 का विभाजन महज एक भूगोल का बंटवारा नहीं था। यह दिलों का बिखराव था, यह जड़ों की टूटन थी, यह एक सभ्यता के विनाश का दौर था। उस समय लाखों परिवारों ने अपने घरों को खो दिया, अपने रिश्तों को खो दिया, और अपनी सांस्कृतिक पहचान को भी खो दिया। विभाजन के समय जो नफरत और हिंसा फैली, उसने कई परिवारों को कभी न खत्म होने वाली कड़वाहट दे दी। एक तरफ़ हिंदू और मुस्लिम एक-दूसरे के दोस्त थे, और दूसरी ओर वे अचानक दुश्मन बन गए, सिर्फ़ एक रेखा, एक खींची हुई सीमा, के कारण।

अभी भी, विभाजन के समय की वह दर्दनाक यादें हमारे दिलों में कहीं न कहीं बसी रहती हैं। पाकिस्तान के साथ हमारे रिश्ते कभी भी सामान्य नहीं हो पाए। लेकिन क्या हमें हमेशा के लिए इस विभाजन को अपनी सोच और जीवन का हिस्सा बनाना चाहिए? क्या हम अपनी अगली पीढ़ियों को भी इसी घृणा और नफरत के जाल में फंसा कर रखें? यह विचार हमें बार-बार खुद से पूछने की जरूरत है। नफरत और भेदभाव की दीवारों को गिराना आसान नहीं होता, लेकिन क्या यह संभव नहीं है?

हमारा सपना: एकता और शांति

अगर हमें वास्तव में 'एक था पाकिस्तान' को एक साकार रूप देना है, तो हमे एकता की भावना को और भी मजबूत करना होगा। हमें यह समझना होगा कि शांति और स्थिरता की असली ताकत हमारी एकता में है, न कि हमारे भूतकाल में। हमें यह भी समझना होगा कि पाकिस्तान केवल एक भूगोल का नाम नहीं है, बल्कि यह भी उन दर्दनाक घटनाओं का गवाह है, जो कभी हमारे देश के हिस्से हुआ करती थीं। लेकिन क्या हमें अपने वर्तमान और भविष्य को उसी पुराने दर्द के आधार पर जीते रहना चाहिए? क्या हम हर कदम पर नफरत के जाल में उलझ कर अपनी असली शक्ति को खो देंगे?

यदि हम चाहते हैं कि 'एक था पाकिस्तान' का सपना साकार हो, तो हमें एक ऐसा समाज बनाना होगा जहां हम न केवल अपने सैनिकों की हिफाजत करें, बल्कि अपने भीतर की नफरत को भी कम करें। हमें यह समझने की जरूरत है कि युद्ध और संघर्ष का समाधान नफरत से नहीं हो सकता। यह हमेशा शांतिपूर्ण संवाद और समझ के रास्ते से ही संभव है। क्या हम अपने दिलों में नफरत और द्वेष को जगह देने के बजाय, हर विवाद का हल एकजुटता और समझदारी से नहीं निकाल सकते?

धर्म, जाति और सांस्कृतिक पहचान के मुद्दे

हमारे समाज में विभाजन के बाद भी कई सवाल उठते हैं, जिनका जवाब हमें खोजने की जरूरत है। धर्म, जाति और भाषा के नाम पर हमारी पहचान को कैसे बचाएं? भारत एक बहु-सांस्कृतिक देश है, जहां विभिन्न जातियाँ, धर्म, और भाषाएँ एक साथ रहती हैं। हमें यह समझने की आवश्यकता है कि हम सभी का समृद्ध इतिहास एक समान है, और विभाजन हमें केवल अलग करने का काम करता है। भारत में धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता ने हमेशा हमें अपनी शक्ति और पहचान दी है, और हमें इसे अपनी एकता की नींव के रूप में स्वीकार करना चाहिए।

आंतरिक बंटवारा: हमारे अंदर का पाकिस्तान

यह अत्यंत दुखद है कि हम खुद भी आंतरिक बंटवारे का शिकार हो गए हैं। धर्म, जाति, क्षेत्र और भाषा के नाम पर जिस तरह से हमारे समाज में घृणा और भेदभाव फैल रहा है, वह हमारे सपनों को कमजोर कर रहा है। अगर हमें 'एक था पाकिस्तान' का सपना साकार करना है, तो हमें खुद के भीतर की नफरत और अंधविश्वास को खत्म करना होगा। क्या हम अभी भी धर्म, जाति और क्षेत्र के आधार पर एक दूसरे से नफरत करेंगे? क्या हम अपने समृद्ध इतिहास और संस्कृति को भूलकर केवल असहमति और घृणा की राजनीति करेंगे?

सैनिकों का बलिदान और उनकी भूमिका

हमारे सैनिक हर दिन अपनी जान की बाजी लगाते हैं ताकि हमारे घरों में शांति बनी रहे। जब वे सीमा पर खड़े होते हैं, तो वे केवल एक राष्ट्र की रक्षा नहीं कर रहे होते, बल्कि उनकी बीवी, उनकी माँ, और उनके बच्चे भी उनकी सुरक्षा की कामना करते हैं। हमें यह समझना होगा कि सैनिकों का बलिदान केवल उनका नहीं, बल्कि उनके परिवारों का भी होता है। इन परिवारों का दर्द वही समझ सकता है जो खुद इसे महसूस करता है। जब एक सैनिक अपने घर से निकलता है, तो उसका परिवार जानता है कि वह शायद कभी लौटकर न आए। उनकी वीरता और कड़ी मेहनत के बिना हमारा देश सुरक्षित नहीं रह सकता। हमें उनके बलिदान को सम्मान देना होगा, क्योंकि वे हमारे असली नायक हैं।

हमारी जिम्मेदारी और दायित्व

हमें अपनी अगली पीढ़ी को यह समझाना होगा कि वे नफरत की राजनीति से ऊपर उठकर एकजुट हो। शांति, सद्भाव और एकता में शक्ति है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हमारे बच्चे एक ऐसे समाज में पले-बढ़ें, जो प्रेम, भाईचारे और समझ के सिद्धांतों पर चलता हो। इसके लिए हमें हर स्तर पर जागरूकता फैलानी होगी। सिर्फ सरकारें नहीं, बल्कि नागरिकों को भी इस दिशा में सक्रिय कदम उठाने होंगे। हर व्यक्ति को यह समझना होगा कि वह सिर्फ अपने देश का नागरिक नहीं है, बल्कि वह पूरे समाज की जिम्मेदारी निभा रहा है।

नफरत की दीवारें तोड़ना

आखिरकार, 'एक था पाकिस्तान' का सपना तब पूरा होगा जब हम नफरत की दीवारों को गिरा पाएंगे और समझदारी, भाईचारे और सहयोग की नदियाँ बहा सकेंगे। हमें यह समझने की आवश्यकता है कि कोई भी सरहद हमें अलग नहीं करती। हमारी जड़ें एक हैं, हमारी संस्कृति एक है, और हमारा इतिहास भी एक है। जब हम अपने भीतर के भेदभाव और नफरत को खत्म करेंगे, तभी हम अपने देश को एकजुट कर पाएंगे। हमें यह भी समझना होगा कि पाकिस्तान एक देश नहीं, बल्कि एक भूतकाल है, जिसे हम अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए इतिहास के पन्नों में ही छोड़ सकते हैं।

सिंदूर की सौगंध

आखिर में, सिंदूर की सौगंध एक प्रतीक है - वह प्रतीक जो हमें यह याद दिलाता है कि हम अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए हर कुर्बानी देने को तैयार हैं। यह सिर्फ एक वाक्य नहीं, बल्कि एक वादा है कि हम अपने देश की रक्षा के लिए हर प्रकार का बलिदान देने को तैयार हैं। यही हमारे सैनिकों की वीरता का असली प्रतीक है। यह हमारे दिलों में वह प्रेरणा है, जो हमें कभी भी मुश्किलें आने पर अपने देश के लिए लड़ने की ताकत देती है।

इस सपने को सच करने के लिए हमें न केवल बाहरी दुश्मनों से, बल्कि अपने भीतर की नफरत से भी लड़ना होगा। तभी एक दिन हम गर्व से कह सकेंगे - हाँ, 'एक था पाकिस्तान', और हम थे, हैं, और रहेंगे - एक, अखंड, अविनाशी भारत। हमारा भारत सदियों तक एकजुट और मजबूत रहेगा, जब हम हर मुश्किल के बावजूद अपनी एकता को बनाए रखेंगे। यह हमारा कर्तव्य है, यह हमारी जिम्मेदारी है, और यह हमारे वीर सैनिकों के प्रति हमारा सम्मान है।

9 मई – महाराणा प्रताप की जयंती पर विशेष

महाराणा प्रताप को वंदन...!

मेवाड़ में सिसोदिया राजवंश के राजा को हैं नमन,
देशवासियों के दिलों में महाराणा प्रताप को वंदन।

इतिहास में वीरता, शौर्य, त्याग, पराक्रम व दृढ़ प्रण,
स्वतंत्रता सेनानियों के लिए प्रेरणा स्रोत किया रण।

मुगल बादशाह अकबर की अधीनता नहीं स्वीकार,
स्वाभिमान व साहस ना झुका सका कोई मक्कार।

मेवाड़ में सिसोदिया राजवंश के राजा को हैं नमन,
देशवासियों के दिलों में महाराणा प्रताप को वंदन।

जीवन संघर्ष में साथ चेतक घोड़ा–रामप्रसाद हाथी,
युद्ध के मैदान में पराक्रमी हो खूब साथ दे साथी।

हल्दीघाटी में युद्ध में अकबर और महाराणा प्रताप,
चेतक की स्वामीभक्ति देख मुगल बादशाह संताप।

मेवाड़ में सिसोदिया राजवंश के राजा को हैं नमन,
देशवासियों के दिलों में महाराणा प्रताप को वंदन।

महाराणा प्रताप थे हल्दीघाटी युद्ध के लिए प्रसिद्ध,
22000 सेना ने 2 लाख सैनिकों विरुद्ध लड़ा युद्ध,

प्रताप को घोड़े चेतक व रामप्रसाद से गहरा लगाव,
समय ऐसा भी आया जब बादशाह के उखड़े पाँव।

संजय एम तराणेकर

भारत के जवानों के नाम

धरती पर जिनके पग पड़े, आकाश में जो उड़ते हैं,
वीर सपूत वे हमारे, जीवन से बढ़कर करते हैं।
हर दर्द को अपने सीने में छुपाकर,
देश के लिए अपना हर सपना तोड़ते हैं।

न कोई घर, न कोई सुख, न कोई ख्वाब,
इनकी नींदों में बसा केवल एक लक्ष्य है—
देश की धरती की हिफाज़त करना,
हर युद्ध में अपनी शहादत को स्वीकार करना।

इनकी आँखों में हर सदी की गहरी सच्चाई है,
इनके दिलों में बसी हुई एक अदम्य वीरता है।
सैनिक वो नहीं, जो केवल गहनों से सजे होते हैं,
सैनिक वो हैं, जो पसीने में, लहू में डूबे होते हैं।

घर की चौखट को छोड़कर, ये सीमा पर रहते हैं,
कभी बर्फीले तूफ़ानों में, कभी तपते रेगिस्तानों में,
फिर भी इनकी आत्मा में किसी भी ठंडी रात का डर नहीं,
कभी न थकते, कभी न रुकते, बस हर खतरे को हराते हैं।

इनकी छाती पर जो सितारे हैं,
वो हमारी शान का ऐलान करते हैं।
इनके कदमों में बसी है हमारी आस्था,
इनकी नजरों में हमारी पहचान है।

आओ! हम सब इनकी महिमा गाएं,
हर युद्ध में इनकी जयकार करें।
इनकी शहादत को श्रद्धांजलि अर्पित करें,
और हर कदम पर इनकी वीरता को याद करें।

– डॉ सत्यवान सौरभ

सीमाओं की शेरनियाँ

वे उठीं जब घने अंधेरों से,
ध्वंस की छाया से, मरुस्थल की
लहरों से,
हर कण में थी बिजली की चमक,
हर सांस में था गर्जन का तड़प।

सरहदों की सलाखों पर बसी,
उनकी आँखों में बसी थी ध्रुव तारा की
रोशनी,
उनके कदमों में बंधी थी,
धरती की धड़कन, पर्वतों की
अटलता।

वे बसीं उस कोहरे में,
जहाँ दुश्मन की सांसें कांपें,
जहाँ बारूदी सुरंगें भी बिछ जाएं,
उनके हौसलों के आगे।

रक्त से सींचा है जिन्होंने इतिहास,
वो लहरें बनीं अभेद्य दुर्ग,
नरम दिलों में फौलाद उगा कर,
हर बार खड़ी हैं वे, एक नई परिभाषा।

सीमाओं की शेरनियाँ हैं वे,
धरती की हिम्मत, आसमान की
ऊंचाई,
हर बार लिखेंगी वे नया इतिहास,
जब तक सांस है, जब तक तिरंगा है।

– प्रियंका सौरभ

"सिंदूर तो सिर्फ झांकी है मेहंदी और हल्दी बाकी है"

**

सिर्फ सिंदूर से क्या होगा,
आग अभी सीने में बाकी है।
खून में जो लावा बहता है,
उसमें हल्दी की तासीर बाकी है।

फिर से हवाओं को रुख देना है,
इंकलाब की आंधी बाकी है।
धधकते शोलों में रंग भरना है,
अभी मेहंदी की सरगर्मी बाकी है।

रास्तों पर बिछी हैं दीवारें,
पर हमारे इरादों की ऊँचाई बाकी है।
सिर्फ झांकी दिखी है दुश्मन को,
हमारी असली अंगड़ाई बाकी है।

सिंदूर से कह दो धीरज रखे,

अभी हल्दी का रंग बाकी है।
हम जिंदा हैं तो यह दुनिया है,
हमारे खून में बगावत की रवानी बाकी है।

– डॉ सत्यवान सौरभ

आतंकवाद के विरुद्ध प्रतिशोध और शौर्य का प्रतीक बना 'ऑपरेशन सिंदूर'

योगेश कुमार गोयल

ऑपरेशन सिंदूर यह विश्वास पैदा करता है कि अब भारत किसी भी आतंकी हरकत का जवाब उसी भाषा में देगा और अपने सैनिकों और नागरिकों की शहादत व्यर्थ नहीं जाने देगा। यह संदेश केवल पाकिस्तान के लिए ही नहीं बल्कि उन ताकतों के लिए भी है, जो सीमा पार से भारत के खिलाफ जंग छेड़े हुए हैं।

भारत ने 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए आतंकी हमले का जवाब 15 दिन बाद 'ऑपरेशन सिंदूर' के माध्यम से देकर एक बार फिर यह जता दिया है कि अब वह न तो चुप रहेगा और न ही आतंकी हमलों को बर्दाश्त करेगा। इस हमले में भारत के 26 निर्दोष लोगों की जान गई थी और यह हमला स्पष्ट रूप से पाकिस्तान के आतंकी ठिकानों से ही संचालित किया गया था। इसके सटीक जवाब में भारत ने 7 मई सुबह डेढ़ बजे पाकिस्तान और पाक अधिकृत कश्मीर (पीओके) में आतंकियों के 9 ठिकानों को ध्वस्त करते हुए 'ऑपरेशन सिंदूर' को अंजाम दिया। भारत की यह एक सुनियोजित, सीमित और सटीक सैन्य कार्रवाई थी, जिसका उद्देश्य स्पष्ट था, आतंकवाद को उसी की जमीन पर कुचलना। इस ऑपरेशन को 'सिंदूर' नाम देना भारत की सांस्कृतिक और भावनात्मक सोच को दर्शाता है। 'सिंदूर' एक ओर जहां भारतीय संस्कृति में शक्ति, सौभाग्य और सम्मान का प्रतीक है, वहीं इस संदर्भ में यह उन शहीदों के बलिदान की लालिमा भी है, जिनकी शहादत का बदला लेने के लिए यह कार्रवाई की गई।

ऑपरेशन सिंदूर के जरिये भारत ने स्पष्ट कर दिया है कि यह ऑपरेशन केवल उन आतंकी ढ़ांचों के विरुद्ध था, जो लगातार भारत में घुसपैठ, आत्मघाती हमले और हथियारों की तस्करी को बढ़ावा दे रहे थे। बहावलपुर जैश-ए-मोहम्मद का गढ़ है, वहीं मुजफ्फराबाद और कोटली लश्कर-ए-तैयबा और हिजबुल मुजाहिदीन जैसे संगठनों के लिए लांच पैड के रूप में काम आते हैं। इन स्थानों पर हुए हमलों के माध्यम से भारत ने उन आतंकी गुटों की कमर तोड़ने की कोशिश की है, जो वर्षों से भारत को अस्थिर करने की कोशिश में लगे हुए थे। इस ऑपरेशनके जरिये भारत ने अपने नागरिकों को यह भरोसा भी दिलाया है कि देश की सुरक्षा महज कागजों तक सीमित नहीं है बल्कि उसे धरातल पर भी लागू किया जा रहा है। ऑपरेशन सिंदूर यह विश्वास पैदा करता है कि अब भारत किसी भी आतंकी हरकत का जवाब उसी भाषा में देगा और अपने सैनिकों और नागरिकों की शहादत व्यर्थ नहीं जाने देगा। यह संदेश केवल पाकिस्तान के लिए ही नहीं बल्कि उन ताकतों के लिए भी है, जो सीमा पार से भारत के खिलाफ जंग छेड़े हुए हैं।

भारतीय वायुसेना ने इस ऑपरेशन के तहत अत्याधुनिक मिसाइलों का इस्तेमाल करते हुए बहावलपुर, मुजफ्फराबाद, कोटली, मुरीदके, बाघ और पाकिस्तान के पंजाब प्रांत की कुछ आतंक-प्रवण लोकेशनों पर हमलाकर पूरी दुनिया को यह दिखा दिया है कि आतंकवाद से निपटने के लिए उसे अब किसी की अनुमति की आवश्यकता नहीं है और वह अपने नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए हरसंभव कदम उठाने को तैयार है। इस ऑपरेशन की योजना और क्रियान्वयन अत्यंत गोपनीय और तकनीकी रूप से उन्नत स्तर पर हुई। भारतीय खुफिया एजेंसियों ने 22 अप्रैल के हमले के बाद जिस तेजी से पाकिस्तान के आतंकी ठिकानों की पहचान की और सेना के साथ समन्वय किया, वह भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति की परिपक्वता का प्रमाण है। रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी बयान में स्पष्ट किया गया है कि इस कार्रवाई का उद्देश्य केवल आतंकवाद के अड्डों को निशाना बनाना था, न कि पाकिस्तानी सैन्य ठिकानों या नागरिक आबादी को। इस ऑपरेशन के दौरान भारत ने कुल 24 मिसाइलें दागी, जिनमें से अधिकांश लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद जैसे आतंकी संगठनों के ठिकानों पर सटीकता से गिरी।

बताया जा रहा है कि इन हमलों में कई आतंकियों के मारे जाने की खबर है, जिनमें लश्कर और जैश के कई शीर्ष कमांडर भी शामिल हैं, जो भारत में आतंकी हमलों की योजना बनाते रहे हैं। पाकिस्तान का स्थानीय मीडिया और प्रशासन पहले इस हमले को नकारते रहे, फिर अलग-अलग बयान देकर भ्रम फैलाने की कोशिश की। पाकिस्तानी सेना के आईएसपीआर प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल अहमद शरीफ चौधरी ने दावा किया कि भारत ने 6 अलग-अलग स्थानों पर मिसाइलें दागी, जिनमें 8 नागरिकों की मौत हुई। वहीं दूसरी ओर, पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने जियो टीवी पर दावा किया कि भारत ने अपने ही हवाई क्षेत्र से हमला किया और मिसाइलें रिहायशी इलाकों पर गिरी। पाकिस्तान के दावे आपस में ही विरोधाभासी हैं, जो इस बात का स्पष्ट संकेत है कि वे न तो इस हमले के लिए तैयार थे और न ही उनके पास इसकी ठोस जानकारी है। वहीं, भारत ने इस ऑपरेशन के तुरंत बाद अमेरिका को इस कार्रवाई की जानकारी दी। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल ने अमेरिकी एनएसए और विदेश मंत्री मार्को रुबियो से बात कर उन्हें स्पष्ट रूप से बताया कि यह कार्रवाई पूरी तरह आतंकवाद के खिलाफ थी, न कि पाकिस्तान की संप्रभुता के विरुद्ध। भारतीय दूतावास ने अमेरिका में बयान जारी कर बताया कि भारत ने किसी भी पाकिस्तानी नागरिक, सैन्य या आर्थिक ठिकानों को निशाना नहीं बनाया, केवल उन्हीं आतंकी शिविरों पर हमला किया गया, जो भारत के खिलाफ साजिश रच रहे थे।

इस ऑपरेशन के पूरे समय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इसकी निगरानी कर रहे थे। उन्होंने सेना को पूर्ण स्वतंत्रता दी थी और इस ऑपरेशन की बारीकियों पर लगातार नजर बनाए रखी। ऑपरेशन पूरा होने के बाद भारतीय सेना ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर 'जस्टिस इज सर्व्ड' यानी 'न्याय हो गया' लिखा जबकि रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने 'भारत माता की जय' के नारे के साथ इस कार्रवाई को राष्ट्र के प्रति समर्पित किया। इस ऑपरेशन के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव और बढ़ना स्वाभाविक था। पाकिस्तान की ओर से फायरिंग और जवाबी बयानबाजी जारी रही। पाकिस्तान के मीडिया ने प्रोपेगेंडा फैलाने के लिए यह दावा किया कि पाकिस्तान ने भारत के 6 फाइटर जेट मार गिराए हैं, जिसमें 3 राफेल, 2 मिग-29 और 1 सुखोई शामिल हैं, साथ ही भारतीय सेना की 12वीं इन्फैंट्री ब्रिगेड के मुख्यालय को नष्ट करने का झूठा दावा भी किया गया। हालांकि भारत द्वारा इन बेबुनियाद झूठे दावों को सिरे से खारिज कर दिया गया है।

भारत का अगला कदम अब इस कार्रवाई को कूटनीतिक और रणनीतिक स्तर पर वैश्विक समर्थन में बदलना होगा। ऑपरेशन सिंदूर के बाद अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत आतंकवाद के खिलाफ अपने दृष्टिकोण को और मजबूत तरीके से प्रस्तुत करेगा। अमेरिका, फ्रांस, रूस और इजरायल जैसे देश पहले ही भारत के साथ खड़े नजर आ रहे हैं परंतु संयुक्त राष्ट्र और इस्लामी देशों के संगठन (आईओसी) में पाकिस्तान अपने झूठे प्रचार को हवा देने की कोशिश अवश्य करेगा, इसलिए भारत को अब इस कूटनीतिक लड़ाई में भी स्पष्टता और तथ्यों के साथ आगे बढ़ना होगा। बहरहाल, ऑपरेशन सिंदूर भारत की सैन्य और कूटनीतिक परिपक्वता का प्रतीक है। इसने साबित कर दिखाया है कि भारत अब संयम और जवाबदेही के साथ अपनी रक्षा नीति पर अमल कर रहा है। 'सिंदूर' का रंग भले ही सांस्कृतिक दृष्टि से सौभाग्य और शक्ति का प्रतीक हो परंतु इस सैन्य कार्रवाई में यह रंग आतंकवाद के विरुद्ध प्रतिशोध और शौर्य का प्रतीक बन गया है। भारत ने दुनिया को यह बता दिया है कि वह न तो युद्ध चाहता है, न टकराव लेकिन यदि उसकी सीमाओं, नागरिकों और संप्रभुता को कोई चुनौती देगा तो उसका जवाब भी उतना ही सटीक, तीव्र और निर्णायक होगा। भारत का यह बदलता हुआ रवैया उसकी सुरक्षा नीति को नई दिशा दे रहा है और यह संकेत है कि आने वाले समय में कोई भी आतंकी घटना भारत को मूकदर्शक नहीं बनाएगी बल्कि तत्काल और निर्णायक प्रतिघात से दुश्मन की कमर तोड़ी जाएगी।

(लेखक साढ़े तीन दशक से पत्रकारिता में निरंतर सक्रिय वरिष्ठ

आगाज़ ऑपरेशन सिन्दूर

आतंक के आकाओं तुम कल भी नहीं थे दूर,
टूटा सब्र का बांध आगाज ऑपरेशन सिन्दूर।

कितनी बजाओगे ईट से ईट कुछ न बिगड़ेगा,
दृढ़-निश्चय किया है जवाब पत्थर से मिलेगा।

अब निर्दोषों का वध होते हिंदुस्तान न देखेगा,
छुपों कहीं भी देश पाताल से ढूंढ निकालेगा।

आतंक के आकाओं तुम कल भी नहीं थे दूर,
टूटा सब्र का बांध आगाज ऑपरेशन सिन्दूर।

हमने भी सुनी थीं वहाँ गोलियों की आवाज,
खुशियों की स्वर लहरी गूंज रहीं बजते साज।

आज रिश्तों की ना बात करें रुदन की गाज,
ऐ नामांकूलों निहत्थों पर वार आती न लाज।

आतंक के आकाओं तुम कल भी नहीं थे दूर,
टूटा सब्र का बांध आगाज ऑपरेशन सिन्दूर।

अब अपनों पर आन पड़ी तभी समझ आया,
आज कहा मैं भी मर जाता, क्यों जुल्म ढाया।

न जाने तुमने कितनों का है ऐसे खून बहाया,
देखों जालिमों! अपनों के लहू से खुद नहाया।

संजय एम तराणेकर

पाकिस्तान ने ओड़िशा सरकार की वेबसाइट हैक कर ली गई क्या

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड
ओड़िशा

भूबनेश्वर : भारत-पाकिस्तान तनाव के बीच खबर आई है कि ओडिशा की कुछ महत्वपूर्ण वेबसाइटों को पाकिस्तानी साइबर अपराधियों ने हैक कर लिया है। जानकारी के अनुसार, इस साइबर हमले में राज्य सरकार के विभागों और अन्य संगठनों की वेबसाइटों को निशाना बनाया गया है।घटना के बाद राज्य साइबर सुरक्षा विभाग और पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। सूत्रों से पता चला है कि हैकर्स ने वेबसाइट के डेटाबेस तक अनधिकृत पहुंच प्राप्त करने का प्रयास किया और कुछ मामलों में वे सफल भी रहे। हालाँकि, अभी तक यह स्पष्ट नहीं है कि महत्वपूर्ण डेटा चोरी हुआ है या नहीं। ओडिशा आदर्श विद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट हैक हो गई है। कहा जा रहा है कि इसे पाकिस्तान साइबर फोर्स ने हैक किया है। यह साइट कल से बंद है। बताया गया है कि आज साइट पूरी तरह से ब्लैकआउट कर दी गई है। लोक शिक्षा विभाग ने इस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है। साइबर सुरक्षा विशेषज्ञों ने कहा है कि यह एक संगठित साइबर हमला हो सकता है, जिसे पाकिस्तानी हैकर समूह द्वारा अंजाम दिया जा सकता है। इसे देखते हुए राज्य सरकार ने सभी सरकारी वेबसाइटों की सुरक्षा और कड़ी करने के आदेश दिए हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023